फुटबाल

पात्र

डैडी
सनी
मोनी
मिकी
टीनू
जूजू
पेंजी
टीटी

[मंच पर प्रकाश आने से पहले, मंच पर भाग-दौड़, शोर-शराबा। धीरे-धीरे प्रकाश आने के साथ मंच पर दो लड़कियाँ पाँचों लड़कों को दौड़ा रही हैं। पृष्ठ-भूमि से सीटी बजती है, फिर पाँचों लड़के दोनों लड़कियों को घेरकर दौड़ते हैं। पृष्ठभूमि से सीटी बजने की लम्बी आवाज। उसी आवाज के साथ सबका भागना मंच से। तभी मंच पर फुटबाल आता है। डैडी दौड़कर गिरते हुए उस फुटबाल को ले लेते हैं। सीटी की आवाज से डरकर फुटबाल जमीन पर रखते हैं और 'किक' मारने के असफल प्रयत्न। दौड़ा हुआ सनी आता है। डैडी और सनी के बीच फुटबाल स्थिर है।]

सनी : डैडी, आप इस तरह क्यों खड़े हैं ?

डैडी : ये क्या कपड़े पहन रखे हैं ?

सनी : आप यहाँ इस तरह क्यों रुके हुए हैं ?

डैडी : तुम कहाँ से आ रहे हो ?

सनी : अपने कमरे में लेटा हुआ फुटबाल मैच खेल रहा था। मैं 'सेन्टर फारवर्ड' था, आप के खिलाफ। आप डैडी, गोलकीपर थे। आपकी टीम के कैप्टेन से 'फाउल' हुआ, मुझे 'फ्रीहिट' मिली। (**अभिनय करता हुआ काल्पनिक फुटबाल से। असली फुटबाल डैडी के सामने स्थिर है**) फ्रीहिट। दायीं ओर पास। दायें से बीच में। बीच से बायीं ओर। 'आउट'। 'थ्रो'। पास। हैडकिक। कार्नर। हिट। आपने गोल बचाना चाहा। आपको चीरता हुआ—मतलब आपके सीने के आर-पार यह बाल 'गोलनेट' को फाड़कर यहाँ आ पहुँचा।

डैडी : सनी।

सनी : क्या है डैडी।

डैडी : अपनी तन्दुरुस्ती पर ध्यान दो।

सनी : तन्दुरुस्ती ? यह क्या चीज है डैडी ?

डैडी : तन, दुरुस्त। तन को दुरुस्त रखो।

सनी : कहाँ रखें ?

[डैडी की हँसी। सनी नकल में हँसता है। डैडी की पूरी नकल।]

डैडी : यह क्या तमाशा है ?

सनी : यह क्या तमाशा है ?

डैडी : यह क्या बदतमीजी है ?

सनी : यह क्या बदतमीजी है ?

[सीटी]

डैडी : खेलोगे ? चलो, खेलो।

सनी : मैं खेलता नहीं, कल्पना करता हूँ। कल्पना में खेलता हूँ।

[काल्पनिक खेल]

डैडी : देखो मेरी किक। (**किक मारने में डैडी का गिरना**) देखा, कहाँ गया बाल ?

सनी : (**आश्चर्यचकित**) हाँ, कहाँ गया बाल ? वह आसमान में···वह शून्य में···वह ग्यारहवीं मंजिल, फ्लैट नं० ग्यारह सौ चार। मालिक के दफ्तर के सामने कॅरीडोर में वह बाल···वह···

[अभिनय दृश्य में सनी के साथ चार लड़के।]

सनी : मिकी, टिनू, जूजू, टीटी। ये नाम हैं तुम लोगों के। कोई नाम हैं ? तुम्हारे बाप-दादों के क्या नाम हैं ? बाप-दादे नहीं जानते ? तुम्हारे डैडी लोगों के क्या नाम हैं ?

सब : (**एक स्वर में**) सो ऐसा बोलो न।

मिकी : मिकी। मेरे डैडी का नाम ईश्वरचन्द, मुझे मेरी ममी के नाम का पता नहीं।

टिनू : टिनू। मेरे डैड का नाम शिवशंकर मगर वह जाने जाते हैं एस-एस पांड्या के नाम से। मेरी ममी पिछले दस साल से लापता हैं।

जूजू : मेरा नाम जूजू। डैड का नाम रामचन्द्र सदाशिव। जब मैं तीन साल का था तभी मेरी मम्मी का···क्या कहते हैं यार उसे···'डैथ' नहीं···स्वर्गवास। हाँ, यही हो गया। ऐसा कहा जाता है। सच क्या है किसे पता ! यूँ तो, बाई द वे, 'डाउरी' की वजह से जो मौत होती है, स्वर्गवास की कल्पना उसी के लिए है न ?

टीटी : मेरा नाम टीटी। जैसे सनी का डैड विडोअर है, उसी माफिक···माफिक मेरा डैड—गणेशशंकर डबल विडोअर।

सब : हम जूजू। हम कीटी। हम पीटी। हम सीटी। हम मीकी। हम टीनू। हम जूजू। हम कंजी। हम पंजी। हम टीटी। हम पीटी। हम सी···टी। चकई के चकघुम··· चकई के चकघुम, चकई के चकघुम···चकई···ई···ई।

[सीटी। सब सावधान।]

सनी : यस सर। यस सर। मगर हमारे सर्टिफिकेट्स के नाम, आई मीन रजिस्टर्ड नाम भारतीय हैं, जैसे हमारे डैड भारतीय हैं। हमारे नाम धार्मिक हैं, जैसे हमारे डैड धार्मिक हैं। सनी वेदभूषण।

मिकी : राहुल।

टीनू : गजानन।

जूजू : कार्तिकेय।

टीटी : विवेकानन्द । दयानन्द । सर्वदानन्द । वगैरह-वगैरह ।

सब : हमारे दो नाम । एक पब्लिक, एक प्राइवेट । जैसे हमारे मुल्क के दो नाम । एक इंडिया, एक भारतवर्ष । जैसे हमारी एकोनामी है । सेक्टर एक पब्लिक, एक प्राइवेट सेक्टर । जैसे हमारे यहाँ सब-कुछ असमान है, पर सब-कुछ समान है । क्योंकि हर चीज में भगवान है ।

[सीटी । हाथ में बाल लिए डैडी का दौड़ते हुए आना । लड़के उनसे बाल छीनना चाहते हैं । असफल होकर काल्पनिक ढंग से फुटबाल खेलते हैं । लम्बी आवाज की सीटी । सभी के अलावा चारों लड़के स्थिर हो जाते हैं । सनी का आईने के सामने मेकअप करना ।]

मिकी : वाह बेटा ! नौजवान बनता है । डैडी के आईने में अपनी शक्ल देखता है ।

टीनू : (फिल्मी धुन) : डैडी ने यह चाहा । डैडी ने यही बताया । डैडी की कसम । डैडी की कसम ।

जूजू : चंदा मामा इम्पोर्टेड मिल्क दे । पहिनने को फारेन सिल्क दे ।

टीटी : नौकरी ऐसी जहाँ काम हराम हो । ऊपर से आमदनी हो ।

जूजू : बीवी ऐसी जो कमाए भी । पकाए भी । खिलाए भी । और सुलाए भी ।

सनी : और ?

[मोनी का आना ।]

मोनी : क्या करते हो । जरा भी शर्म-लिहाज नहीं । यह आईना नहीं आदमी है ।

सनी : अरे इसमें मेरी शक्ल दीखती है—फर्स्ट क्लास । मोनी डियर, तुम्हारा प्रोग्राम क्या है ? मेरा मेकअप ठीक है ? मेरी चाल ?

मिकी : 'हेमबर्गर', सासेज ।

मोनी : मैं कैसी लग रही हूँ ?

टीनू : गरम चिकेन । रेडी टू ईट ।

सनी : तुम्हारा प्रोग्राम क्या है ?

मोनी : तुम्हारा क्या है ?

सनी : सच-सच बता दूँ ? अब इसमें छिपाने को भी क्या है ? मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता ।

मोनी : अगर मेरे डैडी लम्बी-चौड़ी 'डायरी' दें, तो भी नहीं ?

सनी : नहीं ।

मोनी : क्यों ?

जूजू : धर्म का सवाल है । रोमांस एक ओर । शादी दूसरी ओर ।

टीटी : रोमांस तन का खेल । शादी भगवान का खेल ।

सब : क्यों हम कोई झूठ बोल रहे हैं ?

मिकी : हम एक ओर इंडियन हैं । दूसरी ओर भारतीय ।

टीनू : एक ओर पब्लिक सेक्टर । दूसरी ओर प्राइवेट सेक्टर ।

सब : ही-ही-ही-ही।
मोनी : तुम्हारा मतलब क्या है ?
सनी : शादी पेंजी से करूँगा।
जूजू : बहनजी का दिल्ली एडीशन है पेंजी।
मोनी : क्या कहा ? शादी पेंजी से करोगे ?
सनी : हाँ, शादी उसी से करूँगा।
मोनी : यू बास्टर्ड। **(पिस्तौल तान देती है)** मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूँगी।
सब : कट ! कट ! फिल्मी मेलोड्रामा। आउट। आउट···गेटआउट।

[सब उसे बाहर करते हैं। दूसरी ओर से पेंजी का आना।]

सनी : ठीक है, ठीक है। मुझे मक्खनबाजी से नफरत है। कान खोलकर सुन लो, मुझे 'हिपोक्रेसी' जरा भी पसन्द नहीं जबकि मैं धार्मिक इन्सान हूँ। इस बात पर तुम्हें कभी कोई सन्देह नहीं होना चाहिए। ना ही तुम मुझसे कभी बेसिर-पैर के सवालात करोगी।

[पेंजी 'जी-जी' कहती जा रही थी।]

सनी : यह जी-जी-जी-जी क्या लगा रखा है। जीजा-जीजी मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। तुम्हारा नाम पेंजी है। असली नाम क्या है ?
पेंजी : हैंजी।
सनी : बकवास···हैंजी कोई नाम नहीं हो सकता।
मिकी : शादी के बाद सिर्फ हैंजी रह जाएगा।
टोनू : हैंजी। पेंजी।

[चारों दोनों के आसपास हैंजी-पेंजी कहते हुए घूमते हैं। मोनी चश्मा लगाए आती है। लम्बे-से कागज पर लिखती हुई पढ़ती है।]

मोनी : एक पतित देवता मनुष्य भी नहीं रहता। वह धोखेबाज होता है।
पेंजी : प्रेमिका अपनी प्रेमी को अनेक जिम्मेदारियों और बोझों से लाद देती है और आशा करती है वह उसे ढोएगा, ढोता रहेगा।
मोनी : पति बीमार पुरुष है। पत्नी उसकी नौकरानी, नर्स, रखैल, बंधुआ मजदूर है। वह अपने शौहर के चारों ओर रोशनी का एक घेरा खींचे रहती है और उसमें किसी भी तरह की कमी नहीं कबूल करती।
पेंजी : प्रेम करना घमंड है। धोखा है।
मोनी : शादी गुलामी है।
पेंजी : प्रेमिका को गलत समय पर ही भूख-प्यास लगती है।
मोनी : 'यू शटअप !'
पेंजी : **(सनी के सामने)** आह, मेरे प्राण प्यारे ! काश, तुम जान पाते कि तुम्हें नहीं देख पाने के कारण मुझे अपनी समूची जिन्दगी कितनी खोखली लगती है ! अगर

मुझे अपने जीवन के हर दिन तुम्हें देखने और प्यार करने की चाह नहीं होती तो मैं जीने की ही परवाह नहीं करती।

[चारों लड़कों द्वारा मुँह से शहनाई संगीत।]

मोनी : आ री सोहागिन। तेरी कंचन काया को और भी चमका दूँ। हाय, क्या तन-बदन है ! यह मुखड़ा कितना सुन्दर है।

सनी : यह कमाल है गुणकारी हल्दी और चंदन का। तन-बदन चमक और महक आया है भारतीय आयुर्वेद के चमत्कार से।

[सखियों की हँसी। शहनाई। सोहागरात की यात्रा। सीटी। सारे युवकों द्वारा काल्पनिक फुटबाल खेल। सीटी। मंच के बीचोबीच सनी-डेंडी के बीच फुटबाल रखा हुआ है। दोनों एक-दूसरे को धोखा देना चाहते हैं।]

डेंडी : सनी। खेल शुरू करो।

सनी : पहले आप।

डेंडी : हम तो खेलते ही रहे हैं सनी।

सनी : आपके खेल से मैं 'इनस्पिरेशन' यानी प्रेरणा लेता हूँ।

डेंडी : प्रेरणा और 'इनस्पिरेशन' में फर्क है सनी।

सनी : यह मुझे पता नहीं।

डेंडी : क्या कहा ?

सनी : गोली मारिए फर्क को। मैं आपकी नकल करता हूँ। नकल के सिवा और कुछ नहीं कर सकता।

डेंडी : नकल के लिए अकल चाहिए।

सनी : नहीं डेंडी, अकल के लिए शकल चाहिए। हाय, मैं कितना स्मार्ट। कितना डैसिंग। आई एम ही। एण्ड दैट्स शी। ही-ही-ही-ही, शी-शी-शी-शी।

[डेंडी रूपी आईने में अपनी शक्ल देखना।]

सनी : डैड ! चलो मुक्केबाजी करें।

डेंडी : सावधान। पहले तुम चलो, पहले तुम।

सनी : नहीं, पहले तुम।

डेंडी : एक घूँसे में खेल खत्म हो जाएगा।

सनी : आपको अपने-आप पर इतना घमंड ?

डेंडी : देखा नहीं, अंकल की प्रापर्टी को कैसे मारा ? कैसे कपूर काफूर हो गया ! कैसे नीलामी की ? किस तरह चाल चली ! किस तरह सरे राह मिस शर्मा मिली··· हा-हा-हा-हा !

[सनी का डेंडी पर मुक्का। डेंडी चारों खाने चित।]

सनी : डेंडी, यू आर डैड।

डैडी : यह कैसे हुआ ?

सनी : आपकी नकल । आपसे मिलती है मेरी शकल । यही है मेरी अक्ल ।

डैडी : सनी । मुझे डरा । मैं अपनी विल लिखकर मरना चाहता हूँ ।

सनी : आप इत्मीनान से पहले मरिए तो डैडी ।

डैडी : विल का क्या होगा ?

सनी : जो होगा सो होगा ।

डैडी : ओह्, तुझमें इतना घमंड !

सनी : सब आपसे ही सीखा है डैडी ।

डैडी : अपने-आपको समझता क्या है ?

सनी : कुछ नहीं, कुछ नहीं डैडी, जो आप हैं डैडी, उसी की मैं 'कार्बन कापी' हूँ ।

डैडी : ऐसा मैंने कभी नहीं चाहा ।

[कल्पना में फुटबाल खेल शुरू । दोनों बिना बाल के खेलते हैं । बीच-बीच में सीटी । फिर खेल । सीटी । खेल खत्म । फिर सीटी । बीच में बाल ।]

डैडी : तुझे अपनी जवानी पर घमंड है ?

सनी : नहीं, अपने बुढ़ापे पर ।

डैडी : क्या ?

सनी : अनुभव''''एक्सपीरियेन्स', 'सनी इज द फादर आफ द डैड ।'

डैडी : मरने से पहले तेरे घमंड को खत्म कर दूँगा ।

सनी : आप कभी नहीं मरेंगे डैडी । मेरे रूप में आप हमेशा अमर रहेंगे । जैसे मैं अपने बेटे, पोते, नाती से अमर रहूँगा । मतलब, आप कभी नहीं मरेंगे ।

डैडी : सच ?

सनी : बिल्कुल ।

डैडी : तो खेल शुरू ।

सनी : खेल तो तभी से शुरू है डैडी, जब से यह माना गया कि यह दुनिया ही एक खेल है ।

डैडी : पर यह बाल तो अपनी जगह है ।

सनी : यह बाल नहीं माया है ।

डैडी : तू झूठ बोल रहा है ।

सनी : आपकी सारी किताबों में लिखा है । आपने इसी विश्वास पर सारे खेल खेले हैं ।

डैडी : यह बात किसी से कहना नहीं ।

सनी : ओ० के० डैड ।'''डैड । मेरे पूज्य पिताजी ।

डैडी : कहो प्रिय वत्स ।

सनी : 'आई वांट फिफ्टी थाउजैण्ड बग्स ।'

डैडी : एक शर्त पर ।

सनी : ओ० के० । बिना जाने की शर्त क्या है ? डैड। सी माई स्मार्टनेस।

[अभिनय]

डैडी : बस, बस, बस।

सनी : डैड ! शर्त क्या है ?

डैडी : मैं तुझे ऐसा घूंसा मारूंगा। ऐसा घूंसा कि तू मर जाएगा।

सनी : बिल्कुल, ऐसा ही होगा, 'नो प्राब्लम।' चलिए। चलिए। घूंसा मारिए डैड।

डैडी : सीधे नाक पर मारूंगा—बिल्कुल ठीक नाक पर।

सनी : आप कहीं भी मारिए डैड, मुझे तो मरना ही है।

[डैड का घूंसा मारना, सनी का गिरना।]

डैडी : ओ० के० डैड। आई एम डैड।

सनी : (पुकारना) डाक्टर ! डाक्टर्स ! नर्स !

[चारों युवक डाक्टर बने आते हैं। मोनी नर्स। सब का देखना, मुआइना करना।]

सनी : (एसाइड) ये लो पाँच सौ रुपये। डिक्लेयर आई एम डैड।

चारों : ओ० के०।

डैडी : क्या है ?

पहला : डैड।

दूसरा : मर गया।

तीसरा : रामनाम सत्य हो गया।

चौथा : खेल खत्म।

नर्स : जनम और मरण किसके हाथ में है ? उसके। किसके ?

[संगीत]

सब : यह संसार कागद की पुड़िया,
पानी लगे गलि जाना है,
रहना नहिं देस बिराना है।
रहना नहिं देस बिराना है।

[संगीत चल रहा है। पंजी (पत्नी) का रोते हुए आना। रोने, सिर पीटने, चिल्लाने का अभिनय। डैडी पाकेट से रूमाल देते हैं पंजी को आँसू पोंछने के लिए। सीटी। फिर वही दृश्य—पिता-पुत्र के बीच बाल।]

सनी : डैड, यू आर मैड। आप मुझे डैड क्यों कहने लगे ?

डैडी : बिल्कुल तेरी तरह मेरे पूज्य पिताजी थे। बिल्कुल यही दिमाग। यही हौसला। यही सब कुछ।

सनी : कमाल है। मैं आपका डैड कैसे हो गया ? बताइए। जवाब दीजिए।

[फुटबाल खेल का अभिनय]

डैडी : चाइल्ड इज द फादर आफ मैन ।

सनी : डैड । यह 'फाउल' है ।

डैडी : कैसा आउल-फाउल रे बाबुल ?

सनी : यह देखिए ।

[किक अभिनय]

डैडी : यह सब देख चुका हूँ ।

सनी : यह देखिए गोल ।

[डैडी जमीन पर गिरकर काल्पनिक बाल को पकड़कर पड़े रहते हैं ।]

सनी : उठिए । बाल दीजिए । उठिए । खड़े होइए । डैड ।

डैडी : सनी कहो तो उठूंगा ।

सनी : सनी

डैडी : हाउ फनी ।

[फिर खेल]

डैडी : अब देखो—मैं गोल करता हूँ । **(गोल मारने का अभिनय)**

[सीटी । दृश्य-परिवर्तन—चारों युवक और मोनी समय से दफ्तर पहुँचने के लिए दौड़-भाग कर रहे हैं ।]

मोनी : स्कूटर ! स्कूटर !

मिकी : बस आ रही है ।

टीनू : अपनी बस है ।

जूजू : रोको । रोको बस । रोको ।

टीटी : यार । कोई बस रुकती ही नहीं ।

मिकी : वे भी क्या करें । बस की हालत देखो—जितने भीतर, उतने बाहर लटके हुए ।

टीनू : बेटा । साढ़े दस बज गए ।

जूजू : आज खैरियत नहीं ।

मिकी : मोनी का ही सहारा है । बास के पास जाकर मुस्करा देगी तो हमारी गैरहाजिरी नहीं लगेगी ।

टीटी : स्पेशल बस आ रही है ।

मिकी : मोली, आ जाओ । आ जाओ मोनी ।

सब : मोनी ।

टीटी : हम किसी तरह धक्का देकर तुझे अन्दर कर देंगे ।

जूजू : हम किसी तरह लटक जाएँगे ।

टीनू : बस···रोको···रोको···

[सबका दौड़ना। सीटी। दृश्य-परिवर्तन—सारे युवक पिता रूपी आईने में अपनी शक्लें देखकर कंघियाँ कर रहे हैं। मोनी सनी की ओर बढ़ती है।]

मोनी : सर ! मैं अन्दर आ सकती हूँ ?

सनी : ओ मोनी—माई डियर।

मोनी : सर ! हमारी सिटी बस सर्विस बिल्कुल कंडम है। पूरी तरह से नानसेन्स।

[दूसरी ओर]

चारों : (एक स्वर में) हम कहीं भी वक्त से नहीं पहुँच सकते।

मिकी : कहीं पहुँचने से पहले ही हम बिलकुल थक जाते हैं।

टीनू : हम जहाँ जाते हैं, वहाँ 'बोर' होकर पहुँचते हैं।

जूजू : हम अपनी नजरों में ही गिरे होते हैं।

टीटी : वह हमें एक नजर में ही झटक देता है, जिसके सामने होते हैं।

मिकी : हर तरह से अपमान होता है।

[उधर सनी और मोनी में रोमांस चल रहा था।]

मोनी : अच्छा, ओ० के० सर।

सनी : लंच पर हम बाहर चलें, ओ० के०।

मोनी : बिल्कुल ओ० के०।

[सनी द्वारा सब को सम्बोधन]

सनी : आप लोग रोजाना देर से आएँगे, तो काम कैसे चलेगा ? आप लोगों की सेहत खराब होती जा रही है—क्योंकि दौड़-धूप बढ़ती जा रही है। मनुष्य इच्छाओं का गुलाम होता जा रहा है। गुलामी से (किताब से पढ़ता हुआ) पाचन-क्रिया बिल्कुल खराब हो जाती है। शरीर को धारण करने वाले सातों धातु—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र कमजोर हो जाते हैं। परिणामस्वरूप मानव शरीर का सारा सत्त्व, ओज (सहसा) ह्वाट इज दिस ? यस, तेज, यू नो, ब्राइटनेस, स्मार्टनेस···तेज, बल खत्म हो जाता है। एलर्जी के सारे रोग, छपाकी···शीतपित्त—हिस्टेमिन रोगों से पेट में जहर फैल जाता है···।

[सीटी, नया दृश्य, सनी घर आता है। पंजी घंटी बजाती हुई भगवान की आरती कर रही है।]

सनी : बन्द करो यह बकवास।

पंजी : अरे ओ मिकी, टीनू, जूजू, टीटी, मोनी, अरे सुनते हो। देखो, तुम्हारे डैडी आए हैं। सुनते हो बेटे मिकी, टीनू, जूजू, टीटी, ओ मोनी ! कहाँ मर गए ?

[आरती। फिर वही पुकार। सारे बच्चे आते हैं रोते-झगड़ते हुए।]

सनी : खामोश। मार-मारकर ठीक कर दूंगा।

पेंजी : डैडी सही कह रहे हैं बेटे चलो, पापा को प्रणाम करो। चलो जूते उतारो। कपड़े सम्हालो।

[आरती। सीटी। फिर वही दृश्य—सनी और डैडी के बीच वही फुटबाल स्थिर है। दोनों खेल शुरू करने के लिए एक-दूसरे का मुंह देख रहे हैं। सहसा वही काल्पनिक खेल। सीटी। सनी-डैडी के बीच वही स्थिर फुटबाल।]

बूढ़े पुत्रों की जवान माँ

पात्र

माँ
कर्मदत्त
बुद्धिदेव
नारद
सनक
सनंदन
सनातन
सनत् कुमार

[युव
पुकार
उधर
बैठे
माँ : ऋषि,
देव : किसे
दत्त : मुझे
माँ : ऋषि
देव : मुझे
दत्त : मुझे
माँ :
देव :

[युवती माँ अपने दो वृद्ध पुत्रों को बड़ी कठिनाई से खींच कर ले आ रही है और पुकारती है—'ऋषि, ओ ऋषि ! कहाँ हो ऋषि ! मंच के पिछले हिस्से पर प्रकाश उभरता है। वहाँ ब्रह्मा के चारों पुत्र—सनक, सनंदन, सनातन और सनत् कुमार बैठे हुए दिखते हैं ।]

माँ : ऋषि, ओ ऋषि !

देव : किसे पुकार रही हो माँ ?

दत्त : मुझे कहाँ ले जा रही हो ?

माँ : ऋषि ! ओ ऋषि !

देव : मुझे नींद आ रही है माँ !

दत्त : मुझे भूख लगी है माँ ?

माँ : ऋषि ! आओ, देखो ऋषि, मैं अपने पुत्रों को लेकर आयी हूँ ऋषि !

देव : ऋषि बहरा है माँ।

दत्त : ऋषि सो रहा है।

माँ : चुप रहो !

देव : ऋषि कौन है ?

दत्त : ऋषि क्या करेगा ?

माँ : चुप रहो।

[दोनों हँसते हैं। नारद ऋषि आते हैं।]

माँ : ऋषि को प्रणाम करो !

देव : यह क्या होता है ?

दत्त : क्या कहा ? कुछ सुनाई नहीं पड़ता !

माँ : (जोर से) ऋषि को प्रणाम करो !

दत्त : अपना नाम बताऊँ ? बताओ मेरा नाम क्या है ?

देव : तुम कौन हो ?

[दोनों ऋषि को घूम-घूमकर निहारते हैं।]

नारद : देवि, ये तुम्हारे कौन हैं ?

माँ : ये मेरे पुत्र हैं !

नारद : तुम्हारे पुत्र, यह कैसे संभव है !

माँ : यही पूछने आयी हूँ—मेरे ये पुत्र असमय वृद्ध कैसे, क्यों हो गए ?

नारद : ये तुम्हारे पुत्र हैं ?
माँ : हाँ, ऋषि !
नारद : आश्चर्य !
दत्त : आश्चर्य !
देव : आश्चर्य !
नारद : ये दोनों सगे भाई हैं ?
माँ : हाँ, दोनों मेरे पुत्र हैं—दोनों सगे भाई हैं।

[दोनों अलग]

दत्त : हम दोनों सगे भाई हैं ?
देव : आश्चर्य !
दत्त : हमारी कभी मुलाकात नहीं हुई।
देव : इसकी जरूरत भी क्या है !
दत्त : आप कहाँ रहते हैं ?
देव : आपको कहीं देखा है।
दत्त : क्या फर्क पड़ता है ?
देव : आप कैसे हैं ?
दत्त : आप कैसे हैं ?
देव : हें-हें-हें-हें !
दत्त : हो-हो-हो-हो !

[दूसरी तरफ।]

नारद : आश्चर्य है, ये असमय वृद्ध कैसे हो गए ?
माँ : नारद ऋषि, आप त्रिकालदर्शी हैं, कोई उपाय कीजिए। मैं युवती माँ, मेरे ये वृद्ध पुत्र—जो देखता है, परिहास करता है। बड़ी अपमानजनक स्थिति है महाराज !
नारद : यह कैसे हुआ ?
माँ : यही तो मैं पूछने आयी हूँ।
नारद : यह कब से हुआ ?
माँ : यही जब चौदह वर्ष के हुए तब अचानक इनके बूढ़ेपन के लक्षण दिखाई देने लगे।
नारद : ये दोनों जुड़वाँ पुत्र हैं ?
माँ : हाँ, महाराज !
नारद : दोनों पहले खेलते थे ?
माँ : खूब खेलते थे।
नारद : एक साथ ?
माँ : एक साथ खूब खेलते-हँसते थे। हम लोग भी इनके साथ अक्सर हँसते-खेलते थे। पर अचानक इनके पिताजी अपने व्यवसाय में बहुत व्यस्त हो गए—काफी लाभ

और सफलता पर सफलता मिलती चली गयी। उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मुझे भी बहुत व्यस्त हो जाना पड़ा। इन्हें दास-दासियों की देख-रेख में छोड़ देना पड़ा।

नारद : तो इन्हें माता-पिता का प्रेम नहीं मिला ?

माँ : नहीं, यह कैसे कह सकते हैं।

नारद : पर ये जन्मजात ऐसे नहीं थे न !

माँ : ये जन्मजात ऐसे नहीं थे। बचपन में यह बड़ा बुद्धिमान था—तभी इसका नामकरण हुआ, बुद्धिदेव। यह बचपन में बड़ा चंचल, स्वस्थ, कर्मठ था, तभी इसे नाम मिला—कर्मदत्त।

नारद : बुद्धि और कर्म ?

माँ : मैं घर के काम-काज में बहुत व्यस्त। इनके पिता बाहर के काम-काज में अत्यंत व्यस्त। हमारा जीवन बड़ा संघर्षमय रहा।

दोनों : महत्त्वाकांक्षी ! स्वार्थी !!

माँ : हम प्रतिष्ठित हैं। समाज में हमारा बड़ा सम्मान है। हमें किसी चीज की कमी नहीं है।

दोनों : लालची ! भयभीत !!

माँ : केवल दुख यही है कि मेरे ये पुत्र वृद्ध हो गए।

नारद : वृद्ध के लक्षण दिखते ही आपने कोई उपचार किया ?

माँ : बड़े-से-बड़े वैद्य के उपचार किए। हर तरह के दान, पूजापाठ कराए। महाजनों ने सलाह दी कि इन्हें गुरुकुल भेजा जाए—विद्या से इनके विकार नष्ट हो जाएँगे। बड़ी आशा और विश्वास के साथ ये गुरुकुल भेजे गए विद्या प्राप्त करने के लिए। पर हतभाग्य, तीन वर्षों के भीतर ही ये पूरी तरह वृद्ध होकर लौटे।

नारद : इनके गुरु-आचार्य ने क्या कहा ?

दोनों : आचार्य अंधा। गुरु चाटुकार।

माँ : बताओ ऋषि, ये असमय ऐसे क्यों हुए ?

नारद : इनका अपमान हुआ।

[दोनों हँसते हैं।]

माँ : नहीं।

नारद : इनके साथ विश्वासघात हुआ, पिता, माता और गुरु—घर और गुरुकुल दोनों से।

[दोनों जैसे गा पड़ते हैं।]

आचार्य अंधा गुरु चाटुकार
पिता महत्त्वाकांक्षी, स्वार्थी
लालची, भयभीत
माता-पिता सहित समाज मक्कार
धिक्कार ! धिक्कार !!

माँ : ये अस्वाभाविक हैं। कृपा कर इनके आचरण पर ध्यान मत दीजिए। ये इसी तरह अनाप-शनाप बकते रहते हैं।

नारद : बुद्धिदेव ! बुद्धिदेव !!

देव : लगता है, आपको पुकार रहे हैं।

दत्त : बुद्धिदेव संभवतः आपका नाम है।

देव : इतनी किसे फुर्सत है, कोई मुझे पुकारे ! मेरे पास भी इतना समय कहाँ कि मैं ध्यान दूँ।

दत्त : आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई।

देव : और कहने को ही क्या है।

[ही-ही-ही, हू-हू-हू करते हैं।]

नारद : कर्मदत्त ! कर्मदत्त !!

देव : बार-बार किसी को पुकारा जाता है।

दत्त : होगा। हमसे क्या ?

देव : हमसे क्या लेना-देना ?

दत्त : हम तो हैं नहीं, केवल परिस्थितियाँ हैं।

देव : होंगी, मुझे पता नहीं।

दत्त : परिस्थितियाँ ही घटनाएँ हैं।

देव : न सहमत हूँ, न असहमत हूँ।

दत्त : इसकी कोई आवश्यकता भी नहीं।

माँ : ऋषि, ऐसे ये नहीं सुनेंगे। (बढ़कर) ऋषि कुछ पूछ रहे हैं। उधर देखो, उधर, इधर नहीं, उधर देखो। वरना खाना-पीना बंद।

दोनों : ऐसा मत करो माँ ! ओ माँ !!

नारद : बुद्धिदेव ! मेरे इस हाथ में कितनी अँगुलियाँ हैं ?

देव : मुझी से पूछ रहे हैं ?

नारद : हाँ।

देव : ऐसा मैंने कौन-सा अपराध किया है ?

नारद : नहीं-नहीं, कोई अपराध नहीं किया है।

देव : तो इसका उत्तर मैं बाद में दूँगा।

नारद : अभी क्या कर रहे हो ?

देव : कुछ नहीं कर रहा हूँ—यही तो काम है।

नारद : आप इनसे सहमत हैं ?

दत्त : इसका उत्तर मैं दे चुका हूँ।

नारद : क्या ?

दत्त : मुझे कुछ भी याद नहीं रहता।

नारद : आपको कुछ याद है ?

दत्त : इसका उत्तर मैं दे चुका हूँ।

नारद : यह आपके कौन हैं ? आप इनके कौन हैं ? आप दोनों इनके कौन हैं ?

देव : मैं एक हूँ।

दत्त : मैं भी एक हूँ। अर्थात् एक और एक दो नहीं, एक।

[दोनों हँसते हैं। फिर रोते हैं। माँ उन्हें कुछ खाने को देती है। दोनों अलग-अलग बैठकर खाने लगते हैं।]

माँ : ऋषि, कोई उपाय करो।

नारद : इनकी हर इच्छा तत्काल पूरी कर देती हो। तुम्हारी यह अंध ममता इनकी व्याधि है। तुम्हारे मोह ने इन्हें क्लीब बनाया। सुनो, इनके कानों में वेदमंत्र गान करो। इनकी वृद्ध आँखों में यज्ञ प्रकाश करो। यज्ञ की अग्नि से इनकी बुझी हुई तरुणाई प्रज्वलित करो।

[ब्रह्मपुत्र वेदमंत्र पढ़ते हैं। यज्ञ करते हैं।]

ओ३म् इदं वपुः निवचनं जनासः
चरन्ति यत् नद्यः तस्थुः आपः।
द्वे यदीं विभृतो मातुरन्ये
इहेह जाते यम्या सबन्धू॥

नारद : (उनके पास जाकर) सुनो, जैसे जल नदियों में रहता है, वैसे ही आत्मा भी शरीर में है। यदि नदी में जल सूख जाए तो नदी किसी काम की नहीं रह जाती, इसी प्रकार शरीर से जब आत्मा निकल जाती है तो शरीर भी निरर्थक हो जाता है। इस शरीर में प्रकृति माता की दो जुड़वाँ संतान हैं—जो दोनों सुबंधु होते हुए भी भिन्न स्वभाव के हैं···।

[खाकर दोनों सो जाते हैं। नारद आश्चर्य से देखते रह जाते हैं। ब्रह्मा पुत्र यज्ञ कर रहे होते हैं।]

नारद : अरे, ये तो सो गए ! वेद मंत्र और यज्ञ का इन पर कोई प्रभाव नहीं। तुम्हारे अन्न में दोष है। तुम्हारी ममता मोहग्रसित है।

माँ : मुनि, कोई उपाय कीजिए। इनके माथे पर हाथ रखिए। आपके स्पर्श से ये जवान हो जाएँगे।

[नारद क्रमशः उनके माथे पर हाथ रखकर।]

नारद : बुद्धिदेव, जागो उठो। मैं तुम्हारे कान में वेद मंत्र पढ़ रहा हूँ। हे कर्मदत्त, जागो, उठो, हे बुद्धि और कर्म, जागो उठो। ओह ! कहीं कोई प्रभाव नहीं।

माँ : हे ऋषि, कोई सत्य कर्म करो, बिना इसके ये समर्थ नहीं हो सकते।

नारद : क्या मैं सत्य कर्म नहीं कर रहा हूँ ?

माँ : सत्य कर्म का मेरे पुत्रों पर प्रभाव क्यों नहीं ?

नारद : हाँ, सत्य कर्म क्या है ? मैं चारों ओर देख रहा हूँ। चारों ओर से एक विलाप उठ रहा है। सत्य कर्म क्या है ? हर उत्तर अलग-अलग है। तो मैं कैसे जानूँ सत्य कर्म क्या है ! उसे जाने बिना मैं क्या करूँ ? ज्ञान और कर्म की व्याधि कैसे नष्ट हो ?

[ब्रह्मापुत्र समवेत स्वर से गाते हैं—]

हे ऋषि !
यज्ञ से बड़ा ज्ञान यज्ञ है
ज्ञान यज्ञ से बड़ा सत्कर्म है
उसी की प्राप्ति से ये वृद्धावस्था से
मुक्त होकर जवान होंगे।

नारद : पर ये तो सो रहे हैं ! इन्हें जगाए कौन ?

माँ : तुम।

नारद : सोए हुए को ज्ञान कौन दे ?

माँ : तुम।

नारद : जिसे ज्ञान नहीं उसे सत्कर्म कौन दे ?

माँ : तुम।

नारद : तुम-तुम-तुम ! तुम कहाँ थीं अब तक ? सारी प्रकृति, देव, मनुष्य समाज कहाँ था अब तक ? दूसरे पर दायित्व डालकर स्वयं के साथ इन पुत्रों के प्रति विश्वासघात किया। दूसरा जगाता नहीं, मारता है। जो स्वतन्त्र नहीं वह कर्त्ता नहीं।

माँ : सब असफल हो गए तभी तो आयी हूँ तुम्हारी शरण में ! कृपा करो मुनि !

नारद : उठाओ इन्हें ! जगाओ।

[माँ प्रयत्न कर असफल होती है।]

नारद : इनके ऊपर शीतल जल डालो।

[माँ जल डालती है।]

नारद : खौलता हुआ पानी डालो।

[खौलता हुआ पानी डालती है। नारद बढ़कर जबरन उन्हें उठाकर खड़ा करते हैं और उनके मुख पर कमंडल से जल के छींटे मारते हैं।]

दत्त : ओह, सुबह हो गयी !

देव : आधी रात है।

नारद : कौन हो तुम ?

दत्त : मैं।

नारद : कौन हो तुम ?

देव : मैं।
नारद : तुम कौन हो ?
माँ : इनकी माँ।
नारद : पहले क्यों नहीं थीं ?
माँ : सदा थी !
नारद : सदा माँ होतीं तो असमय ये वृद्ध कैसे हो जाते ? जब ये वृद्ध होने लगे तो तुम युवती कैसे बनी रहीं ?
माँ : आह !

[माँ रो पड़ती है।]

नारद : तुम्हें भूख लगी है। और तुम्हें प्यास।
देव : वाह ! ऋषि कितने ज्ञानी हैं।
दत्त : अंतर्यामी।
नारद : चुप रहो। जो अन्न खाते हो, किसकी कमाई है ? यह जल कहाँ से आया ?
देव : आपने कहा—चुप रहो, तो मैं चुप हूँ।
दत्त : कुछ पूछा है क्या ?
देव : मुझसे इस तरह खड़ा नहीं रहा जाता।
दत्त : क्या कहा ?
देव : आखिर कुछ तो कहना ही होगा !
दत्त : मुझे इस दिशा में कुछ नहीं दिखाई देता। इस दिशा में थोड़ा-थोड़ा। हाँ, इधर कुछ दिखाई दे रहा है। मुझे भूख लगी है।
देव : मुझे भूख और नींद दोनों लगी हैं। बिना भूख मिटाए नींद नहीं आती। नींद बिना भूख नहीं मिटती।
नारद : माँ को देख रहे हो ?
दत्त : इतनी फुर्सत कहाँ है ?
नारद : क्या है तुम्हारी व्यस्तता ?
दत्त : तुमसे पूछ रहे हैं।
देव : मैं इसका जवाब अन्त में दूँगा।
नारद : अन्त माने ?
देव : जब अपनी पूरी बात कह लूँगा, तब उसके बाद।
नारद : तो शुरू करो न अपनी वह बात !
देव : कहाँ है वह मेरी बात ? जब वह मुझे मिल जाएगी तब उसके अन्त में मैं जवाब दूँगा।
नारद : निरर्थक ! आलसी ! क्लीब !
देव : ऋतुएँ बड़ी सुहानी हैं।
दत्त : परिवर्तन ऋतुओं में होता है !

देव : कुछ कहते रहना चाहिए। भाषा एक बहाना है।

माँ : मुनि, शरण आयी हूँ तुम्हारे। कोई उपाय करो। इनकी बातें निरर्थक हैं। जिसे ज्ञान नहीं है, उसमें आचरण नहीं, वहाँ परस्पर सम्बन्ध कहाँ होगा?

देव : यह स्त्री क्या कह रही है?

नारद : स्त्री नहीं, माँ।

देव : हाँ, हाँ।

दत्त : माँ और हाँ।

माँ : कृपा करो मुनि, मैं अब और नहीं सह सकती। यह हृदयविदारक दृश्य नहीं देख सकती।

नारद : सुनो, ब्रह्मापुत्र! इनके लिए कोई प्रार्थना करो। इसमें कोई विश्वास पैदा हो—ऐसी कोई भक्ति करो।

[ब्रह्मापुत्र प्रार्थना और भक्तिगान करते हैं।]

देव : अब यहाँ से चलता हूँ, नहीं तो नींद आ जाएगी। नींद खुलते ही भूख लगेगी। ऋषि ढोंगी है। यह हमारी नींद हराम करना चाहता है।

दत्त : कान में पहले से ही इतना दर्द था।

[दोनों अलग-अलग दिशाओं में चलने लगते हैं।]

देव : कोई मुझे धक्का दे दे तो मैं चल पड़ूँ।

दत्त : मैं किसी से कुछ क्यों कहूँ?

देव : मैं यहाँ से न जा सकूँ तो क्या फर्क पड़ता है!

[चलने के प्रयत्न का अभिनय।]

दत्त : सब कुछ निरर्थक है।

देव : कहीं कुछ है भी?

दत्त : मेरे अलावा और कुछ नहीं।

देव : केवल मैं।

दत्त : मैं कहीं नहीं जाता।

देव : जो जाता है वह संकट में पड़ता है।

दत्त : ऐसा तो है नहीं कि कोई घटना घट जाए!

देव : मैं यहाँ कैसे आया?

दत्त : आया नहीं, ले आया गया।

देव : कमर में दर्द हो रहा है।

दत्त : यहाँ कुछ होने जा रहा था।

देव : जब परिस्थितियाँ बदलेंगी तभी तो कुछ होगा!

नारद : परिस्थितियाँ कौन बदलेगा?

देव : मुझे तो भूख लगी है।

दत्त : तो अपना सिर खाओ !

देव : विचार उत्तम है। पहले तुम शुरू करो।

दत्त : मैं तुम नहीं हूँ, हाँ। भूख लगी है।

[माँ खिलाती है।]

माँ : ऋषि !

नारद : मैं कुछ कर नहीं सकता। वेद, ज्ञान, भक्ति, प्रार्थना, सब असफल। मैं जा रहा हूँ। इस व्याधि का कोई उपचार नहीं। इनकी व्याधि की जड़ तुम हो। तुम इनकी माँ नहीं शत्रु हो। इनसे भयभीत हो, इनकी हर इच्छा की दास हो। इनकी इच्छाएँ व्याधि हैं। केवल इच्छाएँ। ये कभी युवा नहीं थे, अपना बचपन जी रहे हैं।

[जाते हैं।]

माँ : ब्रह्मपुत्र ! बताओ, इस रोग की बुनियाद क्या है ? इस व्याधि का मूल क्या है। इसकी औषधि और उपचार क्या है ? कहाँ हैं धान्वंतर-आत्रेय ? क्या आयुर्वेद की ब्रह्मविद्या असफल हो गयी ? कहाँ हो अश्विनी कुमार—चिर यौवन के देवता।

[ब्रह्मा के चारों पुत्र सामने आते हैं।]

सनक : माँ आश्वस्त हो।

सनंदन : धैर्य रखो।

सनातन : तुम्हारे ये पुत्र जीवन-वृक्ष से टूटकर अलग जा गिरे हैं।

सनत् : ये दोनों अपने-अपने मैं के एकांत अँधेरे में हैं।

सनक : ये किसी से जुड़े नहीं हैं।

सनंदन : ये सहकर्मी और सहभागी हैं।

सनातन : ये परस्परानुकूल नहीं हैं, अतः परावलम्बित हैं।

सनत् : अनुकूल वही हो सकता है, जिसकी अपनी सत्ता हो !

माँ : कहाँ है वह सत्ता ?

सनक : सत्ता चित्त में है।

माँ : चित्त कहाँ है ?

सनंदन : सोया है।

माँ : कौन जगाएगा ?

सनत् : चोट खाकर स्वयं जगना होता है।

सनातन : दूसरा जगाता नहीं, अधीन बनाता है।

सनंदन : स्वयं जगना स्वाधीन होना है।

सनत् : पराधीन हैं, तभी बूढ़े हो गए हैं।

सब : चोट खाकर स्वयं जगना होता है।

माँ : तो चोट करो।

सब : संकल्प करो।

माँ : संकल्प करती हूँ। सारी चोट मेरे माथे पर। पुत्रों की चोट मेरे हृदय पर। मेरी दीनता, मेरे अपमान, पुत्रों की निर्वीर्यता, इनके पलायन सब मेरे मस्तक पर।

[ब्रह्मापुत्र माँ और पुत्रों पर प्रहार करते हैं। सब चोट खाकर बेहोश हो जाते हैं। ब्रह्मापुत्र खड़े देखते हैं। देव बेहोशी से जगता है। अपने घाव देखता है। दत्त को देखता है। छूता है। उसे जगाता है।]

देव : तुम्हें भी चोट लगी? जितनी, जैसी चोट मुझे लगी?
दत्त : तुम्हें भी चोट लगी? जितनी, जैसी चोट मुझे लगी?
देव : हम दोनों···।
दत्त : हाँ, हम दोनों।

[दोनों उठना चाहते हैं, नहीं उठा जाता।]

देव : हम दोनों एक-दूसरे के सहारे से उठ खड़े हो सकते हैं।
दत्त : आओ।

[दोनों परस्पर सहयोग से उठते हैं।]

देव : माँ कहाँ है?
दत्त : मेरी माँ।
देव : नहीं, हमारी माँ।
दोनों : हाँ, हमारी माँ!
देव : वह अचेत पड़ी है।
दत्त : चलो।

[दोनों से चला नहीं जाता।]

देव : एक-दूसरे के सहारे से चलें।
दत्त : परस्परानुकूल···तुम हो तभी मैं हूँ।

[चलते हैं।]

देव : अनुकूल होना अवलम्बित होना नहीं है।
दत्त : तुम्हारा दुःख मेरा दुःख है।
देव : हमारा दुःख माँ का दुःख है।
दत्त : माँ का सुख हमारा सुख है।

[अचेत माँ को देखते हैं। देव उसे सम्हालता है। दत्त वहाँ बिखरी हुई चीजें समेट-कर एक तरफ रखता है। वहाँ की जमीन साफ करता है।]

दत्त : आओ, अब इस साफ-सुथरी जमीन पर माँ को लिटा दें।
देव : माँ को खुली हवा चाहिए।
दत्त : आओ इन वृक्षों को यहाँ से हटा दें।

[दोनों ब्रह्मापुत्रों को बाहुबल से पीछे हटाते हैं। दोनों पुत्र युवा हो जाते हैं। जगकर मां उन्हें देखती है। आह्लाद से भर जाती है। ब्रह्मापुत्र पीछे बैठे आनन्द-गान कर रहे होते हैं।]

अभयं ज्योतिः पश्याम
अभयं ज्योतिः पश्याम
अभयं ज्योतिः पश्याम

मां : आह ! इनके शरीर प्रकाशमय हो गए। ये जिधर देखते हैं, धरती का अंश आनन्दित हो जाता है।

दोनों : मां।

मां : मेरे प्राण।

[दौड़े हुए नारद आते हैं।]

नारद : आज मैंने जाना, जो आत्मप्रकाशित है, प्रकाशस्वरूप वही पुरुष है।

मां : ऋषि, आपका आशीष।

[दोनों ऋषि के चरण स्पर्श करते हैं।]

मां : हे ऋषि, हे ब्रह्मतनय, मेरे पुत्र ! मेरी तरह कितनी माताओं के विलाप जल और वायु में स्थिर हैं। मेरे कानों में उन माताओं की आवाज टकरा रही है—देखो, देखो…देखो, देखो ऋषि, मैं संकल्प करती हूं—न मम्। मम इति मृत्युः। इन जवान बेटों को रोती हुई उन माताओं के पास ले जाओ। ले जाओ उन विलाप करती हुई माताओं के पास।

[ऋषि के साथ दोनों पुत्र जाते हैं। यात्रा दिख रही है। ब्रह्मापुत्र बैठे गा रहे हैं। मां अपने आंचल से पृथ्वी को प्रणाम कर रही होती है—पर्दा गिरता है।]

शुरू हो गया नाटक

पात्र

पालजी
जया
सविता
शर्माजी
बुलाकी
सिंह साहब
सिनहा
वर्मा
टंडनजी

[मंच दृश्य—दफ्तर का। बायीं ओर शर्मा जी के चारों ओर बाबू लोग। बीच में टाइपिस्ट सविता, दायीं ओर पालजी का स्थान। मंच पर प्रकाश आता है।]

पालजी : (**कुछ ढूंढ़ रहे हैं**) सब चीजें गायब हो जाती हैं ? क्या करे कोई। साढ़े दस बज गए, बाबू लोगों का कहीं पता नहीं है। कुछ कहो, गैरहाजिरी लगा दो तो हड़ताल-घेराव। (**विराम**) इतना गंदा दफ्तर—कूड़ा-खाना।

[बुलाकी आता है।]

पालजी : बुलाकी। दस बजकर चालीस मिनट, यह दफ्तर आने का समय है ?

बुलाकी : सलाम साहब।

पालजी : क्यों ?

बुलाकी : साहब, कल रात भगौती जागरण में ढोल बजाने और गाने चला गया था। साहब, वहीं से सीधे चला आ रहा हूँ। धरम-करम, पूजा-पाठ से बड़ा तो कोई नहीं है। झाड़न किधर गया, यहीं छिपाकर रखा था ?

पालजी : लगता है, दफ्तर में झाड़ू-पोंछा होता ही नहीं। मेज देखो मेरी।

बुलाकी : झाड़न कपड़ा वही सिंह साहब ले गए—जूता पोंछते हैं, स्कूटर साफ करते हैं।

पालजी : बक-बक मत करो—धूल के छल्ले उड़ रहे हैं।

[सविता आकर बैठती है।]

पालजी : आप भी सविताजी, इतनी देर से आती हैं ?

सविता : समय से आ जाऊँ तो ये लोग मुझे तंग करते हैं। शर्माजी धमकाते हैं।

बुलाकी : (**अपनी कमीज उतारकर साहब की मेज-कुर्सी पोंछता हुआ**) साहब, एक हफ्ते से फर्राश नहीं आया। एक दूसरा झाड़ू देने वाला आया, बोला, 'हम तो टेम्परेरी हैं—जब पर्मामेण्ट लोग नहीं आते तो···।' हम तो झाड़ नहीं देंगे साहब, जहाँ झाड़ वाला पर्मामेण्ट होकर घर बैठे तनखाह लेवे है।

[इस बीच शर्माजी के साथ सब आते हैं।]

बुलाकी : साहब, ये लोग गेट पर एक-दूसरे की इंतजारी में जान-बूझकर देरी करते हैं। ये बड़े गंदे लोग हैं तभी इतनी गंदगी पसंद है। अब आप बैठो साहब।

[कमीज पहनता है। कमीज की धूल उड़ती है।]

सिंह : अबे बुलाकी की दुम ! मार-मार के तेरी···।

बुलाकी : साहब, ग्यारह बजकर सात मिनट।

शर्मा : बुलाकी ! इधर आ !

सिनहा : बुलाकी, पानी ला।

वर्मा : मेरा पान, नब्बे नम्बर, किमामवाला।

टंडन : कितनी गंदगी है। दफ्तर है कि कूड़ाखाना। बुलाकी ! बुलाकी !

[इस बीच बुलाकी चला गया है।]

शर्मा : पालजी साहब बहुत गंभीर मुद्रा में हैं।

सिनहा : नये-नये अफसर होके आए हैं, धीरे-धीरे ठीक हो जाएँगे।

टंडन : नहीं तो हमारे शर्माजी हमारे बीच में हैं ही।

सिंह : सविताजी, नमस्कार।

शर्मा : अरे नमस्कार तो ले लिया करो बहनजी ! ये दफ्तर की लड़कियाँ भी खूब हैं। त्रिया चरित्रम् पुरुषस्य भाग्यम्···।

[बुलाकी आता है। सबकी चीजें ले आता है। शर्माजी कुल्ला करते हैं। वर्माजी पान की पीक मारते हैं। इस बीच पालजी टेलीफोन पर बातें कर रहे हैं।]

सिंह : दफ्तर की लड़कियाँ 'बहनजी' कहने से बुरा मानती हैं।

शर्मा : दरअसल, इन्हें 'माताजी' कहना चाहिए।

[हँसी]

पालजी : (आकर) क्या बात है ? शर्माजी के चारों तरफ घिरकर यह जमाव कैसा है, आप लोग कब दफ्तर आते हैं, क्या करते हैं, यहाँ आकर कभी इस पर गौर किया है ?

शर्मा : गौर करना आपका काम है श्रीमान् जी !

पालजी : शर्माजी, इधर आइए। देखिए अपने चारों ओर—यह कूड़ा—यह गंदगी, इधर देखिए पान की पीकें। थूक-खंखार।

शर्मा : बताइए भला, जहाँ इतना अपवित्र वातावरण हो, वहाँ कोई क्या काम कर सकता है ?

पालजी : यह पानी का कुल्ला अभी आपने किया है ?

शर्मा : देखिए, मुँह तो साफ रखना ही होगा। मुँह ही तो पवित्र आत्मा का दर्पण है। जिसकी आत्मा अपवित्र होती है, उसे अपने चारों ओर गंदगी ही गंदगी दिखाई पड़ती है। ऐसा मेरा अनुभव है। मैं अनुभव को ही ज्ञान मानता हूँ पालजी साहब !

[इसी बीच बुलाकी स्टूल पर बैठा बीड़ी पीता हुआ कोई नावेल पढ़ने में व्यस्त है।]

पालजी : कहाँ कूड़ा-करकट, थूक-धब्बे, कहाँ ज्ञान और आत्मा की बातें। यह अपने-

आपको धोखा देना नहीं तो और क्या है ?

सिंह : हमें इन फिजूल बातों में दफ्तर का समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

वर्मा : बिल्कुल सही बात।

[बुलाकी अचानक]

बुलाकी : मार दिया ! मार दिया ! शाबाश !

पालजी : यह क्या बदतमीजी है ?

बुलाकी : नावेल है सर···नावेल। कोई हुक्म साहब ?

[फिर पढ़ने लगना]

पालजी : (अपनी सीट से) बुलाकी ! बुलाकी !

सविता : सुनता नहीं। साहब बुला रहे हैं।

बुलाकी : (जाता हुआ) क्या नावेल है वाह ! जी साहब ! यस सर !

पालजी : सविताजी को भेजो !

बुलाकी : यह नहीं कि वहीं से आवाज दे लें, बड़ी अफसरी दिखाते हैं। खामखा मुझे 'डिस्टर्ब' करते हैं। (पहुँचकर) मैडम, साहब बुलाता।

[फिर पढ़ने में मस्त। सविता केले के छिलके पर फिसलकर गिरती है।]

बुलाकी : जियो राजा।

[सबकी हँसी]

पालजी : आप लोगों को शर्म नहीं आती। आई एम सॉरी, आपको चोट तो नहीं आई ?

सविता : आदत हो गई है। बचा लेती हूँ।

[दूसरी ओर]

सिनहा : यह केले का छिलका बीच में कहाँ से आ टपका ?

वर्मा : परसों आप ही ने केला खाया था।

सिनहा : मैंने छिलका बाहर फेंका था।

वर्मा : जी नहीं, दीवार से टकराकर फिर वापस आया था।

सविता : बड़ी गंदी आदतें हैं।

पालजी : क्या कहा ? गंदी आदतें !

सविता : जी सर, इनकी आदतों में ही गंदगी भरी पड़ी है। कभी कुछ साफ-सुथरी चीज सोच ही नहीं सकते। हर कोई बुरा है, गंदा है—यही बड़े अच्छे हैं।

पालजी : यह शर्माजी कैसे आदमी हैं ?

सविता : सर, इनके बारे में मेरा कुछ कहना ठीक नहीं होगा। इनकी पत्नी हैं—जया शर्मा, एम० ए० ओ० आफिस में काम करती हैं।

पालजी : जया त्रिवेदी ?

सविता : जी हाँ, अब वही जया शर्मा हैं।

पालजी : मैं उस दफ्तर में ए० ओ० रह चुका हूँ। जया त्रिवेदी को मैं खूब जानता हूँ। मैं उसे जया दीदी कहता था। सारे आफिस, कैंटीन की सफाई की वही इंचार्ज थी। क्या चमाचम दफ्तर। क्या साफ-सुथरी कैंटीन। उसकी शादी इससे ? नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता !

सविता : आप जाकर देखिए तो सही !

पालजी : मैं अभी फोन करता हूँ !

[फोन मिलाना। अंधकार। नया दृश्य—जया और पालजी।]

जया : भाई साहब, तो क्या हुआ ? ऐसा हो ही जाता है।

पालजी : जया दीदी। मान गया। बस मान गया।

जया : शर्माजी आपके ही दफ्तर में हैं—मुझे क्या पता !

पालजी : क्यों कभी पति-पत्नी में बात नहीं होती ?

जया : छोड़िए भी ! अच्छा, अब जाऊँगी !

पालजी : दीदी, अपने घर नहीं बुलाओगी ?

जया : फिर कभी !

पालजी : घर का पता तो बता दो !

जया : अभी नहीं।

पालजी : खैर, मैं घर का पता लगा लूँगा। आपको आपके घर में जरूर देखना चाहता हूँ।

जया : एक शर्त पर। छिपकर देखिएगा—झाँककर।

[हँसी। नया दृश्य। शर्माजी अपने घर पर।]

शर्मा : साढ़े छः बज गए। मेरी बीवी का अता-पता नहीं है। ये दफ्तर की बीबियाँ ! कहाँ फँस गए ! (विराम) किसी को प्रभावित कर रही होंगी सफाई का रंग डालकर। बड़ी साफ-सुथरी हैं श्रीमती जया शर्मा, सफाई, हाईजीन का बड़ा ख्याल है। हर चीज में पवित्रता—जो पवित्र शब्द का सही उच्चारण तक नहीं कर सकता, वही ढोंग करता है।

[दूसरी ओर पालजी छिपे हुए देखते हैं। 'कालबेल' बजाकर छिप जाते हैं।]

शर्मा : कौन है बे ? अबे कौन घंटी दबाकर भागा है ? साले एक बार हाथ में आ गया, तो भेजा निकालकर कुत्तों के सामने रख दूंगा। श्रीमती जया शर्मा ससुरी ने 'कालबेल' लगा दिया मुझे तंग करने के लिए। मेरी लाठी किधर है, आज मैं इसे तोड़कर रख दूँगा !

[तोड़ना। जया का आना।]

जया : यह क्या करते हैं ?

शर्मा : अपना सिर !

[जया झाड़ू लेकर सफाई करने लगती है।]

शर्मा : **(रोककर)** बस-बस, शुरू हो गया नाटक। बाहर साफ-सुथरी भीतर छछूंदरी; भीतर कुछ, बाहर कुछ। यह झूठा रंग घर के बाहर जमाना। जैसी तुम हो वैसा ही यह रहेगा। सच्चाई सच्चाई है। झाड़ू-पोंछा देने से सच्चाई नहीं मिट जाती। पवित्रता-सफाई भीतर होती है—आत्मा में। बाहर ढोंग करने से कुछ नहीं होता ! जाकर चुपचाप भोजन तैयार करो, आधे घण्टे में आता हूँ। मन्दिर जा रहा हूँ। समझीं कि नहीं ?

[शर्माजी का जाना। पालजी का प्रकट होना।]

पालजी : दीदी।

[सन्नाटा।]

जया : देख लिया न ?

पालजी : पर जो असली सच्चाई है—उसे कौन देख सकता है ?

[सन्नाटा।]

पालजी : दीदी, क्षमा करना। जाऊंगा अब।

जया : नहीं, अँधेरे में एक चिराग जलाकर तुम्हें'''। आज से सात साल पहले मैं और शर्माजी एक ही दफ्तर में काम करते थे। हमारा आपस में प्यार हो गया। हमारी शादी पक्की हो गयी। मैं ऐसे संस्कारों में पली थी, जहाँ मैं विवाह से पहले अपने पति के लिए पवित्र रहना चाहती थी। इसलिए मैंने तय किया, शर्माजी से शादी हो जाने तक कुँआरी बनी रहूँगी। पर शर्माजी की जिद। यह रटते रहते, 'तुम भी कमाल करती हो। हमारी सगाई हो गयी। मैं तुम्हारा पति हो गया। तीन दिन बाद हमारी शादी है। अब हमारे शारीरिक सम्बन्ध में क्या हर्ज है।' **(विराम)** मैं शर्माजी की जिद के सामने हार गयी। हमारी शादी हो गयी। कुछ ही दिन बीते थे। मैं घर की सफाई कर रही थी।

[दृश्य उभरता है। जया झाड़ू देकर, पोंछा कर रही है। शर्माजी आते हैं।]

शर्मा : बड़ी साफ-सुथरी बनने चली हैं।

जया : क्यों क्या बात है ?

शर्मा : जिसके भीतर जितनी गंदगी होती है, बाहर उतनी ही सफाई दिखाता है।

जया : तुम्हारा मतलब क्या है ?

शर्मा : शादी से पहले लड़की को पति के लिए कुँआरी और पवित्र रहना चाहिए। कहाँ चली गई थी तुम्हारी पवित्रता ?

जया : क्या ?

शर्मा : शादी से पहले तुम कुँआरी पवित्र नहीं थीं !

जया : क्या कहा ?
शर्मा : जैसे मेरी जिद के सामने हार गयीं, वैसे औरों की भी जिद के सामने···।

[जया का मूर्तिवत देखते रह जाना। दृश्य-परिवर्तन। फिर वही दफ्तर का दृश्य।]

शर्मा : बुलाकी ! ओ बे ! इधर आ !
सिनहा : अबे सुनता क्यों नहीं ?
सिंह : ऐसे नहीं सुनेगा।
बुलाकी : क्या कहा ? गाली बकते हो ? खबरदार, नंगा कर दूँगा।
पालजी : बुलाकी !
बुलाकी : आया साहब !

[आना।]

पालजी : शर्मा को भेजो !
बुलाकी : शर्माजी, साहब ने बुलाया है।
शर्मा : एक गिलास पानी दे।
बुलाकी : मुँह धोकर जाने की जरूरत नहीं है, ऐसे ही बुलाया है !

[शर्माजी का आना।]

पालजी : आपके कपड़े इतने गंदे क्यों हैं ?
शर्मा : साहब, मैं आंतरिक शुद्धता पर विश्वास करता हूँ।
पालजी : आपके मुँह से इतनी बदबू क्यों आ रही है ?
शर्मा : मुझे तो नहीं आ रही !
पालजी : अपने नाखून देखिए। अपने सिर के बाल देखिए। हाथ-पैर सब कितने गंदे हैं। आप आदमी हैं ?
शर्मा : मेरी आत्मा शुद्ध है।
पालजी : कभी अपनी आत्मा देखी है ?
शर्मा : क्यों नहीं देखी ?
पालजी : कब ? कहाँ ? कैसे ?
शर्मा : मेरी बात सुनिए !
पालजी : मैं सुनता नहीं, अपनी आँखों से देखता हूँ।
शर्मा : सुनिए तो। सुनिए। मैं भीतर से···।
पालजी : खामोश ! भीतर से ! जो तुम भीतर हो अपने, वही बाहर हो। सविताजी, आर्डर टाइप कीजिए ! श्री हरीशचन्द्र शर्मा···।

[सविता की उँगलियाँ टाइप कर रही हैं। शर्मा हाथ जोड़े गिड़गिड़ा रहा है। सारे लोग मूर्तिवत् देख रहे हैं।]

आँखों देखा तमाशा

पात्र

मनचन्दा
एक आदमी
दूसरा आदमी
किसले
ए० ओ०
गुप्त
खिलाड़ी
अफसर
फुलबैक
सिनहा
कप्तान
सिंह
दंडवते
विक्टर कप्तान
खन्ना
अर्जुनसिंह
रेफ्री
सूत्रधार

[सूने मंच पर सूत्रधार आता है। उसके हाथ में माइक है। यह आँखों देखी 'कमेंट्री' कर रहा है।]

सूत्रधार : हम आप सब असंख्य दर्शकों का इस 'राष्ट्रीय खेलकूद' के विशाल मैदान में स्वागत करते हैं। शायद आपको पता हो, फिर भी मेरा यह बता देना फर्ज है कि ओलम्पिक की यह परम्परा बहुत ही प्राचीन है। इसकी शुरुआत स्वर्ग में देवाधिदेव इन्द्र ने की थी। उन्होंने ही इसकी मशाल जलायी थी। अग्निदेवता ही उसे लिए स्वर्ग में दौड़े थे—फिर देवताओं और राक्षसों में वर्षों तक युद्ध हुए थे। मतलब, खेलकूद, तमाशे हुए थे। विजय अन्त में देवताओं की ही हुई थी। फिर तंग आकर वह अग्नि प्राचीन ग्रीस की ओलम्पिया पहाड़ी में जा छिपी। वहाँ जुपिटर नामक देवता ने उसे फिर बाहर निकाला। तब से ओलम्पिक का यह खेल केवल विदेशों में होता रहा है। मगर जब हम आजाद हुए तो वह आग हमने वापस मँगा ली और हम तब से हर पाँचवें साल अपना यह नेशनल ओलम्पिक यहाँ खेलते हैं और अब यह हमारा राष्ट्रीय पर्व बन गया है। इसे देखने आते हैं हमारे मुल्क के पचास करोड़ दर्शक। इस समय दर्शकों की संख्या सत्तावन करोड़ तक पहुँच गयी है। (सहसा) तो अब मैं देख रहा हूँ। खिलाड़ी लोग धीरे-धीरे मैदान में आ रहे हैं। सब प्रसन्न हैं। तो अब राष्ट्रीय खेलकूद का राष्ट्रीय पर्व शुरू होता है। सबसे पहले ओलम्पिक की जै ज्वाला लिए फुटबाल के सबसे पुराने चैम्पियन गौरमोहन बनर्जी आ रहे हैं। देखिए, दायीं ओर से बायीं ओर बढ़ रहे हैं।

[एक बैसाखी के सहारे एक हाथ में मशाल लिए बनर्जी का प्रवेश। दौड़ने की कोशिश।]

सूत्रधार : बनर्जी दादा की यह टाँग पहले ही राष्ट्रीय खेल में टूटी थी—जब इन्होंने सेण्टर फारवर्ड से बढ़ते हुए मद्रास के गोलकीपर को घूस देना चाहा था सिर्फ एक गोल होने देने के लिए। पर उसी समय किसी ने इन्हें इतनी जोर का धक्का दिया कि ओ माँ, ओ माँ, ओ माँ ! पर उससे क्या, गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में, वह तिफ्ल क्या गिरेगा जो घुटनों के बल चले !

[मशाल लिए मंच पर घूम कर जाना।]

सूत्रधार : अब राष्ट्रीय खेलकूद के खिलाड़ी अपने-अपने दल, पार्टी के झण्डे लेकर आ रहे हैं। इन सारे खिलाड़ियों का एक ही लक्ष्य है—विजय। एक ही नारा है—

जीतो या मरो ! इसलिए सब एक-दूसरे के दुश्मन हैं। हर पाँचवें वर्ष ये खिलाड़ी अपनी ताकत आजमाने आते हैं और सत्तावन करोड़ दर्शक इन्हें देखते ही रह जाते हैं। इस खेल में करोड़ों रुपये खर्च होते हैं—मार-पीट, समझौते, कत्ल, लूट, घात-विश्वासघात होते हैं और बड़े-से-बड़े 'मेनीफेस्टो' के पन्ने सड़क-कूचों, गलियों और आसमान में उड़ते रह जाते हैं। देखिए, इन रंग-बिरंगे झण्डों को···देखिए इन खिलाड़ियों की पोशाकों को···। कितने हसीन ! कितने नवीन !

[सब झण्डे वाले मंच पर घूमकर चले जाते हैं।]

सूत्रधार : हाजरीन, इस तरह नेशनल ओलम्पिक का कर्मकाण्ड खत्म हुआ। अब असली खेलकूद के कार्यक्रम शुरू होते हैं। इस खेल में सारा मुल्क शामिल है। सारी पार्टियाँ, सारे वर्गों के लोग, अफसर, अध्यापक, बिजनेसमैन, पत्रकार, पालिटी-शियन, लेखक, कलाकार—स्त्री-पुरुष—सारी जातियाँ, सारे मजहब—सारा प्राचीन···सारा आधुनिक। इसमें सारे खेल हैं—भारतीय और विदेशी, सब··· (**खाँसी आ जाती है**) अब आगे का आँखों देखा हाल मिस्टर मनचंदाजी बताएंगे।

मनचंदा : प्यारे दर्शकों ! दोस्तो ! मेरे सामने इस मुल्क का एक विशाल मैदान है। हवा धीरे-धीरे बह रही है। हमारे पीछे पांडवों का प्राचीन किला है। दायीं ओर इंडिया गेट है···बायीं ओर विक्टोरिया की मूर्ति है—यहाँ से मैं देख रहा हूँ, राजघाट—महात्मा गांधी की समाधि···। देखिए, अब पहला 'आइटम' शुरू होता है—कुश्ती का···रेसलिंग। आप जानते हैं मल्लयुद्ध हमारा राष्ट्रीय गौरव है। यह परम्परा अत्यंत पुरानी है। इन्द्र ने मल्लयुद्ध में वृत्रासुर को पराजित किया था। भीम ने दुर्योधन का खून पिया था। हाँ तो रेसलिंग में दो मशहूर ओ मारूफ आ गए हैं—एक ओर हैं भारत केसरी राजनारायण गुप्त, दूसरी ओर हैं डाक्टर किसले। गुप्त जी पूरब के योद्धा हैं—डाक्टर किसले हैं पश्चिमी भारत के मशहूर दंगली पहलवान। दोनों के वजन और विचार समान हैं। दोनों एक ही अखाड़े और उस्ताद के शिष्य हैं। तो अब कुश्ती शुरू होती है। यह क्या, डाक्टर किसले भाग रहे हैं डर के मारे। रेफ्री ने उन्हें पकड़ा, समझाने के बाद वापस आ रहे हैं। अरे, फिर भाग निकले। फिर वापस लाए जा रहे हैं। रेफ्री से क्या बातें हो रही हैं। —पता नहीं। बहरहाल अब दोनों आमने-सामने हैं। दोनों एक-दूसरे को नफरत से देखते हुए हाथ मिला रहे हैं। हाथापाई शुरू हो गयी। गुप्त ने टाँग मारी—डाक्टर ने चपेटा मारा। दोनों घूर रहे हैं। गुप्त ने किसले को पकड़ लिया। किसले छटपटा रहे हैं। किसले ने दाँव मारा—गुप्त ने बचा लिया। किसले भाग रहे हैं—गुप्त पीछा कर रहे हैं और अब किसले उनकी पकड़ में आ गए हैं। किसले को गुप्त ने पटक दिया। उनकी पीठ पर सवार हो गए हैं। किसले ने नीचे से दाँव मारा। गुप्त जी चित हो गए···वाह-वाह···क्या खेल है ! मल्लयुद्ध का क्या कमाल है !

[रेफ़ी ने सीटी बजाई।]

मनचंदा : पर यह क्या ? यह भी क्या कमाल है ! गुप्त जी गुस्से में आकर रेफ़ी से ही भिड़ गए। लोग रेफ़ी को बचाने दौड़े। गुप्तजी को लोग बाहर खींच रहे हैं। वह जमीन पर लेट गए हैं। आगे मुझे कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। बड़ा शोर है। हाँ-हाँ, अब देख रहा हूँ। दोनों एक-दूसरे से अब वाक्युद्ध कर रहे हैं !

किसले : तुमने समाजवाद का गला घोंटा।

गुप्त : तुमने मेरे साथ विश्वासघात किया।

किसले : तुमने पार्टी के उसूलों की खिलाफत की।

गुप्त : तुमने मुझे पार्टी का टिकट नहीं दिया।

किसले : तुमने साम्प्रदायिक पार्टियों से समझौता किया।

गुप्त : इलेक्शन जीतने के लिए वह एक चाल थी।

किसले : तूने पार्टी के साथ गद्दारी की।

गुप्त : जाओ ! मैं अकेले पार्टी बनाता हूँ—यू गेट आउट ! जाओ ! 'गुप्ता रेडिकल सोशलिस्ट पार्टी जिन्दाबाद !'

[लोग उन्हें खींचकर मैदान से बाहर करते हैं।]

मनचंदा : लोग दोनों योद्धाओं को खींचते हुए मैदान से बाहर ले जा रहे हैं। हार-जीत का शायद कोई फ़ैसला नहीं हुआ। अब अगले राउंड की प्रतीक्षा कीजिए। मेरा गला सूख रहा है। हवा में गर्मी बढ़ने लगी है। आसमान में कुछ पंछी उड़ रहे हैं। अब आगे का हाल मेरे सहयोगी से सुनिए।

सूत्रधार : धन्यवाद मनचंदाजी ! हाँ, तो अब अगला आइटम शुरू हो रहा है—राष्ट्रीय कबड्डी का। खिलाड़ी मैदान में आ चुके हैं—रेफ़ी ने घड़ी देखी। सीटी बजी और अब मुझे कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। लोग बड़ी तेजी से दौड़ रहे हैं, कुछ बता पाना मुश्किल है। इतना ही दिखाई पड़ रहा है कि दोनों ओर से खिलाड़ियों के सामने टेबुलें लगी हैं और उन पर फाइलें पड़ी हैं। इन खिलाड़ियों में कौन क्लर्क है, कौन अफसर है, कौन जनता का खिलाड़ी है—यह बता पाना बड़ा मुश्किल है। फाइल कबड्डी का यह खेल हमारे लिए बिल्कुल नयी चीज है और अब यह खेल आप स्वयं दूरदर्शन पर ही देख सकते हैं। तो मुझे थोड़ी देर के लिए इजाजत दीजिए।

[खेल शुरू है। एक अफसर घंटी बजाता है।]

अफसर : मिस्टर सिनहा, नम्बर सोलह हजार आठ सौ तिरपन वाई० डब्ल्यू० सिक्सटी वन की फाइल लेकर आओ।

[सिनहा फाइल लेकर 'गुड-गुड-गुड-गुड' कहता हुआ दौड़ता है—चालें दिखाता है। पैंतरे बदलता है। अफसर के सामने फाइल रखकर बड़बड़ाता रहता है। लोग उसे पकड़ना चाहते हैं, पर वह किसी के हाथ नहीं आता।]

अफसर : इस पर अब तक एक्शन क्यों नहीं लिया गया ?

सिनहा : गुड-गुड-गुड-गुड—यह फाइल पहले होम मिनिस्ट्री गई···वहाँ से फाइनेंस···फिर मैं छुट्टी पर चला गया। आपने इस पर नोट दिया—फिर फाइनेंस ने 'आबजेक्शनरेंज' किया। मैंने 'नोट पुटअप' किया, फिर आप छुट्टी पर चले···गए वगैरह-वगैरह···वगैरह···

[यह कहता हुआ सिनहा वापस लौटता है। अब अफसर गुड-गुड कहता दौड़ता है। उसी तरह पैंतरेबाजी दिखाता है।]

अफसर : इस फाइल पर क्या एक्शन लिया जाए (**बुहराता है**) यह फाइल इम्पार्टेण्ट है। इस पर पालियामेंट में सवाल हुआ है। हमारी नौकरी खतरे में है। मिस्टर सिंह···मिस्टर सिंह···सिंह···सिंह !

[वापस आता है। मिस्टर सिंह दौड़ता है।]

सिंह : पालियामेंट को जवाब दे दिया है। सर, बेफिकर रहिए···इसे फिलहाल 'पेंडिंग' में पेंडिंग···पेंडिंग···डिंग-डिंग-डिंग···

[कहता हुआ फाइल वापस ले आता है।]

एक आदमी : (**दौड़ता है**) मुझे रिटायर्ड हुए तीन साल हो गए—मुझे अब तक पेंसिल नहीं मिली···मेरी फाइल···मेरी फाइल, उस पर एक्शन···अब क्यों नहीं ? तीन साल बीत गए, तीन साल। मैं बुड्ढा, लाचार···भाई खन्ना साहब, खन्ना साहब···खन-खन-खन-खन !

[वापस आता है। खन्ना दौड़ता है।]

खन्ना : महँगाई इत्ती बढ़ गई है···हम इत्ता काम क्यों करें ? 'पे कमीशन' ने हमें 'इंटरिम रिलीफ रिकमंड' किया वह अब तक लागू क्यों नहीं···लागू क्यों नहीं ? क्यों-क्यों-क्यों ?

एक आदमी : हे भाई, हे भाई, माई-बाप, माई-बाप।

[एक नोट पकड़ाता है।]

खन्ना : हो जाएगा···हो जाएगा···पेंशन के पेपर्स तैयार हो रहे हैं ए० जी० सी० आर० के दफ्तर में फाइल भेज दी है—प्लीज कीप पेशेंस···कीप पेशेंस···शें-शें-शें !

रेफी : सीटी 'सेक्रेट्रियट वन प्वाइंट···'

दूसरा आदमी : (**दौड़ता है**) मेरा लाइसेंस पेपर···मेरा लाइसेंस पेपर···(**क्लर्क फाइल दबाए भाग रहा है, आदमी उसे छूना चाहता है**) हाँ-हाँ, कितना-कितना···भाई पाँच सौ ज्यादा है—ढाई सौ-ढाई सौ···अच्छा तीन। तीन-तीन, अच्छा चार-चार-चार···अच्छा साढ़े चार···चार-चार-चार-चार···

[दूसरा आदमी धन देता है। फाइल से कागज लेकर वापस आता है।]

रेफ़ी : (सीटी) पब्लिक सेक्टर वन प्वाइंट।

सिनहा : (दौड़ता है) सर-सर-सर-सर-सर, यह देखिए, मेरी पर्सनल फाइल। मैं सीनियर, मैं सीनियर···खन्ना मुझसे जूनियर-जूनियर···

अफसर : (घंटी) ए० ओ०। ए० ओ०, ए० ओ० !

ए० ओ० : (दौड़ता है) यस सर, यस सर ! सर-सर-सर-सर !

अफसर : सिनहा को उसकी पर्सनल फाइल कैसे मिली ? कैसे मिली ? कैसे मिली ? ली-ली-ली-ली-ली !

ए० ओ० : यस सर, यस सर !

सिनहा : मेरी तरक्की···मेरी तरक्की···मेरी तरक्की !

खन्ना : कैसी-कैसी-कैसी ?

रेफ़ी : (सीटी) फाउल ! मिस्टर खन्ना, अपना दल-बदल नहीं कर सकते।

खन्ना : वाह-वाह-वाह ! हम हों तबाह ?

[रेफ़ी अपनी जान बचाता भागता है। खन्ना और सिनहा अपनी फाइलें लिए कबड्डी खेल रहे हैं। खन्ना उसे लंगड़ी मारता है—सिनहा चित।]

रेफ़ी : (सीटी) खन्ना, वन प्वाइंट !

अफसर : खन्ना की तरक्की—ऊपर से फोन भी आ गया। ट्रिन-ट्रिन···

सिनहा : (दौड़ता है) इन्कलाब जिन्दाबाद ! यह अन्याय ! यह अन्याय !

एक आदमी : हड़ताल···हड़ताल···घेराव···घेराव···पथराव, राव-राव-राव !

[सारे लोग दौड़ पड़ते हैं। भयानक कबड्डी। शोर। मारधाड़ रिश्वतखोरी खींचातानी।]

रेफ़ी : घोषणा : कबड्डी का खेल खत्म ! खेल में इस हड़बड़ी और दंगे की जाँच के लिए—एक स्पेशल इन्क्वायरी कमेटी।

[सब भागते हैं।]

सूत्रधार : नेशनल ओलम्पिक के खेल अब अपने फाइनल्स में पहुँच गए हैं। सबसे पहले आप देख रहे हैं—हाकी फाइनल। एक ओर है 'विक्टर 'अलेविन', दूसरी ओर है 'रेडिकल अलेविन'। विक्टर अलेविन दाईं ओर···रेडिकल अलेविन बाईं ओर। खिलाड़ी मैदान में आ रहे हैं। आपस में हाथ मिला रहे हैं। कोई धोती कस के बाँध रहा है। हाँ, हम बता दें—विक्टर लोगों की जर्सी है—सफेद धोती···सफेद कुर्त्ता, सफेद टोपी। रेडिकल की जर्सी रंग-बिरंगी, सतरंगी है···सब अलग-अलग। कोई पेंट में, कोई हाफपेंट, कोई टोपी, कोई साफा···कोई लाल, कोई पीला···कोई हरा। (सीटी) रेफ़ी ने अब सीटी बजाई। खिलाड़ी 'पोजीशन' ले रहे हैं, हवा न गर्म है···न ठंडी है। मैदान साफ है। सारा वातावरण प्यारा-प्यारा है। अब आँखों देखा खेल हमारे सहयोगी मनचंदाजी के मुँह से सुनिए···

[सीटी बजी, खेल शुरू।]

मनचंदा : गेंद लिए बढ़ा रहे हैं विक्टर के सेंटर फारवर्ड—उनसे छीन लिया रेडिकल 'हाफबैक'। गेंद को लिए तेजी से बढ़ रहे हैं, रेलवे बजट पर बहस करते हुए तमिलनाडु के प्रसिद्ध खिलाड़ी। उन्हें टाँग मारकर गिरा दिया केरल के सी० पी० एम० ने। अब गेंद तेजी से लिए बढ़ रहे हैं विक्टर कप्तान। इन्होंने पिछले सारे जनरल एलेक्शनों में बड़े-बड़े विरोधियों को हराया है—कभी फुलशाट मारकर कभी पास देकर, कभी कार्नर से गोल किया है···कभी पेनाल्टी लेकर। मगर मैं यह क्या देख रहा हूँ—विक्टर के सेंटर फारवर्ड ने अपने ही कप्तान को धक्का दिया। गेंद उसके हाथ से छीन लिया। यह क्या, गेंद को हाथ में छिपाए भागे जा रहे हैं। अब धोती में छिपा लिया। रेडिकल के खिलाड़ी उनसे गेंद छीन लेना चाह रहे हैं, पर उनके पास तो कहीं गेंद है ही नहीं, लोग खामखा उनकी नंगाझोरी ले रहे हैं···सारे लोग गेंद ढूंढ़ने में लगे हैं···इस बीच आँख बचाकर उत्तर प्रदेश के सेंटर फारवर्ड ने बंगाल के रेडिकल गोलकीपर की आँखों में सचमुच धूल झोंककर गोल कर दिया। वाह! कमाल है!

[सीटी और शोर। फिर खेल शुरू।]

खेल फिर शुरू। सेंटर हाफ से विक्टर के फुलबैक गेंद लिए चले आ रहे हैं। डी के पास पहुँच गए। रेडिकल के कप्तान ने फुलबैक को पेट में मारकर गिरा दिया। लगता है—बेहोश हो गए। वह स्ट्रेचर पर उठाकर ले जाए जा रहे हैं, इधर रेफ्री के पास भीड़ लग गई है। कुछ दिखाई-सुनाई नहीं दे रहा है। आगे का हाल मैं आपके ही ऊपर छोड़ता हूँ।

रेफ्री : आपने 'फाउल' किया है—आप मैदान से बाहर जाइए!

खिलाड़ी : क्यों जाऊँ? नहीं जाता। आप क्या कर लेंगे?

रेफ्री : 'यू हैव नो स्पोर्ट्स मैन स्प्रिट'!

खिलाड़ी : स्प्रिट?···स्प्रिट दुकान पर मिलेगी। यहाँ कहाँ है?

रेफ्री : आप बाहर जाते हैं या नहीं? खेलने आए हैं या गुंडागर्दी करने?

खिलाड़ी : हैं जी, जबान सम्हाल कर बोलिए। पंजाब के चीफ मिनिस्टर का फर्स्ट कजिन हूँ।

रेफ्री : मतलब खेल यहीं खत्म।

खिलाड़ी : आप खामखा मुझ पर बिगड़ रहे हैं—कुछ जानते-बूझते भी हैं? पिछले जनरल एलेक्शन में मुझे इसी की वजह से पालियामेंट का चुनाव टिकट नहीं मिला। वह मेरी 'कांस्टीच्यूएन्सी' थी जहाँ से यह जीतकर आया। मैं इसका खून कर दूंगा—बड़ा आया खिलाड़ी।

[शोर। पट्टी बाँधे फुलबैक का खिलाड़ी गीता पाठ करता हुआ आता है।]

फुलबैक : कोई बात नहीं, मैंने माफ किया। चलो खेल शुरू करो—सत्यमेव जयते।

खिलाड़ी : आइए, हाथ मिलाइए!

फुलबंक : 'कम थ्रू प्रापर चैनेल !'

खिलाड़ी : इतना घमंड ! देख लूंगा अगले एलेक्शन में ! देखता हूँ कौन पार्टी टिकट देती है तुम्हें ?

फुलबंक : अरे जाओ ! पार्टी का चुनाव मैं खुद करता हूँ—एलेक्शन से तीन महीने पहले। चलो खेलो। चाहे फाउल खेलो, चाहे जो करो—जीत हमारी ही होनी है।

[सीटी बजती है। खिलाड़ी तैयार हैं।]

रेफ्री : गेंद कहाँ है ? आप लोग बोलते क्यों नहीं—गेंद कहाँ है ? (**सबके पाकेट में, बदन छूकर देखा जाता है। रेडिकल का एक खिलाड़ी टोपी के नीचे गेंद रखे था। वह नीचे गिरती है। खिलाड़ी उसके ऊपर बैठ जाता है**) यह क्या तमाशा है—खेल होने दोगे या नहीं ? आप लोग आखिर चाहते क्या हैं ?

कप्तान : अरे भाई दण्डवते, गेंद दो। दो न ! यह क्या बेइज्जती करते हो ? चलो उठो !

दंडवते : जी नहीं, भाई साहब, मैं तंग आ गया हूँ। मैं आत्महत्या कर लूंगा, मगर यह गेंद नहीं दूंगा, नहीं दूंगा, नहीं दूंगा—जिंदगी में पहली बार हाथ लगा है (**गेंद चूमता है—निहारता है।**)

वि० कप्तान : भाई दंडवते, चाहते क्या हो ?

दंडवते : भाई साहब, हृदय की बात बता दूं ? सिर्फ एक गोल !

वि० कप्तान : भई इसमें क्या बात है ? जाओ हमारे गोलकीपर से सलाह कर लो।

[गोलकीपर से सलाह—पैर छूना आदि।]

रेफ्री : यह बेईमानी, यह इनडिसिप्लिन मैं हर्गिज नहीं बर्दाश्त कर सकता !

दंडवते : क्यों भाई साहब ! हमारे पास रेफ्री की कोई कमी है ! इसे बदल दीजिए !

[सभी—'रेफ्री गेट आउट' ! रेफ्री निकल जाता है। सारे खिलाड़ियों के मुँह में सीटी लग जाती है। सब खेलना शुरू करते हैं—स्वयं जीतते हैं, स्वयं हारते हैं—खुद रेफ्री के काम करते हैं।]

सूत्रधार : नेशनल हाकी के बाद 'लांग जम्प' का खेल शुरू होता है। खिलाड़ी मैदान में आ रहे हैं। ये सारे खिलाड़ी वे हैं जो अपने प्रांतों से चैम्पियन होकर आए हैं। इसमें वे लोग हैं जो तरह-तरह के 'एवार्ड्स', तरह-तरह की उपाधियाँ और बड़ी-से-बड़ी प्रांतीय नौकरियाँ भोगकर अब नेशनल चैम्पियन होने आए हैं।

[सीटी बजती है। कूद का मैदान तैयार है।]

सूत्रधार : 'लांग जम्प' में पहले खिलाड़ी आ रहे हैं—आंध्र प्रदेश के चैम्पियन सुब्बारावजी। इन्होंने अपनी जिंदगी की दौड़ तब शुरू की थी जब इन्होंने बी० ए०, एल-एल० बी० पास करके उन्नीस सौ पचास में मैसूर में वकालत शुरू की।

इन्होंने वकालत में देखा—इस दौड़ में कुछ नहीं रखा है। इन्होंने फिर 'लांग जम्प' मारा। एक्साइज डिपार्टमेंट में क्लर्क हुए। और कूदे। इंस्पेक्टर हुए और एक साल के भीतर ही चैम्पियन हो गए।

[इस बीच सुब्बाराव का कूदना होता रहता है।]

दो बार करप्शन में गिरफ्तार हुए। एक बार घूसखोरी में जेल गए। पर धन इत्ता इकट्ठा कर लिया, इत्ती ताकत हासिल कर ली कि अब नेशनल चैम्पियन की कूद में आना ही था। लगता है उनके पैर में चोट लग गई। ओ हो! पैर ही टूट गए। उठाकर लोग उन्हें ले जा रहे हैं। अफसोस···अफसोस! तब तक आप लोग एक फिल्मी गाना सुनिए, जी बहल जाएगा। (गाना) आगे का हाल हमारे मनचंदाजी सुनाएँगे। हाँ, जाते-जाते मैं यह बता दूँ—अब सूरज डूबने को है। पंछी लोग अब अपने घरों की तरफ रवाना हो रहे हैं।

मनचंदा : हाँ, तो अब दूसरे खिलाड़ी आ रहे हैं अर्जुन सिंह। यह बिहार के चैम्पियन हैं। जमींदारी खत्म होते ही यह जनसंघ में कूदे, फिर लांग जम्प करके सोशलिस्ट पार्टी में गए। फिर कूदे। कूदकर कांग्रेस में आए। और जब कांग्रेस भी लांग जम्प के खेल में इंडिकेट और सिंडिकेट में बँटी, तब से यह सिर्फ लोकसभा के कैंडीडेट हो गए। पिछले चुनाव के 'लांग जम्प' में इनकी कमर की हड्डी टूट गई थी। पर जल्दी ही इलाज कराके ठीक हो गए और अब चैम्पियन हैं। पर अभी इन्हें नेशनल चैम्पियन किसी तरह से भी जीतनी है—चाहे जो हो।

[अर्जुनसिंह का कूदना। गिरना। चीखना]

अर्जुनसिंह : हाय-हाय, हड्डी टूट गई। मर गया, मैं मर गया। हवाई जहाज मंगाओ ···हेलीकोप्टर लाओ। मुझे अमेरिका-फ्रांस पहुँचाओ, नहीं तो मैं पार्टी में तहलका मचाकर रख दूँगा।

[लोग स्ट्रेचर लिए आते हैं।]

अर्जुनसिंह : भाग जाओ! गेट आउट! झटपट प्रेस वालों को बुलाओ। प्रेस फोटोग्राफर और संवाददाता।

रेफरी : सर! ओलम्पिक फोटोग्राफर और कोरेस्पांडेंट मौजूद हैं।

अर्जुनसिंह : धत्त! उल्लू कहीं का। पोलिटिकल करेस्पांडेंट बुलाओ और पोलिटिकल फोटोग्राफर···देखिए इन्हें यही नहीं मालूम कि पोलिटिकल फोटोग्राफर क्या चीज होता है। धत्त! दीजिए अपनी सीटी मुझे, मैं बुलाता हूँ फोटोग्राफर और प्रेस कान्फ्रेंस!

[सीटी बजाता है। फोटोग्राफर के साथ कई पत्रकार दौड़े आते हैं।]

अर्जुनसिंह : भाई लोग, नमस्ते! पहले फोटो हो जाने दीजिए। मैं कहता हूँ, हट जाइए आप लोग। बेशरम! आने दो पावर में—एक-एक की खबर लूँगा। नहीं,

यह 'पोज' ठीक नहीं है। देखिए जब मैं ऐसे-ऐसे करूँ—फौरन खींच लीजिए फोटू। क्या कहा, देखिए, बेशी ही-ही मत कीजिए। हाँ जी, खींचिए, खींचते रहिए न, रुक क्यों गए ? मैं 'एक्शन' और 'पोज' दे रहा हूँ।

[तरह-तरह के एक्शन, पोज, मुद्राएँ।]

अर्जुनसिंह : हाँ, क्यों नहीं, मैं बड़े ठाट से खड़ा हो सकता हूँ। गिरने का मतलब ही है खड़ा होना।

रेफ़्री : अरे, आपकी कमर की हड्डी ?

अर्जुनसिंह : चोप्प। कैसी हड्डी। मेरे बदन में अब एक भी हड्डी-वड्डी नहीं है। चंपारन माँ जब गांधी जी आइल रहलें ना, तो लाठी चार्ज जो भइल तो हमरी सारी हड्डी चकनाचूर··· (हँसना) एंड आफ्टर इंडिपेंडेंस नो बोन्स···ह्वाट ? टाक आफ बैकबोन···लिख लीजिए, लिख लीजिए। यही तो है प्रेस कांफ्रेंस टू अंग्रेजी में बोले या हिन्दी में ? या भोजपुरी ? रउँआ लोग बोलीं ना। अच्छा, अच्छा। यस···यस···यस ! हाँ, हाँ, हो ! नोट कीजिए। आई एम वेरी हैप्पी टू डिक्लेयर···क्यों वेरी हैप्पी ठीक रहेगा···या सिर्फ हैप्पी ? अच्छा-अच्छा ! रउँआ ठीक कहत बाटीं। हाँ, सो आई एम वेरी हैप्पी टू डिक्लेयर दैट आई वन द लांग जंप गेम···शोर मत कीजिए···कीप क्वायट। मुझे अपनी बात कह लेने दीजिए, फिर झगड़ा-टंटा कीजिएगा। समझे कि नहीं ? हाँ···सो आई एम दी नेशनल चैम्पियन आफ लांग जंप। फोटो···फोटो।

[सारे खिलाड़ी इस झूठ के विरोध में बेहद उत्तेजित हैं। अर्जुनसिंह को उठाकर लोग मैदान से बाहर करने लगते हैं।]

अर्जुनसिंह : भाइयो, पहले इसी मुद्रा में एक फोटो खिंच जाने दो ! थैंक्यू ! इसी हालत में प्रेस कांफ्रेंस भी खत्म करने दो ! हाँ भाई, सुनो—देखो मुझ पर कितनी ज्यादती हो रही है—मेरे सारे विरोधी मेरे दुश्मन हैं—मगर मैं एक-एक को खत्म करके रहूँगा—किसी को खरीदकर, किसी को हराकर, किसी को फुसलाकर ···धमकाकर··· चुरा कर···कर···कर···कर···कर···कर···कर···

सूत्रधार : हाजरीन ! तो आज का खेल खत्म हो रहा है। धीरे-धीरे खिलाड़ी लोग मैदान से जा रहे हैं। किसी को कोई जबर्दस्ती उठाए लिए जा रहे हैं—कोई स्वयं जा रहा है। अब शाम हो रही है। रोशनी बिल्कुल कम हो गयी है लेकिन हमें आशा है—रोशनी फिर होगी—कल सुबह साढ़े छः बजे हम फिर मिलेंगे। रास्ते के लिए एक फ़िल्मी गाना सुनते रहिए—रिकार्डेड नहीं 'लाइव' !

[मंच पर लड़के-लड़कियाँ। समूह स्वर में—'इन्हीं लोगों ने, इन्हीं लोगों ने लै लीन्हा दुपट्टा मेरा···']

वह मेरा पति

पात्र

कपूर
मिसेज कपूर

[दृश्य—सोने का कमरा। रात का समय। पलंग पर सफेद बिछावन पड़ा है। कमरे के दायीं ओर लैम्प की रोशनी सिमटी हुई है। शेष कमरे में उसी रोशनी की महज छाया पड़ रही है। लैम्प की रोशनी में दिख रहा है एक छोटा-सा टेबुल, जिस पर टेलीफोन रखा है। उसके पास की ही आरामकुर्सी पर मिसेज कपूर रात के कपड़े पहने हुए जैसे बेहोश-सी सो गयी हैं। टेलीफोन की घण्टी बजती है। बजती रहती है। मिसेज कपूर जैसे धीरे-धीरे जगती हैं और तेजी से फोन उठा लेती हैं।]

मिसेज कपूर : हेलो ! हैलो ! ! क्या···क्या कहा ?···क्या ? क्या कहा ? चिड़ियाघर ? नानसेन्स···

[टेलीफोन रख देती हैं। हाथ की घड़ी देखती हैं और कुर्सी पर निढाल-सी पड़ जाती हैं। थोड़ी देर बाद स्वयं फोन करती हैं।]

मिसेज कपूर : हेलो···पार्क स्ट्रीट !···मैं मिसेज कपूर बोल रही हूँ। मिस्टर कपूर आ गए ? क्या ? अभी तक वह 'बार' में बैठे हैं ? कब तक कमरे में लौटने की उम्मीद है ?···पता नहीं ? रात का डेढ़ बज रहा है ! जी, मैं मिसेज कपूर बोल रही हूँ···जी, 'वन डबल टू थ्री फाइव' से···हेलो···

[टेलीफोन रख देती हैं। कुर्सी से उठकर कमरे में टहलती हैं, फिर पलंग पर जा गिरती हैं। तकिये में मुँह गड़ाकर सो जाना चाहती हैं। तभी टेलीफोन की घण्टी बजती है। मिसेज कपूर पलंग से ही हाथ बढ़ाकर फोन उठा लेती हैं।]

मिसेज कपूर : हेलो !···कपूर ! कपूर ! तुम रात-रात-भर कहाँ घूमते रहते हो ? मैं यहाँ किस कदर परेशान हूँ, तुम्हें इसकी क्या खबर !···मेरी छोटी बहन ? मीना ?···उसे आज सुबह ही मैंने 'रूबी नर्सिंग होम' में भर्ती कर दिया है। जी···हाँ, जी, उसे यहाँ पहले कई दिनों से नींद नहीं आती थी···जी, शहर के डाक्टरों को बार-बार दिखाया ! जी, अरे, तुम यहाँ होते, तो देखते···क्या ? हम दोनों बहनें एक-सी निकलीं ? नहीं-नहीं ! प्लीज, ऐसी बातें मत करो···

[पलंग पर बैठ जाती हैं।]

मिसेज कपूर : सच ? बिलकुल सच ? (हँसने लगती हैं) बोलो, तुम यहाँ अपने घर कब आ रहे हो ?···हाँ, यहाँ कोई नहीं आया ? हाँ, जी, किसी का टेलीफोन भी नहीं आया ? एक्साइज-इनकम-टैक्स···इन्टेलिजेन्स···पुलिस···कोई भी नहीं···ओह,

आई एम सारी। मेरे मुंह से निकल गया।

[फोन के मुंह पर अपना हाथ रख देती हैं।]

मिसेज कपूर : हेलो ! मैं क्या करूं, मेरे मुंह से निकल गया। जाने भी दो। कौन इतनी रात को हमारा टेलीफोन सुनेगा ? एक्सचेंज···ओह, बेरहम लोग !···हेलो··· आज तुमने नहीं पी ?

[पलंग से नीचे उतरकर खड़ी हो जाती हैं।]

मिसेज कपूर : तो फिर तुम यहाँ आ जाओ न ! आज रात-भर के लिए आ जाओ। मुश्किल है···हेलो···हेलो ! मिस्टर कपूर···हेलो···ओह ! यह टेलीफोन क्यों कट गया ?

[कुर्सी पर बैठकर डायल करती हैं।]

मिसेज कपूर : हेलो, एक्सचेंज !···अजीब तमाशा है ! (**फिर डायल करती हैं**) इन्क्वायरी प्लीज !···जी, हाँ, जरा देखिए···'डबल फाइव जीरो टू सिक्स'···जी, ठीक है ? (**फिर डायल करती हैं**) हेलो ! कपूर ! ओह, मैं भी कहूँ, क्या हो गया ?···तो सुनो, क्या सोच रहे हो वहाँ होटल में पड़े-पड़े ?···ओह, वहाँ खर्च कर रहे हो ! इससे भला कितना खर्चा हो जाएगा ? होटल के पेपर पर सवा दो सौ रुपये रोज···और असल में ?···हेलो···सिर्फ ढाई हजार···तो, तो इससे क्या हो जाएगा ?···देखो, नाराज मत हो ! मैं सिर्फ एक बात पूछ रही हूँ !···ओ हो, मैं कितना खर्च करूं ? इस घर पर आखिर कितना खर्च हो सकता है ? रोमी और प्रिन्स देहरादून में ही पढ़ते हैं···हेलो···हाँ। प्रिन्स के बर्थ-डे पर और कितना खर्च किया जा सकता था ? रोशनी और सजावट पर तीस हजार। बैण्ड और शहनाई पर दस हजार। घर पर टी और डिनर पर कुल साढ़े दस हजार···और···हेलो ···मिस्टर कपूर···हेलो···हाँ, सुनो तो···हेलो···हाँ, सुनो तो···हेलो···मीना की बीमारी में हम लोग काफी खर्च कर सकते हैं···यह एक अच्छा रास्ता निकल आया !···हेलो···तुम्हें मेरी यह बात अच्छी नहीं लगी ?···मुझे पता है, तुम मीना को कितना चाहते हो !···तो मैं उसकी जगह बीमार हो जाऊं ? बोलो, फिर क्या चाहते हो तुम ? अच्छा···अच्छा···प्लीज, नाराज मत हो !···सुनो एक प्यारी-सी बात···

[मिसेज कपूर कुर्सी से उठकर खड़ी हो गयी हैं।]

मिसेज कपूर : मैंने एक उपाय सोचा है। बताऊं ? मगर, क्या टेलीफोन पर बताना ठीक होगा ?···तो बताऊँ···किसी विदेशी बेंक में···समझे न !···तो···तो···दूसरा उपाय···बताऊँ ? चलो, हम दोनों संसार घूम आएँ···सरकार नहीं जाने देगी ?··· पासपोर्ट···एक्सचेंज···वीसा··· (**हँसती हैं**) मैं समझती हूँ कि जिन तरीकों से ये सब मुश्किलें हल होती हैं, वे सब तरीके क्यों न अपनाए जाएँ···मैं बच्ची हूँ ? हेलो, मिस्टर कपूर, मैं नादान हूँ ? प्लीज !

[पलंग पर बैठती हैं।]

मिसेज कपूर : मीना को मैंने उसी के लिए यहाँ बुलाया था। वह बड़ी खर्चीली और ऊँची पसन्द वाली लड़की थी, लेकिन कुल पाँच महीने भी तो उसे यहाँ रहते हुए नहीं गुजरे और वह ऊब गयी। महँगी और कीमती चीजें खरीदने मे वह भागने लगी···क्या कहा ? वह मेरी वजह से आयी, मेरी वजह से उसकी तबियत यहाँ से खराब हुई ? सच, तुम बेरहम हो, कपूर !···नहीं, नहीं, नहीं ! मैंने यह कभी नहीं कहा। भगवान् जानता है, मैंने तुम दोनों पर कभी शुबहा नहीं किया···हेलो ···सुनो···यह क्या हो गया टेलीफोन में ? यह खट्खट् की आवाज कहाँ से आ रही है ? हेलो कपूर ! यह बीच-बीच में आवाज कहाँ से आ रही है ? हमारी बातें कोई सुन तो नहीं रहा है ?···हेलो···हम दोनों के बीच कोई आ तो नहीं गया है ? ···मेरा मतलब, टेलीफोन लाइन के बीच में···कितनी गन्दी बात है ! तुम कितनी सख्त बातें कह डालते हो ? जैसे तुम्हारी सारी मुसीबत मैं ही हूँ। फिर तुमने यह कैसे कहा कि हम दोनों के बीच में मीना आ गई···ऐसा शक मैंने तुम दोनों पर कब किया ? नहीं-नहीं, बेशक तुम्हें जवाब देना पड़ेगा···हेलो-हेलो ! नानसेन्स ···यह बीच में किसकी आवाज आने लगी ?···यह क्या बकवास है ! कोई कारेस्पोण्डेण्ट न्यूज भेज रहा है। यह सब कुछ कल के मार्निंग एडीशन में छपेगा। (हँसती हैं) चावल दो रुपये किलो, हरी सब्जी डेढ़ रुपये किलो···(हँसती हैं) सब चीजों के भाव बढ़ेंगे···मिस्टर कारेस्पोण्डेण्ट साहेब···(हँसती हैं) बेभाव कीमतें बढ़ेंगी। यू शट अप ! तुम मेरी लाइन में कहाँ से आ गए ? मैं बोलूंगी। यह लाइन मेरी है। एक्सचेंज···कम्पलेण्ट···

[पलंग पर लेट जाती हैं और उसी तरह टेलीफोन मुंह पर लगाए हैं। उठकर फोन खटखटाती हैं। फिर से बार-बार डायल करती हैं। फोन ठण्डा पड़ गया। मिसेज कपूर कुर्सी पर जैसे टूटकर गिर पड़ती हैं। दृश्य पर धीरे-धीरे अन्धकार छा जाता है। कुछ देर बाद जब फिर रोशनी लौटती है तो दृश्य में मिस्टर कपूर के होटल का कमरा दिखता है। पलंग पर उसी तरह सफेद बिछावन, बगल में आरामकुर्सी और टी-टेबुल। सिरहाने छोटी टेबुल पर फोन। टेबुल लैम्प। मिस्टर कपूर पलंग के सिरहाने से तकिये की टेक लगाए हुए लेटे हैं। टेलीफोन की घण्टी बजती है। वह अपना रुख दूसरी ओर बदल लेते हैं। फोन की घण्टी बज रही है। मिस्टर कपूर फोन को उठाकर नीचे रख देते हैं। फिर करवट बदलकर आँख मूंद लेते हैं। थोड़ी देर के बाद फोन से आवाज आती है। कपूर को फोन उठाना पड़ता है।]

कपूर : हेलो···मैं कपूर बोल रहा हूँ ! हाँ···बात यह है कि मैं जिन लोगों से मिलने के लिए यहाँ होटल में रुका हूँ, वे लोग अब तक यहाँ नहीं आए हैं। उन लोगों से बहुत मदद मिलने की उम्मीद है। कम से कम वे लोग कुछ ऐसा रास्ता ही बताएँगे कि···हेलो···हाँ···मैंने तुम्हारे मना करने के बावजूद 'रूबी नर्सिंग होम' को अभी

थोड़ी देर हुई टेलीफोन किया था। मीना को नींद की किसी स्पेशल दवा से कुछ नींद आ गयी है। पर डाक्टर का यह भी कहना है कि वह नींद में कभी-कभी चीख उठती है···हाँ, सीरियस। तुम कार लेकर इस समय 'नर्सिंग होम' नहीं जा सकतीं? सुबह जाओगी? ···और क्या तुम शहर के सारे डाक्टरों को एक मिनट में बुला सकती हो···पर उससे होगा क्या? मीना तो 'रूबी नर्सिंग होम' में पड़ी है। मैं चाहता था कि तुम वहीं जाकर शहर के सारे बड़े-बड़े डाक्टरों को बुला लेतीं ···हाँ, हाँ, सुनो, बीना! हेलो···हेलो!

[मिस्टर कपूर पलंग से उठकर खड़े-खड़े बातें करने लगते हैं।]

कपूर : हेलो···हेलो! बीना! हाँ, हाँ, मेरी बात तो सुनो! इसमें किसी का भी कसूर नहीं। मैं दिमाग लगाकर इण्डस्ट्री में आया। फिर मैं आराम करता रहा और यह दौलत वर्षा के पानी की तरह अपने-आप इकट्ठी होती रही। हेलो···हमें क्या पता था कि हम इस पानी में इस कदर फँस जाएँगे! हेलो···बीना···सुनो! ···हेलो···बीना! क्या बताऊँ, आदत बन गयी। बैठे-बैठे वह अपने-आप होता रहता है। शायद उसका यह नेचर ही है। मुझे नींद नहीं आ रही है, बीना! ··· नहीं-नहीं, मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता···हाँ, तुम भी मेरे पास नहीं आ सकतीं। हाँ-हाँ, तब तक नहीं, जब तक कि मैं कोई रास्ता न निकाल लूँ···ह्वाट? ···हाँ-हाँ, मैं यहीं बैठे क्या-क्या नहीं कर सकता? जिसको चाहूँ, मैं इसी समय यहाँ बुला सकता हूँ···मुझे पता है अपनी ताकत का? ···लेकिन···यही ताकत आज मेरे गले पड़ गयी है···मुझे लगता है कि किन्हीं भयानक घाटियों में मैं फँस गया हूँ···घाटियाँ सोने-चाँदी से भरी हैं, पर इनके बीच मुझे कोई शिखर नहीं दीख पड़ता। न कोई मैदान ही दिखाई देता है, जहाँ मैं एक खुली साँस ले सकूँ···बीना···मेरी यातना की कल्पना तुम नहीं कर सकतीं। तुम्हें कोई रहम नहीं है मुझ पर! तुम मीना को देखने 'रूबी नर्सिंग होम' में इस समय नहीं जा सकतीं···मैं जानता हूँ···चिल्लाओ नहीं, बीना, नहीं तो हमारी टेलीफोन-लाइन कट जाएगी···और हम एक-दूसरे से सच नहीं बोल पाएँगे···आज की रात हम दोनों शुक्र गुजार हों इस टेलीफोन के क्या?

[हँसने लगते हैं। हँसते-हँसते कमरे में नाच उठते हैं।]

कपूर : रोने लगीं, बीना! ···कितनी खुशकिस्मत हो! ···मैं तो रो भी नहीं सकता··· ठीक उसी तरह, जैसे मैं वह सब किसी के सामने प्रकट नहीं कर सकता···किसी को दे नहीं सकता···बता नहीं सकता···सड़क पर बिखेर नहीं सकता। (सहसा) येस, इट इज वेरी गुड आइडिया! मैं उसे सड़क पर बिखेर सकता हूँ···इसी रात में···ओह! पर मैं इस तरह फेंक नहीं सकता! आई काण्ट···आई काण्ट··· सिम्पली आई काण्ट···

[कुछ क्षणों तक फोन चुपचाप सुनते रहते हैं।]

कपूर : मेरा भी क्या कसूर है ? जिसमें हम फँस गए हैं, उसकी जिम्मेदारी हम पर नहीं है। जिम्मेदारी उस पर है, जिसने वह सब होने दिया···मुझे मीना की याद आ जाती है। तुमने इस घेरे में उस बेचारी को क्या बुला लिया ? ···क्या ? ···हेलो··· तुमने नहीं बुलाया था ? ह्वाट ? मैंने बुलाया था ? खैर, अब चाहे जो कहो, तुम···मैं सुबह होते ही 'रूबी नर्सिंग होम' जरूर जाऊँगा, लौटते समय स्पेशल पुलिस बेशक मुझे गिरफ्तार ही क्यों न कर ले···मुझे जाना है मीना के पास ! न जाने क्यों उसे याद कर मुझे ऐसा लग रहा है, जैसे यह टेलीफोन की लाइन उसकी भुजाएँ हों···जो रह-रहकर मेरे गले में झूल जाती हैं···हेलो, बीना ! मैं ये बातें न करूँ ! तुम्हें बेहद तकलीफ होती है न ? मुझे पता है···हाँ, सच्ची बात कहने और सुनने में ऐसी ही तकलीफ होती है ! ···पर कहना ही होगा। आखिर हम दोनों कब तक इस तरह झूठ बोलते रहेंगे ! इस घेरे को हमें तोड़ना ही होगा ! ···हेलो, बीना, तुम फिर रोने लगीं। नानसेन्स···सिली···

[धीरे-धीरे दृश्य अन्धकार में डूब जाता है। कपूर की 'हेलो, बीना···हेलो, बीना' की आवाज क्षण-भर के लिए उस अन्धकार में चमकती है। फिर शान्त। धीरे-धीरे फिर रोशनी लौटती है। दृश्य में मिसेज कपूर अपनी उसी कुर्सी पर फिर निढाल पड़ी दीख पड़ती हैं। सहसा फोन की घण्टी बजती है। मिसेज कपूर उठकर चुपचाप कमरे में टहलने लगती हैं। अन्त में उन्हें फोन उठाना ही पड़ता है।]

मिसेज कपूर : कपूर ! अब यह टेलीफोन बन्द करो। मैं अब और ज्यादा सह नहीं सकती ! ···मैं सोचती हूँ, तुम्हारे उस सबसे मुझे क्या मिला ? ···मैंने तुम्हें उतना खोया ही···नहीं, नहीं···बिल्कुल गलत। खोया हुआ फिर कभी वापस नहीं मिलता···यह ठीक है, तुमने अब सच बोलना शुरू कर दिया···पर मैं कभी सच नहीं बोल सकती, जैसे संन्यासी और अध्यापक सच नहीं बोल सकते ! ···क्या कहा ? मैं भी सच बोलूँ ? गैर-मुमकिन···फिर यह तुम्हारी दुनिया एक दिन भी नहीं चल सकती···औरत का सच बोलना उसका पागलपन समझा जाएगा ! औरत पर्दा है···और कुछ नहीं। हेलो···हेलो···फिर उसी कारेस्पोण्डेण्ट की आवाज आने लगी हमारी लाइन में। मुझे एक मिनट के लिए अपना फोन रख देना होगा···मुझे समाचार से नफरत है···

[टेलीफोन रख देती हैं। और औंधे मुँह पलंग पर जैसे गिर पड़ती हैं। टेलीफोन की घण्टी बजती रहती है। धीरे-धीरे दृश्य पर अँधेरा छा जाता है। जैसे ही प्रकाश वापस आता है, मिसेज कपूर प्रसन्न बदन, हाथ में गुलदस्ता लिए आती हैं और फूलदान में लगाने लगती हैं। तभी बाहर से कपूर का प्रवेश।]

मिसेज कपूर : ओह, तुम ! मैं कोई ख्वाब तो नहीं देख रही ! तुम इस कदर घबड़ाए क्यों हो ? बात क्या है ? बोलो···बोलो न !

कपूर : पुलिस मेरा पीछा कर रही है। मुझे छिपना होगा।

मिसेज कपूर : इस तरह छिपने से कोई फायदा नहीं···आखिर हुआ क्या और···

कपूर : मैं आत्महत्या की कोशिश में था, तभी···

मिसेज कपूर : आत्महत्या ! (**हँसती हैं**) ओह, तुम आत्महत्या की कोशिश कर रहे थे ··कितने चतुर हो···एक पत्थर से दो चिड़ियों का शिकार। (**हँसती हैं**) कहाँ से आ रहे हो ?

कपूर : तुम्हें हँसी छूट रही है ?

मिसेज कपूर : हाँ, इत्ते दिनों बाद। जब तुम इस घर को छोड़कर इत्ते दिनों होटलों में छिपे रहे हो, यह हँसी तभी मुझमें फूटी है।

कपूर : यह शान-शौकत, यह हँसी किसी भी क्षण धूल में मिल जाएगी। तुम्हें पता है···

मिसेज कपूर : मैं थूकती हूँ इस शान-शौकत पर, जहाँ हमें चोरों से भी बदतर जिन्दगी जीनी पड़ रही है। मैं सिर्फ तुम्हें चाहती थी···सिर्फ अपने उस पति को, जो साधारण साफ जिन्दगी बसर करने वाला हो।

कपूर : मैंने इत्ता सारा धन तुम्हारे लिए, इस घर-परिवार के लिए कमाया।

मिसेज कपूर : नहीं-नहीं, सिर्फ अपनी झूठी शान के लिए···रोब के लिए।

कपूर : तुमने मुझे मना क्यों नहीं किया ?

मिसेज कपूर : मैंने जब-जब मना किया, तुमने मुझे यह कहकर डाँटा—मैं नासमझ हूँ, बेवकूफ हूँ। और जब-जब तुम्हें समझाना चाहा, तुम इधर-उधर भागते रहे, छिपते रहे, कभी उसी दौलत की अँधेरी गुफा में, कभी होटलों में, कभी नशों में और कभी मेरे और अपने बीच एक लड़की को खड़ा कर···

कपूर : टेलीफोन पर मुझसे इतनी प्यार की बातें क्यों करती थीं ? मुझे घर बुलाने के लिए इतनी पागल क्यों थीं ? टेलीफोन पर हम लोग असली नहीं थे क्या ?

मिसेज कपूर : नहीं। वह नाटक था···महज धोखा···अभिनय···वह हमारी नकली बनावटी भाषा से जाहिर था···हम दोनों के बीच यह बनावट···यह धोखा जरूरी भी हो गया है, क्योंकि हम एक-दूसरे से इतनी नफरत करने लगे हैं।

कपूर : हर्गिज नहीं···मुझमें कोई नफरत नहीं।

मिसेज कपूर : मुझमें है···मैं सारी रात सो नहीं पाती। तुमसे टेलीफोन पर झूठी मक्कारी-भरी बातें करती हूँ···तुम रात-रात-भर इधर-उधर छिपे शराब पीते हो···सारे जमाने को धोखा देने की चिन्ता में रहते हो।

कपूर : बीना !

मिसेज कपूर : मैं अब वह बीना नहीं···जो फोन पर तुमसे झूठ बकवास कर रही थी··· मैं अब उसे तोड़कर बाहर निकल आयी हूँ···अब मैं एक ऐसे बिन्दु पर आ पहुँची हूँ, जहाँ मैं सब कुछ छोड़ दे सकती हूँ···समझे ?

कपूर : यह सब क्या बक रही हो, तुम ? हमारे लिए वह धन बहुत जरूरी था।

मिसेज कपूर : जरूरी था···ताकि एक दिन हम चोरों की तरह जीने को मजबूर हों··· ताकि तुम्हें आत्महत्या की कोशिश करनी पड़े।

कपूर : तुम मेरी पत्नी नहीं, दुश्मन हो।

मिसेज कपूर : तुम मेरे पति नहीं, दुश्मन हो। बोलो, तुमने मुझे क्या दिया? यही ना···काले धन की विष-भरी घाटी में मुझे कैदी बनाया। स्वयं इस कैदखाने की देहरी पर साँप की जिन्दगी बितानी शुरू की। हमारे सम्बन्ध पति-पत्नी के न होकर पागलों जैसे हो गए। यह क्यों? किसलिए?

कपूर : पुलिस यहाँ किसी वक्त आ सकती है!

मिसेज कपूर : अब तुम्हारा छिपना बेकार है।

कपूर : क्या बकती हो?

मिसेज कपूर : मैंने पुलिस को सब कुछ बता दिया है···सब कुछ कबूल कर लिया है।

कपूर : क्या?

मिसेज कपूर : वही सच्चाई, जिसने काले साँप की तरह हमारे बुनियादी सुख-शान्ति को निगल लिया है।

कपूर : क्या बकती हो?

मिसेज कपूर : मैंने सच्चाई को स्वीकार कर लिया है।

कपूर : कैसी सच्चाई?

मिसेज कपूर : मुझे मेरा वह पति चाहिए···केवल वह मेरा पति, जो इस काले धन की अँधेरी गुफा में खोने से पहले मेरा अपना था।

[बन्द दरवाजे पर दस्तक।]

कपूर : (भयभीत) पुलिस···पुलिस!···

मिसेज कपूर : नहीं, इनकम टैक्स की स्पेशल पुलिस! इसमें इस तरह घबड़ाने की क्या बात!···मैंने अपनी बहन मीना को भी सब कुछ बता दिया है। वह भी अब नार्मल हो गयी है। उसे भी एबनार्मल हमीं ने बनाया था।

कपूर : मैंने नहीं···तुमने···तुमने!···

मिसेज कपूर : तुम सच कहते हो···हाँ, मैंने उसे बनाया था···जैसे कि तुमने मुझे बनाया था···मैंने तुम्हें बनाया था!

[दरवाजे पर दस्तक की आवाज तेज होती जा रही है।]

कपूर : बीना!···

[मिसेज कपूर मुस्कराती हैं।]

कपूर : हमारी जिन्दगी खतरे में है।

मिसेज कपूर : नहीं, अब हम खतरे से बाहर हैं। सारी जिम्मेदारी मुझ पर है।

[कपूर देखते रह जाते हैं। मिसेज कपूर दरवाजा खोलने के लिए बढ़ती हैं।]

तुम चन्दन हम पानी

(नृत्य-नाटिका)

पात्र

रविदास
गंगा, नर्तकी
विदूषक
ब्राह्मणी
डाकू
राजा
रानी
रवि जैन
नलिनी
मिराजुद्दीन
असित चौधरी
बलवीर
अशोक
मधु

नर्तन द्वारा—आरती, संगीता, लक्ष्मी और शीला, शंभू,
महात्मा, नरेन्द्र, मुकेश, स्वीटी, कृष्णा गुप्ता

संगीत—वेद सेठी

नृत्य-निर्देशन—रवि जैन

पहला दृश्य

[गंगा घाट पर लोग पूजा-अर्चना कर रहे हैं।]

श्री गणेशाय नमः जयति गंगे विजयते

ॐ तिलकुण्डले नमः ॐ दक्षिणाये नमः

शूद्र : हरि गंगे हरि गंगे।

पुजारी : दक्षिणा दे दे चतुरंगे, वंदे बुधम् नित्यम् शंकर-रूपिणाम्, हे-हे दूर हट !

···शूद्र कहीं का ! हूँ-हूँ छू दिया !

शूद्र : छमा करना महाराज।

पंडित : ॐ मंगलम् भगवान विष्णुः।

मंगलम् गरुड़ध्वजः, मंगलम् पुण्डरीकाक्षम् दान दो दान, दान यहाँ रखो।

ॐ मंगलम् भगवान् विष्णुः।

श्री सत्यनारायण व्रतकथायां प्रथमोध्याय, दान दक्षिणेय नमः

पुजारी : प्रातःकाल गंग करिमज्जन
बैठे ही सदा संग ब्रज सज्जन

[ॐ हरि गंगे, गंगे।]

पंडित : हरि ॐ। चंडी रूपेण भारत खंडे, नाम बोलो।

शूद्र : रामाधार।

पंडित : पुत्र ?

शूद्र : चैतू।

पंडित : पित्र शान्ति पिण्ड परायते, एक शतग्राम भोजनाम्।

शूद्र : अच्छा महाराज, जैसा आप कह रहे हैं वैसा ही करूँगा।

पंडित : हरि गंगे, हरि गंगे ! दक्षिणा दे दे चतुरंगे, ॐ हरि गंगे···

[संगीत उभरता है।]

जै जै गंगे सरन तिहारी,
जै जै जै गंगे मंगलकारी,
जै जै कहत सकल सुर हरसत,
जै जै कलिमलहारी गंगे,

ब्यास रिषन शंकर देव,
दनुज मनुज हुसन सेव,
जै जै गंगे गर्व प्रहरी।
जै जै कलिमलहारी गंगे

[संगीत धीरे-धीरे विलीन होता है।]

दूसरा दृश्य

[संत रविदास बैठे जूता बना रहे हैं। तीन रैदास जन चमड़ा कर्म कर रहे हैं।]
[संगीत]

राम नाम नहीं हिरदै धरा, जैसे पसुआ तैसे नरा
पसुआ नर उद्यम कर खावे
पसुआ तो जंगल चरि आवै
पसुआ आवै पसुआ जाये
पसुआ चरै ओ पसुआ खाये।
राम नाम···

[संगीत बदलता है, लोग पूजा-स्नान को जा रहे हैं।]

चलो मन गंगा सुरसरि तीर
गंगा सुरसरि निर्मल पानी
सीतल होत सरीर,

[संगीत बदलता है। रविदास गा रहे हैं।]

राम नाम ध्याया नहीं भाई
जनम गया पसुआ की नाईं
राम नाम नहिं···

[संगीत बदलता है।]

चलो मन गंगा···

पहला पुरुष : अरे रविदास, चलो, गंगा नहाने !
दूसरा पुरुष : अरे आज पूरनमासी है।
तीसरा पुरुष : पूरनमासी का वासी है
और कासी की गंगा है।

रविदास : हरि गंगा, हरि गंगा, मनचंगा तो कठौती में गंगा।

तीनों रैदास जन : हरि गंगा हरि गंगा, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

पुजारी : छी-छी-छी ! जिस कठौती में चमड़ा भिगो रहा है उसे गंगा कह रहा है। चमार की जात, तेरी ये औकात !

पुजारिन : चलो जी चलो, कहीं इसकी छूत न लग जाए।

[विदूषक आता है।]

विदूषक : हटो-बचो, हटो-बचो। हाय, मैं अछूत का ही पूत हूँ।

पुजारी : अरे कौन है तू कुलच्छन पासा ?

पुजारिन : दूर हट सत्यानासी !

विदूषक : मैं बालक रैदासा,
जनम जनम का प्यासा
मैं बालक रैदासा,

पुजारी : अरे चल दूर हट !

पुजारिन : छोड़ रास्ता चमार की जात !

[रविदास गाते हैं।]

जो चमार तो भी मैं राम तुम्हारा
रे मन तू मति हारा
काया का धनु सबद मन मुठिया
सुषमन ताँत चढ़ाई
गगन मंडल में मनुआ बैठा
मेरे सतगुरु कला सिखाई

विदूषक : क्या दिन-रात वही काम-काम-काम।

रविदास : मेरा काम मेरा राम
मेरा राम मेरा काम।
अरे जो भी ये जूता पहनेगा, वही तो मेरा ठाकुर है, और जो ठाकुर है वही राम है रे।

विदूषक : चलो-चलो गंगा।

रविदास : मन चंगा तो कठौती में गंगा।

विदूषक : तो नहीं चलोगे, जब तक नहीं चलोगे, मुझे भी यहीं बैठे मिलोगे।

रविदास : अच्छा बाबा, चलता हूँ।

तीसरा दृश्य

[गंगा घाट, लोग गंगा तट पर दान-पूजा-पाठ कर रहे हैं।]

विदूषक : अरे भाई रविदास, तू भी कुछ दान कर दे गंगा माई को।
रविदास : चावल का एक दाना है, ले भाई, दे आ गंगा माई को।
विदूषक : चावल का एक दाना, ना-ना-ना-ना बाबा, तू अपने ही हाथों डाल।
मैं तो चला हेठी चाल।
रविदास : अ-रे-रे-रे सुनो तो, मैं रैंदास
ऐसे समय कौन जाने देगा मुझे माँ के पास।
विदूषक : अच्छा-अच्चा एक उपाय।
तेरा हाथ मेरा हाथ।
दोनों हाथ साथ-साथ ॥
गंगा मइया, लो सँभालो चावल का एक दाना। नमस्ते, मैं चला देखने कारनामा !

[गंगा प्रकट होती है।]

सब : गंगा मइया की जै !
जय माँ गंगे पदारविंदे
जय जयति गंगे कृपाकरम
जय जयति जननी, जै ताप खंडिनी, जै माँ गंगे,
मंगल मंगलम्।
गंगा : सुनो मेरे पुत्र रविदास, सुनो। आओ मेरे पास। ये रत्नजड़ित सोने का कंगन मेरा प्रसाद है।
पुजारी : रविदास, रविदास यहाँ नहीं है माँ।
सब : रविदास, रविदास यहाँ नहीं है माँ।
पुजारी : माँ, ये कंगन मैं रविदास को दे दूँगा।
विदूषक : हाँ माँ, निश्चिन्त रहो।
विदूषक: रविदास को धक्का मार पहले किया उधर,
पुजारी गंगा मइया से झूठ बोल रहा है इधर।
[गंगा अंतर्धान हो जाती है।]

चौथा दृश्य

[पुजारी-पुजारिन रास्ते पर जा रहे हैं।]

पुजारिन : अरे, इस कंगन का क्या करेगा वो रैदास।
न रुई न सूत न कपास ॥

पुजारी : ठीक कहती हो राम दुलारी।
तुम्हीं लो कंगन मेरी प्राण प्यारी॥
विदूषक : अरे कंगन में मेरा भी तो हिस्सा है ?
पुजारी : अबे कौन है तू ?
पुजारिन : तेरा क्या किस्सा है ?
विदूषक : अगर नहीं दिया तो कह दूंगा।
पुजारी : अबे चुप रह अगर-मगर।
पुजारिन : ऐ चलो अपनी डगर।

पाँचवाँ दृश्य

[डाकू और ठग आते हैं।

विदूषक : राम-राम।
डाकू-ठग : राम-राम।
विदूषक : ऊपर से राम-राम।
भीतर से कसाई का काम।
डाकू : जानता नहीं, मैं डाकू हूँ !
ठग : और मैं ठग हूँ !
विदूषक : तभी तो कहा राम-राम।
डाकू : (हँसता है) डर के मारे गिर गया।
ठग : धड़ाम।
विदूषक : ऐसा है भाई, ऐसा है।
पुजारी-पुजारिन के पास पैसा है।
वो इधर ही आ रहे हैं।
नहीं, नहीं, इधर ही जा रहे हैं।

[पुजारी-पुजारिन आते हैं।]

डाकू : ऐ री रामदुलारी, कहाँ चली ?
ठग : गंगा पुजारी कहाँ चला ?
पुजारी : हूँ।
डाकू : तेरी गठरी में है कंगना।
ठग : तेरे आँचअ में चंदना।
डाकू : क्या जोड़ी है !

पुजारी : चुप रह।
पुजारिन : छोड़ मेरा रास्ता।
डाकू : तुम्हीं से मेरा वास्ता।
ठग : इक भोजन इक नाश्ता।
अरे बहुत बड़े पहुँचे हुए ज्योतिषी हैं।
बहुत बड़े महात्मा,
मनोकामना पूरी कर खुशहाल कर दें।
भाग बदल दें,
मालामाल कर दें।
डाकू : बम बोला।
तेरे आँचल में इक कंगन का गोला।
पुजारिन : अरे ये तो सचमुच त्रिकालदर्शी है।
डाकू : आदमी को बना दूँ घोड़ा।
तेरे कंगन का लगा दूँ जोड़ा।
पुजारिन : हाय, अहो भाग !
पुजारी : खबरदार, दाल में है कुछ काला।
पुजारिन : चुप रहो जी, ये लो कंगन लगा दो इसका जोड़ा।
डाकू : वो खड़ा है घोड़ा, लगा दे इसका जोड़ा।
कर आँख बंद, मूंद आँख, देख···
जन्तर मन्तर भागा बन्दर
बन्दर भागा घर के अन्दर
अन्दर आवे अन्दर जाए, छू मंतर जोग कलंदर बम बम बोला···

[दोनों भाग जाते हैं।]

पुजारिन : (रोती है) हाय···हाय !
पुजारी : अरे क्या हुआ ?
हो गया ना सत्यानास !
पहले ही कहा था,
और कर आँख बंद।
विदूषक : जा रहा रविदास को देने,
जिसका माल उसी के हाथ।
पुजारी : ऐसा मत करो,
अरे पाँव पकड़ता हूँ।
जमीन पर नाक रगड़ता हूँ।
पुजारिन : हाथ जोड़ती हूँ, रविदास को मत बताना···
विदूषक : जा रहा हूँ।

पुजारी : कहाँ ?
विदूषक : स्वर्णकार के यहाँ ।
पुजारी : अरे, सुनो यार ।
विदूषक : मैं चला ।
पुजारी : अरे कहाँ ?
विदूषक : कोतवाल के पास ।
पुजारिन : हाय··· (**रोकती है ।**)
पुजारी : अच्छा-अच्छा करता हूँ कुछ उपाय, सुनो भाय !

[कान में कुछ कहता है ।]

विदूषक : नहीं-नहीं, नहीं-नहीं, नहीं-नहीं ।
पुजारी : (**कंगन छीन लेता है**) तो अन्तिम बात ।
या तो कंगन मैं लूँ या राजा को दे दूँ ।
बोल क्या कर दूँ ?
विदूषक : हाँ-हाँ, राजा को दे दे, ठीक है ।

[जाता है ।]

पुजारी : ये ले जाता तो सब डूब जाता ।
राजा के पास जाएगा तो मेरे पास भी कुछ आएगा ।
राजपुरोहित तो हो ही जाऊँगा ।

छठा दृश्य

[रविदास गा रहे हैं—]

अब कैसे छूटे, नाम रट लागी
प्रभु जी तुम चन्दन हम पानी, जाकी गंध अंग-अंग समानी ।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चाँद चकोरा ।
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती ।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोना मिले सुहागा ।
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा ।

विदूषक : रविदास, गंगा माई ने तुम्हें दिया रत्नजड़ित कंगन ।
रैदास जन : अच्छा भाई, अच्छा जी ।
विदूषक : कंगन ले लिया पुजारी ने ।

रैदास जन : अच्छा, पुजारी ने ?
विदूषक : अब कंगन देने जा रहा है पुजारी राजा को।
रैदास जन : ऐसा क्यों भाई, ऐसा क्यों ?
विदूषक : अरे चलो, छीन लें, वो रविदास का है।
रैदास जन : चलो-चलो।

[रविदास रोकते हैं।]

कंगना हरि में समाना
सब में हरि है, हरि में सब है, हरि अपनो जिन जाना
बाजी झूठ साँच बाजीगर, जाना मन पतिआना।
कह रैदास बिमल बिवेक सुख, सहज सरूप समाना।

सातवाँ दृश्य

[राजा का दरबार, नर्तकी नृत्य कर रही है।]

आज दिवस लेऊँ बलिहारा।
मेरे घर आया राम का प्यारा।
आँगन रंग भवन भयो पावन, हरिजन बैठे हरिजस गावन।
कथा कहे अरु अरथ बिचारें, आप तरे औरन को तारें।

राजा : वाह-वाह, ये किस का पद है !
विदूषक : संत रविदास का महाराज !
पुजारी : जय हो, महाराज की जय हो !
विदूषक : ये भेंट स्वीकार कीजिए महाराज !
पुजारी : चुप रह, दूर हो जा यहाँ से…।
महाराज, आपको ये कंगन सादर भेंट करने आया हूँ।
विदूषक : हूँ, दूसरे का माल कर दिया कमाल।
वाह-वाह पुजारी लाल, वाह-वाह पुजारी लाल।।
राजा : वाह, ऐसा कंगन तो कभी देखा नहीं।
पुजारी : हाथ कंगन को आरसी क्या महाराज !
राजा : वाह-वाह, धन्यवाद पुजारी, ये अमूल्य कंगन अपनी महारानी को भेंट करूँगा।

[ताली बजाता है।]

सुनो, महारानी को आदर सहित बुलाओ।

[रानी आती है।]

राजा : महारानी, ये लो ये अनुपम भेंट।
रानी : इसका जोड़ा महाराज ?
राजा : ये अकेला ही अद्वितीय है रानी।
रानी : जो अकेला है जिसका जोड़ा नहीं, वो निरर्थक है। इस कंगन का जोड़ा लगेगा, तभी पहनूँगी।
राजा : हाँ-हाँ, जोड़ा लग जायेगा।
रानी : ऊँ हूँ, जब तक इस कंगन का जोड़ा नहीं लगेगा, मैं तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगी।
पुजारी : मर गए, मर गए।
विदूषक : ओ मनई अब खुलेगी तेरी कलई।
राजा : जाओ इस कंगन का जोड़ा लाओ।

[आवाजें—इक कंगन का जोड़ा लगा दो···नहीं लग सकता।]

राजा : मान जा रानी, इस कंगन का जोड़ा असम्भव है।
रानी : फिर मेरा जीना भी असम्भव है।
राजा : पुजारी, सच-सच बता, ये कंगन का जोड़ा तुझे कहाँ से मिला तुझे ?
विदूषक : झूठ बोला तो सच-सच बता दूँगा, बोल भीतर का परदा तो खोल।
पुजारी : दुहाई धर्मावतार की दुहाई, ये कंगन गंगा मइया ने दिया।
राजा : किसे दिया ?
पुजारी : मैं गंगा घाट का पुजारी, मुझे दिया, मैंने लिया आपको दिया।
विदूषक : झूठ बोलता है महाराज, गंगामाई ने ये कंगन रविदास को दिया।
राजा : क्यों पुजारी ?
पुजारी : हाँ महाराज, मैंने सोचा, कहाँ वो रविदास और कहाँ ये कंगन !
विदूषक : इस कंगन का जोड़ा वही संत रविदास ही बना सकता है।
रानी : चलो, अभी रविदास के पास चलो।

आठवाँ दृश्य

[रविदास गा रहे हैं।]

देहु कलाली एक पियाला, ऐसा अवधू है मतवाला।
हे रे कलाली तैंने क्या किया, सिरका सा तै प्याला दिया।
चंद सूर दोऊ सनमुख होई, पीवे प्याला मरे न कोई।
सहज सुन्न में भाटी सखे, पावे रैदास गुरुमुख दखे।

[राजा-रानी सहित लोग आते हैं।]

पुजारी : अरे रविदास, देखो, राजा आए हैं अपनी प्रजा के साथ।

राजा : यह क्या आश्चर्य है, यह मैं क्या देख रहा हूँ, लोग कह रहे हैं तुम असम्भव को सम्भव करते हो, ऐसा कोई लक्षण तो मुझे नहीं दीखता। क्या देख रहे हो मेरे मुंह पे ?

[रविदास गाते हैं।]

रामा हो जगजीवन मोरा
तू न बिसारी, रामजन तोरा
संकट मोचपोच दिन राती, करम कठिन मोरी जाति कुजाती
कह रैदास कहुदेहु अलंबन, बेगि मिलो जनि करी विलम्बन

विदूषक : रविदास, राजा कुछ माँगने आए हैं।

रविदास : आज्ञा दो महाराज (**राजा कंगन देता है**) ये कंगन गंगा माई का है, वह इसका जोड़ा लगा सकती है।

राजा : चलो, गंगा जी के पास चलो।

रविदास : क्या काशी के घाट पर ही गंगा है ?

राजा : और कहाँ है गंगा ?

रविदास : यही है राजा तुम्हारा विश्वास ?

राजा : क्यों ?

रविदास : जहाँ है विश्वास वहीं है गंगा पास। गंगा मइया की जै।

[कंगन कठौती में डालता है। कंगन का जोड़ा बन जाता है।]

सब : रविदास की जै !

राजा : यह कैसे हुआ रविदास ? कठौती के इस गंदे पानी में गंगा।

[रविदास गाते हैं—]

जब मन चंगा तो कठौती में गंगा।
जो माने सोई पावै, जोई पावै सोई भावै।
कह रैदास खलास चमारा, जो पहि नगर सो मति हमारा।
भीतर बाहर सब नंगा। जब···

[रानी रविदास के चरणों में गिरती है।]

पुजारी : यह अधर्म है, रविदास के चरणों में महारानी, सत्यानास, सर्वनाश !

नौवाँ दृश्य

[गंगा घाट, राजा-रानी सहित लोग आरती लिए खड़े हैं। पुजारी सबकी थाली में दीपक जलाना चाहता है। दीपक नहीं जलते। गंगा प्रकट होती है।]

सब : गंगा मइया की जै !

गंगा : मेरा पुत्र रविदास कहाँ है ?

राजा : कहाँ है रविदास ?

रानी : मेरे गुरु रविदास ?

पुजारी : रविदास को गुरु मानना अधर्म है महारानी।

रानी : चुप रहो, सुनो गंगा माँ क्या कह रही है।

गंगा : मेरा पुत्र रविदास, रविदास तुम कहाँ हो !

रविदास : माँ कैसे आऊँ, तुम्हारे पास, न जाने कब से इन्होंने मेरा रास्ता रोक दिया, मुझे चलने नहीं दिया। केवल जलता रहा, जलता रहा, चर्म कर्म के बीच राम-राम रटता रहा। राम-राम रटता रहा।

[रविदास आगे बढ़ते हैं। सब रोकते हैं।]

रानी : हटो, मत रोको रास्ता, माँ पुकार रही है। लग जाएगी आग।

गंगा : जो जल में भस्म होने का है वही होता है—भस्म जो आस्था से टिका रह जाता है। उसी से होती है नवयुग की सृष्टि। आओ, मेरे पुत्र मेरे पास आओ।

[रविदास गाते हैं—]

माँ मैं कैसे आऊँ मोसे चला नहिं जाय।
पूजा कैसे चढ़ाऊँ फल और फूल न पाऊँ।
थन तर दूध जो बछरू जुठारी, पहुप भँवर जल मीन बिगारी।
मलयागिरि बेधिए भुजंगा, विष, अमृत दोऊ एक संगा।
रैदास कहे माँ सबद न पाऊँ।

[गंगा आगे आती है और रविदास को सबके दीपक जलाने का आदेश देती है।]
[सब गाते हैं।]

तुम चन्दन हम पानी···

बाहर का रास्ता

[रेडियो नाटक]

पात्र

दो स्त्री
दो पुरुष
मि० वर्मा
मिसेज आशा वर्मा
बेबी
सोना
मि० सिंह
खन्ना
तिवारी
रामू

[प्रारम्भिक संगीत के बाद—खुले नल से पानी का गिरना। थोड़ी देर बाद आवाजें।]

पहली स्त्री : अरे रे रे, यहाँ पानी कहाँ से भर गया?

दूसरी स्त्री : माई गॉड, सारा कारीडोर लबालब।

पहली स्त्री : अरे सुनते हो, यह देखो, अभी हमारे कमरे में पानी आने लगेगा। बाप रे बाप, इतना पानी!

पहला पुरुष : ओह, हमारा कमरा दूर है। दरवाजा बन्द कर लो।

दूसरा पुरुष : देखिए भाई साहब, पानी मेरे दरवाजे तक आ गया है। मेरा नौकर बाजार गया है।

पहला पुरुष : यह पानी आ किधर से रहा है?

दूसरा पुरुष : सामने से आ रहा लगता है।

पहली स्त्री : मैं कहूँ जी, इधर से पानी आ रहा है।

दूसरी स्त्री : हाँ, कोई नए अफसर आए हैं। कहाँ से आ जाते हैं।

पहली स्त्री : सुना है मियाँ-बीवी दोनों अफसर हैं।

पहला पुरुष : अरे! यह तो बाहर से ताला लगा हुआ है।

[पानी का गिरना।]

पहली स्त्री : बाप रे!

दूसरी स्त्री : पानी अब तक गिर रहा है।

पहली स्त्री : अब क्या होगा?

पहला पुरुष : फोन करो फोन।

दूसरी स्त्री : क्या फोन नम्बर है, किसे पता।

पहला पुरुष : मैं भी आज 'सिक लीव' पर हूँ वरना···।

दूसरा पुरुष : मेरा नौकर आ गया। अरे रामू! जल्दी आ। दौड़के देख, बचके। इनके दफ्तर का पता मालूम है?

रामू : वर्मा जी? जो अभी नए आए हैं?

दूसरा पुरुष : हाँ-हाँ।

[दस्तक]

पहला पुरुष : यह भी उल्लू है। देखता नहीं, बाहर से ताला लगा है।

रामू : भीतर उनकी लड़की है—पैर खराब है। (पुकारना) बेबी ! (दस्तक) ओ बेबी।

बेबी : (भीतर से) क्या है ?

रामू : तुम्हारे डैडी के आफिस का टेलीफोन नम्बर क्या है ?

बेबी : डैडी दफ्तर नहीं सनीमा देखने गए हैं।

रामू : ममी के दफ्तर का नम्बर ?

बेबी : रेलवे नम्बर है— तीन, सात दो। पी० एन० टी का नम्बर है चार, दो छः तीन, दो पाँच।

[संगीत का टुकड़ा।]

रामू : (फोन करना) हैलो ! मिसेज वर्मा हैं ? हलो ! मैं रामू बोल रहा हूँ। आपके फ्लैट के सामने वाले फ्लैट में सर्वेन्ट हूँ। जी हाँ, हलो ! हलो मेम साहब ! देखिए मेम साहब, आपके चौके का नलका खुला हुआ है। सारे कारीडोर में पानी भर गया है, और 9भता ही जा रहा है। जी हाँ, फौरन आइए···फौरन से पेश्तर, हाँ जी।

[संगीत]

रामू : लो आ रही हैं मैडम वर्मा।

मि० आशा वर्मा : ओ बाबा ! आई एम सो सॉरी। इतना पानी !

[ताले में चाभी लगाना। दरवाजा खोलना।]

बेबी : ममी, आपको तकलीफ हुई।

आशा : नहीं बेटी, तकलीफ तुम्हें बहुत हुई होगी।

[पानी का गिरना बन्द।]

आशा : सारा चौका भर गया। इधर नाली नहीं है क्या ? (टटोलना-खोजना) अरे बाहर की नाली इस कदर बन्द है ! कमाल है, पानी फिर किधर से बहेगा ? बाहर का रास्ता अगर बन्द है तो पानी तो पानी है। पानी अपना रास्ता आप ढूंढ़ लेगा। बाहर नहीं तो भीतर ही सही।

[बाल्टी उठाने-रखने की आवाज।]

रामू : मेम साहब ! मैं आपकी मदद कर दूं ?

आशा : रामू ? तुम्हीं ने मुझे फोन किया था ?

रामू : जी हाँ, साहब ! आप उस कमरे में चलिए। मैं सारा पानी निकाल दूंगा।

आशा : कैसे ?

रामू : आप फिकर मत कीजिए।

[पृष्ठभूमि में पानी भरने, बाल्टी में डालने, बाहर फेंकने, निकालने की आवाजें।]

आशा : अच्छा किया बेटी, तूने उठने-चलने की कोशिश नहीं की।

बेबी : ममी ! मैं मजबूर सब देखती रही। पानी का गिरना कारीडोर में जाना। ममी जी ! पापा नल बन्द करना ही भूल गए।

आशा : तुमने कहा नहीं ?

बेबी : पापा को बहुत जल्दी थी। मुझे पता ही नहीं चला वह कब बाहर से ताला बन्द करके चले गए। ममी, तुम ठीक साढ़े नौ बजे गयी। पापा साढ़े दस बजे गए।

आशा : क्यों ? तुम्हारे पापा आज दफ्तर नहीं गए ?

बेबी : मैटनी शो देखने गए पापा।

[पृष्ठभूमि का प्रभाव उभरकर दूर आता है।]

बेबी : ममी ! क्या देख रही हो ?

आशा : कुछ नहीं माई डियर !

बेबी : ममी, मुझे उठा कर खिड़की पर बैठा दो। प्लीज़ ममी !

[ममी उसे सँभाल कर खिड़की पर बैठाती है।]

आशा : देखो, क्या देखना चाहती हो ?

बेबी : आह ! बाहर कितना सुन्दर ! **(सहसा)** ममी ! ममी ! वह देखो एक पेड़ पर दूसरा पेड़ उग आया है। वह क्या है ममी, आम का पेड़ ?

आशा : हाँ, बेटी आम के पेड़ में से नीम का पेड़ उग आया है। **(सहसा)** अच्छा बेटी, अब तुम नीचे उतरो। शाबाश ! अब मैं दफ्तर जाऊँगी। ठीक है न !

बेबी : ममी ! आस-पास की औरतें बहुत बड़बड़ा रही थीं, जैसे हमने जानबूझ कर नल खोला था। सब लड़ रही थीं।

आशा : सबकी मजबूरियाँ हैं बेटी। अरे रामू ! ओ रामू !

रामू : **(दूर से बाल्टी की आवाज के साथ)** हो गया मेम साहब !

आशा : **(पास जाकर)** शाबाश ! इतनी मेहनत की। ये लो पाँच रुपए। बाहर कारीडोर का भी पानी निकाल देना, हाँ। बहुत अच्छे लड़के हो।

रामू : जी, जी, आपके पास नौकर नहीं है ?

आशा : हम नौकर नहीं रख सकते रामू।

रामू : अरे, ऐसी भी क्या बात, साहब और आप दोनों इतने बड़े...। मेरा एक भाई है मेम साहब...।

आशा : फिर बात करेंगे, हाँ। और देखो, बाहर पानी साफ कर दो।

रामू : आप बेफिकर हो जाइए मेम साहब।

[बाल्टी की आवाज। रामू का कुछ गुनगुनाते हुए जाना।]

आशा : अच्छा बेबी डार्लिंग। अब दफ्तर भागना है।

बेबी : साढ़े बारह बजे हैं। अब तो लंच टाइम होगा। अब डेढ़ बजे जाना घर से ममी !

आशा : नहीं बेटे, बड़ी जिम्मेदारी है। एक नए अफसर आए हैं—मिस्टर टी० एम० सिंह। बड़े मेहनती, ईमानदार और बहुत सख्त आदमी हैं—वेरी स्ट्रिक्ट। वह जो मिसेज सोना आंटी हैं न, उन्हें एक दिन सिंह साहब ने बहुत डाँटा। अच्छा बेटी, ये लो अपने खिलौने। यह बाजा। यहाँ राइटर। यह तुम्हारा लंच। पानी। किताब। मैगजीन। ठीक है न?

[इस बीच खिलौने की आवाजें।]

बेबी : ममी, तुम्हें कोई नहीं डाँटेगा न दफ्तर में?

आशा : अच्छा डियर, ठीक छः बजे आ आऊँगी?

बेबी : छः बजे नहीं, छः बजे तक।

[हँसी। चुम्मा लेना, देना। बाहर से ताला बन्द होना। बेबी के खिलौनों से संगीत।

फेड इन—दफ्तर का माहौल। पुरुषों की हँसी।]

सोना : मैं इस सिंह के बच्चे को दिखा दूँगी। यह अपने आप को समझता क्या है? बहुत आए-गए। हुअँ।

तिवारी : सुनिए, मिसेज सोना जी। धीरे, धीरे—जरा सब्र से काम लीजिए।

सोना : यह देखिए तिवारी जी। यह नोट भेजा है मेरे पास। यह वार्निंग नहीं तो क्या है? मैं पिछले एक हफ्ते से पैंतालीस मिनट लेट आ रही हूँ दफ्तर? इसका दिमाग खराब है।

[कई लोगों की दबी हुई हँसी।]

तिवारी : खन्ना साहब, अब पता चलेगा मैडम को।

खन्ना : अरे तिवारी जी, सोना नाम है उसका। सोना किस भाव बिक जाए, किसे क्या पता। अब दफ्तर भी तो एक बाजार है।

[दबी हुई हँसी।]

तिवारी : बड़ी तेज है—कभी चित कभी पट।

खन्ना : अच्छा, आपको इतना ज्ञान है!

[खन्ना की अकेली हँसी।]

तिवारी : आप समझिए खन्ना साहब। गौर से देखिए, सोना कभी मास्क पहने होती है, कभी उसके बगैर।

खन्ना : अच्छा जी, तो बिजली की वोल्टेज जैसा फ्लक्चुएशन चलता रहता है।

[दोनों की गहरी हँसी।]

तिवारी : ओरिजिनल लेडी है, मिसेज सोना—घर में अपने शौहर को मुर्गा नहीं, मुर्गी बनाकर रखती है।

[बजर की आवाज।]

खन्ना : साहब के पास पेशी हो रही है—'ओरिजिनल लेडी' की।

तिवारी : देखो सोना किस भाव में उछलता-गिरता है।

खन्ना : अरे भाई तिवारी जी, आप तो साहब के कमरे में बेरोक-टोक आने-जाने वाले हैं—जरा अभी किसी फाइल के बहाने घुसकर बाजार भाव तो देख लीजिए।

[कट संगीत।]

सोना : नमस्ते सर !

सिंह : मिसेज सोना, मेरा नोट मिल गया न ? जवाब आज शाम पाँच बजे तक मिल जाना चाहिए। दैट्स आल, जाइए।

[सोना का रोने लगना।]

सिंह : बन्द कीजिए, 'स्टाप इट'। देखिए यह नाटक यहाँ नहीं चलेगा।

सोना : मेरे हसबेंड पिछले दस दिनों से काफी बीमार हैं। सुबह उन्हें हास्पिटल ले जाना पड़ता है। मुझे माफ कर दीजिए, सर ! आइन्दा से ऐसी गलती नहीं होगी।

सिंह : अभी बाहर आप धमकी दे रही थीं कि इस सिंह के बच्चे को दिखा दूँगी—यह अपने आपको समझा क्या है !

सोना : हाय राम ! मैंने ऐसा कब कहा सर ? मेरी जुबान में आग लग जाए···मेरा इकलौता बेटा मर जाए।

सिंह : बस, बस, चुप रहिए। जाइए यहाँ से।

[सोना का फिर रोना।]

सिंह : देखिए, मेहरबानी करके बाहर जाइए। यह तिरिया चरित्र मैं खूब जानता हूँ। इन चोंचलों से काम नहीं चलेगा यहाँ। आप यहाँ सर्विस करने आयी हैं तो काम करना पड़ेगा। यहाँ रोना-धोना नहीं चलता।

सोना : सर, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी—मेरे घर चलिए। आपके चरनों की धूल···।

सिंह : इसकी कोई जरूरत नहीं। यह दफ्तर है। आप सब नौकर हैं।

सोना : (नाज से) सर, आप मुझसे नाराज नहीं हैं न ?

सिंह : (पुकारना) तिवारी ! मिस्टर खन्ना !

सोना : अच्छा सर। (जाती है।)

तिवारी : यस सर।

सिंह : तिवारी जी ! खन्ना साहब !

खन्ना : जी साहब।

सिंह : नयी दिल्ली स्टेशन रिजर्वेशन काउंटर ग्यारह-बारह-तेरह पर कल किसकी ड्यूटी थी ?

खन्ना : चार्ट ले आता हूँ। (जाता है।)

[बजर की आवाज।]

खन्ना : साहब के पास पेशी हो रही है—'ओरिजिनल लेडी' की।

तिवारी : देखो सोना किस भाव में उछलता-गिरता है।

खन्ना : अरे भाई तिवारी जी, आप तो साहब के कमरे में बेरोक-टोक आने-जाने वाले हैं—जरा अभी किसी फाइल के बहाने घुसकर बाजार भाव तो देख लीजिए।

[कट संगीत।]

सोना : नमस्ते सर !

सिंह : मिसेज सोना, मेरा नोट मिल गया न ? जवाब आज शाम पाँच बजे तक मिल जाना चाहिए। दैट्स आल, जाइए।

[सोना का रोने लगना।]

सिंह : बन्द कीजिए, 'स्टाप इट'। देखिए यह नाटक यहाँ नहीं चलेगा।

सोना : मेरे हसबैंड पिछले दस दिनों से काफी बीमार हैं। सुबह उन्हें हास्पिटल ले जाना पड़ता है। मुझे माफ कर दीजिए, सर ! आइन्दा से ऐसी गल्ती नहीं होगी।

सिंह : अभी बाहर आप धमकी दे रही थीं कि इस सिंह के बच्चे को दिखा दूँगी—यह अपने आपको समझा क्या है !

सोना : हाय राम ! मैंने ऐसा कब कहा सर ? मेरी जुबान में आग लग जाए···मेरा इकलौता बेटा मर जाए।

सिंह : बस, बस, चुप रहिए। जाइए यहाँ से।

[सोना का फिर रोना।]

सिंह : देखिए, मेहरबानी करके बाहर जाइए। यह तिरिया चरित्र मैं खूब जानता हूँ। इन चोंचलों से काम नहीं चलेगा यहाँ। आप यहाँ सर्विस करने आयी हैं तो काम करना पड़ेगा। यहाँ रोना-धोना नहीं चलता।

सोना : सर, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी—मेरे घर चलिए। आपके चरनों की धूल···।

सिंह : इसकी कोई जरूरत नहीं। यह दफ्तर है। आप सब नौकर हैं।

सोना : (नाज से) सर, आप मुझसे नाराज नहीं हैं न ?

सिंह : (पुकारना) तिवारी ! मिस्टर खन्ना !

सोना : अच्छा सर। (जाती है।)

तिवारी : यस सर।

सिंह : तिवारी जी ! खन्ना साहब !

खन्ना : जी साहब।

सिंह : नयी दिल्ली स्टेशन रिजर्वेशन काउंटर ग्यारह-बारह-तेरह पर कल किसकी ड्यूटी थी ?

खन्ना : चार्ट ले आता हूँ। (जाता है।)

सिंह : तिवारी जी,
से। शिकायत
दोनों तरफ की
होती है—
तीन दिन के

[तिवारी

तिवारी : जी सर,

सिंह : जैसे अब
और बिल्कुल
ईमानदार

तिवारी : श्रीमती

सिंह : क्या ड्यूटी

तिवारी : रिजर्वे

सिंह : टेलीफोन

[तिवारी

खन्ना : सर,

जाने वाले

सिंह : तिवारी जी, यह देखिए ऊपर से कागज आया है—रेलवे बोर्ड एम० आर० सेल से। शिकायत यह है कि इलाहाबाद से कानपुर तक सुबह छः बजे से दस बजे तक दोनों तरफ की सारी ट्रेनों में बेटिकट यात्री सफर करते हैं। बेइन्तहा 'चेन पुलिंग' होती है—वैक्यूम पाइप खोलकर गाड़ियाँ रोकी जाती हैं। इसे चैक करना है और तीन दिन के भीतर रिपोर्ट देनी है।

[तिवारी बीच में सर्वे करते रहेंगे।]

तिवारी : जी सर, हो जाएगा।

सिंह : जैसे अब तक होता रहा है, वैसे ही हो जाएगा—कागजी कार्यवाही। यह बताइए और बिल्कुल सही-सही बताइए—हमारे इस रेवेन्यू सैक्सन में सबसे ज्यादा ईमानदार आफिसर कौन है ?

तिवारी : श्रीमती आशा वर्मा।

सिंह : क्या ड्यूटी है ?

तिवारी : रिजर्वेशन इंसपेक्टर है।

सिंह : टेलीफोन मिलाओ।

[तिवारी टेलीफोन मिलाता है।]

खन्ना : सर, काउंटर नं० ग्यारह पर मिसेज रीता गुलाटी, बारह पर मिस लता शर्मा, तेरह पर मिसेज सूद···।

सिंह : पूरा चार्ट मुझे दिखाइए।

खन्ना : पूरा चार्ट अभी नहीं आया है। तीसरे दिन आता है।

सिंह : फोन मिलाओ स्टेशन सुपरिन्टेंडेंट को।

[फोन मिलाने का प्रभाव।]

खन्ना : जी, जी माफ कीजिएगा सर। पूरा चार्ट मिल नहीं रहा है।

सिंह : क्या ? इस कदर झूठ बोलते हो ? उससे रेल चलेगी ? रेल चलती है ठोस मजबूत फौलाद की पटरी पर।

तिवारी : मिसेज वर्मा का फोन इंगेज है, सर।

सिंह : पी० एन० टी० का फोन मिलाओ।

[तिवारी फोन मिलाता है।]

तिवारी : मिल गया सर ! मिसेज आशा वर्मा, साहब से बात कीजिए।

सिंह : बोलो फौरन आ जाएँ। (विराम) मिस्टर खन्ना, आइन्दा ऐसी गल्ती नहीं। रेलगाड़ी का मामला है—जरा सी भी असावधानी हुई नहीं कि दुर्घटना··· एक्सीडेंट। चाहे रेलगाड़ी हो, चाहे रेल का दफ्तर।

[कट संगीत]

आशा : सर, मैं आ सकती हूँ ? मिसेज आशा वर्मा।

सिंह : नमस्ते, आशा जी। देखिए, इस बीच मैंने आपके बारे में सारे 'पार्टीकुलर्स' मँगा लिए हैं। आपके घर में आपकी 'इनवैलिड' लड़की है। आपको एक जिम्मेदारी का काम सौंपना चाहता हूँ।

आशा : यस, सर !

सिंह : आपको अभी चल देना है—पूरा स्टाफ साथ होगा। रेलवे पुलिस मजिस्ट्रेट—आप टिकट चेकिंग इंचार्ज होंगी। ये लीजिए कागजात। जाइए तैयारी कीजिए।

आशा : यस, सर !

सिंह : क्या इसके बारे में पूरी रिपोर्ट भी दे सकती हैं ?

आशा : जी हाँ, बिल्कुल।

सिंह : थैंक्यू !

[रेलवे स्टेशन का प्रभाव। रेलों का आना-जाना। फिर फेड आउट।]

बेबी : डैडी ! डैडी ! आप सुनते क्यों नहीं ?

वर्मा : क्या है ?

बेबी : जाइए, आप डाँटते हैं।

वर्मा : खाना खा लो।

बेबी : ममी कब आएँगे ?

वर्मा : कह दिया न, मेरा दिमाग मत चाट। चुपचाप खाना खाकर सो जा, नहीं तो···।

बेबी : नहीं तो क्या ? आप मुझे मारेंगे ? ममी नहीं हैं तो मुझे बोलने भी नहीं देंगे ?

वर्मा : चुप रह।

बेबी : चुप रह ! जैसे ममी चुप रह जाती हैं—मेरी इतनी अच्छी ममी। आप झूठ बोलते हैं पापा। कह के जाते हैं दफ्तर की, पहुँच जाते हैं पिक्चर हाल—सनीमा। मेरी ममी बेटिकट सफर करने वाले मुसाफिरों को पकड़ने गयी हैं। एक दिन ममी, आपको भी पकड़ लेंगी, हाँ।

वर्मा : मैं अभी बाहर से ताला बन्द करके चला जाऊँगा, हाँ।

बेबी : जैसे ममी को धमकाते हो, वैसे मैं डरने वाली नहीं, हाँ। जाओ, मैं खाना नहीं खाती।

वर्मा : चाहे खाओ चाहे भाड़ में जाओ। बदतमीज !

बेबी : (रोती हुई) मुझे भी गाली दो न, जैसे ममी को गालियाँ बकते हो ! आने दो ममी को, शिकायत करूँगी। शराब पीकर घर आते हैं। ममी की तनखाह पर लाट साहबी करते हैं।

वर्मा : (गुस्से में) चुप रहती है कि नहीं ?

बेबी : नहीं, नहीं, नहीं।

वर्मा : जैसे तेरे हाथ-पैर टूटे हैं, तेरा मुँह भी तोड़ दूँगा। (चाँटा मारना) ले रो। मर।

बेबी : मारो। और मारो। अब मैं नहीं रोऊँगी। नहीं रोऊँगी। जैसे अब ममी नहीं रोतीं।

[दूर ट्रेन की सीटी। ट्रेन छूटने की आवाज। संगीत का टुकड़ा।]

तिवारी : क्या कमाल किया है मिसेज आशा वर्मा ने। सिंह साहब इतनी तारीफ कर रहे थे।···आनेस्टी, इंटेग्रिटी, कैरेक्टर···।

खन्ना : आनेस्टी, इंटेग्रिटी, करैक्टर···उसी को खाएँ-चबाएँ मिसेज वर्मा। घर में एक नौकर तक नहीं रख सकतीं। अरे आया ही रख लेतीं लड़की इनवेलिड है तो।

तिवारी : यह बात तो है—यह स्पेशल चैकिंग का इंचार्ज अगर कोई और होता तो हजारों की कमाई करता, हाँ।

खन्ना : पूरा चैकिंग स्टाफ मिसेज वर्मा को कोस रहा था। किसी की कमाई नहीं हुई।

तिवारी : लो, ओरिजनल लेडी आ रही है।

सोना : सुनिए तिवारी जी ! खन्ना साहब !

तिवारी : क्या है ?

खन्ना : सोना जी, आप सानन्द हैं न ?

सोना : क्या हर वक्त हिन्दी बोलते रहते हो ? अरे सिंह साहब के बारे में कुछ सोचा ?

तिवारी : चारों ओर मिसेज आशा वर्मा की तारीफ हो रही है, बस !

सोना : ओहो, दैट इज पास्ट टेंस।

तिवारी : जी यह प्रेजेन्ट टेंस।

खन्ना : प्रेजेन्ट कान्टीन्यूयस टेंस।

[विराम।]

सोना : आप लोगों को अपना कोई सैल्फ रिस्पैक्ट नहीं ? सिंह साहब अपने आप को समझते क्या हैं ?

तिवारी : सोना जी, दीवारों के भी कान होते हैं···याद है न ?

सोना : कोई बात नहीं। मैं किसी से डरती हूँ क्या ?

तिवारी : देखिए, हमें तो डर है।

सोना : आप लोग बुजदिल हैं, नहीं तो मैं इस सिंह के बच्चे का वह हाल करती जो डिसूजा का किया था।

तिवारी : कृपा कर हमें अपना काम करने दीजिए।

खन्ना : प्लीज़ ! हमें माफ कीजिए।

सोना : ठीक है, इस बार मैं कोई और रास्ता चुनूंगी। सिंह साहब ने एक औरत की इतनी तारीफ की, एक की इतनी इन्सल्ट ! देखूंगी···देख लूंगी। बिल्ली को जब बाहर का रास्ता नहीं मिलता तो जख्मी होकर वह रास्ता बना लेती है।

[चेंज ओवर। दस्तक।]

वर्मा : कौन है ?

सोना : मैं हूँ मिसेज सोना···रेलवे हेडक्वार्टर। आप ही वर्मा जी हैं ?

बेबी : आप कौन हैं ?

सोना : ओह ! यही वह बेबी है। स्वीट बेबी···चाकलेट ले आई हूँ आपके लिए।

बेबी : नो, थैंक्यू, मैं चाकलेट नहीं खाती।

वर्मा : बेबी, चुप।

[इस बीच बेबी खिलौना बजाती खेलती रहेगी।]

सोना : आपकी मिसेज अभी तक नहीं आईं।

वर्मा : क्या पिएँगी ? ठंडा या गर्म ? इधर आ जाइए।

सोना : (हँसना) आप सिर्फ ठंडा या गर्म ही पीते हैं ? (हँसना।)

वर्मा : कहाँ रहती हैं ?

सोना : यह लीजिए मेरा कार्ड ! सँभाल कर रखिए ! मिसेज की नजर न पड़े।

वर्मा : आपके हसबेंड क्या करते हैं ?

सोना : उनकी फिकर मत कीजिए। (हँसना) बस, मुझे फोन कर दीजिए। आपको किसी तरह से भी निराशा नहीं करूँगी।

[दोनों की हँसी।]

आशा : हेलो, बेटी !

बेबी : ओह, मम्मी !

[वर्मा-सोना की हँसी।]

आशा : कौन है ?

बेबी : कोई मिसेज सोना आई हैं।

सोना : नमस्ते मिसेज वर्मा। सोचा, इसी बहाने आपके घर आकर आपको मुबारकबाद दूँ। कमाल है, मुबारक हो।

आशा : कैसा मुबारकबाद ?

सोना : पूरे हेडक्वार्टर में आपकी तारीफ है। लोग बताते हैं इलाहाबाद-कानपुर के बीच ऐसी डब्लू० टी० चेकिंग आज तक नहीं हुई।

आशा : वह तो मेरी ड्यूटी थी।

सोना : सिंह साहब आपकी इतनी तारीफ कर रहे थे कि वाह।

आशा : क्षमा कीजिए, मुझे अब चौके में जाना है।

सोना : आपसे एक रिक्वेस्ट है।

आशा : कोई दफ्तर की बात है ?

सोना : जी।

आशा : तो दफ्तर की बात दफ्तर में···माफ कीजिए।

सोना : ऐसा है, मिस्टर सिंह मुझसे खामखा नाराज हैं।

आशा : मुझे बेबी के लिए खाना तैयार करना है।

सोना : मिस्टर सिंह को मेरे 'फेवर' में कर दीजिए।

आशा : यह आप क्या कह रही हैं ?

सोना : आपकी बात पर उन्हें यकीन है।

आशा : यह सब मेरा काम नहीं।

सोना : आदमी ही आदमी के काम आता है।

आशा : मैं आदमी नहीं औरत हूँ।

सोना : मैं सोना हूँ।

आशा : आपका मतलब क्या है?

सोना : मिस्टर वर्मा, जरा कुछ जरूरी 'कान्फीडेंशियल' बात करनी है।

वर्मा : जरूर कीजिए।

[खिलौनों की आवाजें।]

बेबी : ममी ! तुम कहाँ हो?

वर्मा : क्या शोर मचाती है।

[खिलौना पटक देती है।]

सोना : मिसेज वर्मा, अगर तुम मेरी मदद नहीं करोगी तो मजबूर होकर कोई और रास्ता निकलना होगा मुझे। मिस्टर सिंह के साथ तुम्हें जोड़ कर दोनों की वह बदनामी करूँगी कि···।

आशा : कीजिए, जाइए कीजिए। जिसे काम-धाम नहीं करना है वह कुछ तो करेगा।

सोना : अगर इसमें कामयाब नहीं हुई, तो सिंह के बच्चे को दिखा दूँगी कि उसने अपने कमरे में मेरे साथ···

आशा : छी-छी-छी ! आह ! भीतर से 'इनवैलिड' स्त्री क्या होती है। मेरी बेटी शरीर से हैंडीकैप, मजबूर है। मिसेज सोना, तुम भीतर से, अन्तःकरण से बीमार हो। आह ! स्त्री की यह मजबूरी···बैठो सोना, चाय पीकर जाना।

[बेबी ममी-ममी पुकार रही है।]

वर्मा : सोना, चलो, तुम्हारे घर चलें।

सोना : मेरा कोई घर नहीं है।

वर्मा : अच्छा चलिए, बाहर घूम आएँ ! (**सहसा**) अरे, आप रो रही हैं। आशा ने कुछ कहा मैं उसकी ऐसी की तैसी कर दूँगा।

[आशा का आना।]

आशा : यह लीजिए गर्म-गर्म चाय। अपनी बेटी को भी ले आऊँ। (**बेबी को उठाना**) उठो बेटी, उठो। हाँ, यहाँ बैठो। आंटी से मिलो। (**बेबी का आना**) अरे, आप रो रही हैं?

[सोना रो रही है।]

बेबी : आंटी, क्यों रो रही हैं ममी?

आशा : सिर में दर्द हो रहा है बेटी।

बेबी : सिरदर्द में कोई रोता है? भीतर कहीं दर्द हो रहा है।

सोना : (भरे रुँधे कंठ से) घर से बाहर निकलना, बाहर से दफ्तर तक पहुँचने का रास्ता, चारों तरफ से बन्द है। हर कदम पर 'ब्लाक' है।

आशा : लीजिए, चाय पीजिए।

[ट्रेन की सीटी।]

आशा : चलने से ही रास्ता खुलेगा।

बेबी : ममी, मैं कैसे चलूँगी ?

आशा : चलना सिर्फ पैरों से ही थोड़े होता है ? गाड़ी है, ट्रेन है, जहाज है, दिमाग और दिल है।

[बेबी की हँसी। किचन में पानी का गिरना।]

बेबी : ममी, देखो, पापा फिर नल खोल कर चले गए।

आशा : मैं घर में हूँ बेटी। सोना जी, अजीब बात है, इन फ्लैटों के किचन में नालियाँ बन्द हैं। पानी निकलने का रास्ता जहाँ बन्द है, पानी तो बहेगा ही, इधर नहीं तो उधर।

[बेबी की खिलखिलाहट।]

सोना : (भरे कंठ से) समझिए, मैं भी आपकी एक बेटी हूँ।

[रो पड़ती है। पानी का गिरना। संगीत।]

सीता रामायन

पात्र

भाट
भाटिन
राम
जानकी
स्त्रियाँ
पुरुष

[खुला मंच। पृष्ठभूमि से संगीत उठता है और पुरुषों का एक दल, माँ भवानी का पूजागीत गाता हुआ मंच पर आता है।]

भवानी माई आय बिराजों अँगना
माता मेरी आय बिराजो अँगना।
कौन चढ़ाए ध्वजा नारियल
भवानी माई आय बिराजो अँगना
राजा चढ़ाए ध्वजा नारियल
रानी चढ़ाए चोलना
माता मेरी आय बिराजो अँगना।

[लोग गाते हुए चले जाते हैं। भाट-भाटिन आते हैं—जो विदूषक भी हैं और सूत्रधार भी और विभिन्न दृश्यों की भूमिकाएँ भी अदा कर देते हैं। ठीक जैसे लोक नाटकों में होता है।

भाट : हे रे भाटिन !

भाटिन : का रे भाट !

भाट : एक बात कहूँ।

भाटिन : भाट रे भाट !

भाट : हाँ री भाटिन !

भाटिन : एक बात बोलूँ ?

भाट : एक नहीं रे, सौ। बोल जितनी बोलना हो। नहीं तो···!

भाटिन : सौ नहीं बस एक। बस, तू हामी भर ले।

भाट : बात बोल न। हाँ तो है ही। नहीं तो···!

भाटिन : नहीं, तू हाँ कर ले पहले। पुरुष जाति का कोई भरोसा नहीं। भर तिरबाचा।

भाट : ले, करी—हाँ-हाँ-हाँ। तीन तिरबाचा। अब बोल क्या कहती है, नहीं तो···

भाटिन : बुरा तो नहीं मानेगा ?

भाट : कितनी बार कहलाएगी। दे तो दो-तीन तिरबाचा नहीं तो···!

भाटिन : तुम पुरुषों ने भवानी माई की पूजा की। माता का गीत गाया। माँ कू प्रसाद चढ़ाया।

भाट : हाँ-हाँ, पर बात क्या है ? नहीं तो···बोल बात का भई ?

भाटिन . पुरुष लोग माँ की पूजा तो करते हैं, पर यह नहीं समझते माँ है क्या ?

भाट : तू बता माँ क्या है ?

भाटिन : माँ तो एक स्त्री है। और ये पुरूष लोग स्त्री को ही नहीं समझते हैं।

भाट : क्यों नहीं समझते, हाँ नहीं तो···!

भाटिन : स्त्री को तो ये लोग मारते हैं। धक्का देते हैं। अपमान करते हैं। उसे घर से निकालते हैं। और माई के मंदिर में आकर माँ-माँ करते हैं। भेड़-बकरियों की तरह।

भाट : ऐसा ?

भाटिन : हाँ ऐसा।

भाट : ले एक पैसा।

भाटिन : पैसा रख ताखे पर। मुझको रख माथे पर···

[उसी समय स्त्रियों का एक दल माँ की पूजा में गीत गाता आता है]

देवी मनाय घरे आइ गयी अपने।
माता मनाय घरे आइ गयी अपने॥
सोने की थाली में ज्योना परोसे
देवी जिवाए घरे आइ गयी अपने।
झझरे ठोहुआ गंगाजल पानी
देवी धुहाय घरे आइ गयी अपने।
फूला हजारी की सेजा लगायो
माता सुलाय घरे आइ गयी अपने।

[स्त्रियाँ गाती हुई चली जाती हैं।]

भाट : भाटिन रे भाटिन !

भाटिन : का है रे भाट ?

भाट : एक बात कहीं, बुरा तो नाहीं मनबू, हाँ।

भाटिन : हाँ-हाँ, बात का है ?

भाट : एक बात बोल दूँ ?

भाटिन : एक नहीं, हजार बात बोल।

भाट : पहले तीन तिरबाचा ले, तू मेरी बात का बुरा नहीं मानेगी, हाँ नहीं तो···!

भाटिन : हाँ-हाँ, लेती हूँ तीन तिरबाचा। पर बात क्या है ?

भाट : एक बात।

भाटिन : अरे कुछ बोलेगा भी।

भाट : तुम्हारी स्त्री जाति ने अभी दुर्गा भवानी, जगत जननी माँ की पूजा की। माता का गीत गाया (**नकल करता है**) 'देवी मनाय घरे आइ गयी अपने'। देखा न जाना सुना नहीं सपने। कौन है माता ? औ कौन है देवी। जानें न बूझें औ खावें जलेबी।

[भाटिन भाट को धक्का मारती है]

भाटिन : यही चला था बात बनाने ?

भाट : सुन ना, बात ही तो बता रहा था—मार दिया पिट् से। मैं भी मार दूँ सिट् से ? हाँ नहीं तो…!

भाटिन : अच्छा-अच्छा, बात बता मेरे मुन्ने भाट।

भाट : सुन मेरी प्यारी भाटिन ! माता की पूजा स्त्रियाँ करती हैं। और माँ क्या है ?

भाटिन : वही स्त्री।

भाट : पर ये बात स्त्रियाँ क्यों नहीं समझतीं कि वही माँ हैं। वही शक्ति हैं। वही दुर्गा हैं। वही लक्ष्मी हैं। वही अन्नपूर्णा हैं। वही सरस्वती हैं…।

भाटिन : क्योंकि यह बात पुरुष नहीं समझता।

भाट : क्योंकि ये बात स्त्री नहीं समझती।

[झगड़ा बढ़ता है।]

भाटिन : पुरुष नहीं समझता।

भाट : स्त्री नहीं समझती।

भाटिन : दोनों नहीं समझते।

भाट : यही तो बात है। कैसी मुलाकात है। एक है नर, दूसरी नारी। दोनों देते खुलकर गारी।

भाटिन : इसमें है स्त्री की लाचारी।

भाट : बेचारी।

भाटिन : झगड़ा खतम करो।

भाट : तो कोई खेल शुरू करो।

भाटिन : हाँ-हाँ, स्त्री का खेल। जो माँ है। जगत-जननी है। शक्ति है।

भाट : पुरुष का खेल क्यों नहीं ? चारों ओर वही स्त्री-स्त्री, नाक में दम कर दिया इन स्त्रियों ने। हवें, स्त्री का ऐसा कोई खेल नहीं ओ यहाँ खेला जाए। जैसा हम सोचते हैं, जैसा हम चाहते हैं ! हाँ नहीं तो…!

भाटिन : हाँ क्यों नहीं। रामायण में माता जानकी का खेल।

भाट : धत ! मात जानकी का खेल। जैसे तुम मेरी पत्नी ! मतलब जैसे मैं तुम्हारा पति, वैसे सीता राम की पत्नी। मतलब राम सीता का पति इसमें खेल क्या है।

भाटिन : यही तो खेल है।

भाट : तो दिखा खेल।

भाटिन : भाग तो नहीं जाएगा माँ का रूप देखकर ?

भाट : पुरुष नहीं जानता।

भाटिन : पर पुरुष स्त्री के माँ सरूप को बनवास देता है। माँ की अग्नि परीक्षा लेता है। उसकी लक्ष्मी को पहचान नहीं पाता। उसकी सरस्वती को समझ नहीं पाता। तभी तो अयोध्या उजड़ जाती है। लंका में आग लगती है। सीता बेटी को धरती माँ बुला लेती है।

भाट : बस बस बस। सारी कहानी बता देगी, तो खेल क्या करेगी ?

[पृष्ठभूमि में संगीत उठता है। मंच पर अँधेरा हो जाता है। जैसे ही प्रकाश लौटता है, हम देखते हैं स्त्री-पुरुष का समूह एक जगह घिरा हुआ है।]

भाट : अतिसय देखी धर्म के ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी।
भाटिन : सकल धर्म देखई विपरीता। कहि न सकई राक्षस भयभीता।
भाट : धेनु रूप धरि हृदय विचारी। गयी तहाँ जहाँ सुरमुनि झारी।
भाटिन : सुर मुनि गंधर्वा मिलिकर सर्वांग विरंचि के लोका
संग गोतनधारी भूमि विचारी परम सकल भय सोका
ब्रहता सब आस मन अनुमाना मोर कहूँ न बसाई
जो करि तें दासी सो अविनासी हमरेउ तोर सहाई।
भाट : धरनि धरहि मन धीर कह विरंचि हरि पद सुमिरु
जानत जन की पीर प्रभु भंजहि दारुन बिपति।

[स्त्री-पुरुष धरती माता की पूजा करते हुए संगीत के साथ नृत्य करते हैं।]

मइया महारानी सदा वरदानी
हरि पर तोर अँचरना हो रामा।
तोहरी गोदिया माँ खेत खरिहान हो रामा।
नदी का पानी लहर-लहर मइया
लेत लहरिया हो रामा।
भाती जब बरखा माँ लेहु मोरी मइया
पाँच पंच मिलि लेत बलइया
लह लह लह क्यों कबहुँ न हरक्यो
अनधन पूरन कियो कल्याणी मइया महारानी।

[नाचते-गाते हुए लोग फिर घिरकर एक जगह खड़े हो जाते हैं और उनके बीच में जैसे पृथ्वी के भीतर से सीता शक्ति का उदय होता है।]

[सीता को देखकर सब हर्षित होते हैं।

पुरुष : सीता माता की जै।
स्त्रियाँ : शक्ति भवानी की जै।

[समूह गान]

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रिय कंता
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानई माता।
जय जयति भवानी जै कल्याणी लक्ष्मी सुरसति माता॥

[सब गाते-नाचते हुए चले जाते हैं।]

भाट : स्वयं पवित्रता की मूर्ति तुलसीदासजी ने माता-भाव के कारण सीता के सौन्दर्य का वर्णन प्राकृत स्त्री के रूप में नहीं किया।

भाटिन : राम ब्रह्म के पुरुष अवतार थे। उन्हें पता था कि जानकी शक्ति-स्वरूपा हैं।

भाट : तभी तुलसीदास ने कहा कि सीता इतनी सुन्दर हैं कि तीनों लोक की किसी नारी से उनकी तुलना नहीं की जा सकती।

सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहि परतहौं बिदेह कुमारी।।
उपमा सकल मोहिं लघु लागी। प्राकृत नारि अंग अनुरागी।।

भाटिन : सिर्फ राम को यह पता था कि सीता की आदर्श मूर्ति के निर्माण में ब्रह्मा ने अपना सारा कौशल खर्च कर डाला।

जनु बिरंचि सब निज निपुनाई। बिरचि विश्व कहँ प्रगति देखाई।।
सुंदरता कहु सुंदर करई। छवि गृह दीप शिखा जनु बरई।।

भाट : ऐसी आदि माँ का विवाह आदि पुरुष राम से हुआ।

भाटिन : राम जानकी को ब्याह कर जब अयोध्या चले तो ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, नारद सब मगन हो गए।

भाट : हाय क्या जोड़ी है ब्रह्म और शक्ति की। पुरुष और प्रकृति की।

[स्त्री-पुरुष फिर गाते-नाचते हुए आते हैं—]

बानी विधि गौरी हर सेसहूँ गनेस कहीं
सही भरी लोमस भुसुंडि बहुवारिणी।
चारिदस भुअन निहारि नर-नारि सब
नारद सों परदा न नारद सो पारिखो।
तिन्ह कहीं जग में जगमगति जोरी एक
दूजी को कहैया औ सुनैया चढ़ा बारिखो।
रमा रमरिमन सुजान हनुमान कही
सीय सी न तीय न पुरुष राम सारिखो।

[सब नाचते-गाते हुए चले जाते हैं।]

भाटिन : पर जानकी को लोग समझ कहाँ पाए? लोगों ने बस इतना ही सोचा—राम एक राजा हैं और सीता उनकी रानी हैं।

भाट : कैकयी को डर लग गया कि अयोध्या का सारा राजसिंहासन राम के हाथ चला जाएगा। राम बनेंगे राजा, सीता बनेंगी अयोध्या की महारानी।

भाटिन : सबने शक्ति माँ जानकी को अपने अज्ञान और स्वार्थ के कारण इतने सीमित रूप में देखा!

भाट : जाकी रही भावना जैसी।

भाटिन : जगत मातु देखा तिन तैसी।

भाट : कैकयी ने दिया राम को बनवास ।

भाटिन : फिर माता सीता चलीं उनके पास ।

भाट : यहीं से फिर राम को अपनी लीला शुरू करनी पड़ी ।

भाटिन : लोग मातु जानकी को सिर्फ राम की धर्मपत्नी मान रहे थे ।

भाट : सो राम जानकी को अपने साथ जंगल जाने से रोकने लगे ।

भाटिन : और जानकी को पतिव्रत धर्म का उपदेश देने लगे ।

राम : आपन मोर नीक जौं चहहू । बचनु हमार मानि गृह रहहू ।।
आयसु मोर सासु सेवकाई । सब विधि भामिनि भवन भलाई ।।
एहि ते अधि धरमु नहिं दूजा । सादर सासु ससुर पद पूजा ।।
जब जब मातु करिहिं सुधि मोरी । होइहिं प्रेम विकल मति मोरी ।।
तब तब तुम्ह कहि कथा पुरानी । सुंदरि समुझाएहु मृदु बानी ।।
कहउँ सुभाय सपथ सत मोही । सुमुखि मातु हि राखऊँ तोही ।।
जौं हठ करहु प्रेम बस बामा । तौ तुम्ह दुखु पाउब परिनामा ।।
काननु कठिन भयंकरू भारी । घोर घामु हिम बारि बयारी ।।

सीता : मैं पुनि समुझि दीखि मन माहीं । पिय बियोग सम दुखु जग नाहीं ।।
जहँ लगि नाथ नेह अरू नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते ।।
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू । पति बिहीन सबु सोक समाजू ।।
भोग-रोग सम भूषन भारू । जम जातना सरिस संसारू ।।
प्राननाथ तुम्ह बिनु जय माहीं । मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं ।।
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी । तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी ।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें । सरद बिमल विधु वदनु निहारें ।।

[राम, सीता और लक्ष्मण बनगमन करते हैं । एक किनारे स्त्रियाँ गाती हुई दिखती हैं—]

कहँवई से माता आई, कहाँ तुहँ आव्यु,
माता कहँवई परी हैं भुलानि कहाँ भुलानि कहाँ तोरा नैहर ।
परबत से माता आई अयोध्या के जइहैं,
माता कटाँवा में परी है भुलानि जनकपुर नैहर ।
अरे अरे नग्र के मलिया बेगेह चलि आवौ,
माली बिचै-बिचै बगिया लगावौ, सितलि मइया बिरमैं ।
अरे अरे नग्न के कहरा बेगेहे चलि आवहु,
कहरा बिच बिच कलसा भरावहू सितलि मइया जल पिएँ ।

[स्त्रियाँ चली जाती हैं]

भाट : बनवास-जीवन में सीता माँ का अन्नपूर्णा स्वरूप प्रकट होता है ।

भाटिन : अमृत के समान कंदमूल-फलों का भोजन बनाकर जानकी राम और लक्ष्मण को खिलातीं ।

भाट : पंचवटी में जानकी ने अपनी पर्णकुटी के आसपास फल-फूल और अन्न की बगिया लगायी। अपने परिश्रम से अन्नपूर्णा माँ जानकी अन्न पैदा करतीं। अपने पति और देवर का ही भोजन नहीं देतीं, वरन जंगल के भूखे कोल-भील समाज को भी अन्न-फल-फूल की प्रसाद बाँटतीं।

भाटिन : परिश्रम और उद्योग से जंगल में भी अन्न की खेती हो सकती है—ऐसा संदेश अन्नपूर्णा जानकी ने आदिवासियों को दिया।

भाट : देवता, ऋषि, मुनि सोचते, सीता भी साक्षात लक्ष्मी और अन्नपूर्णा हैं। इनके साथ होने से राम-लक्ष्मण का चौदह वर्ष का बनवास एक पल के समान हो जाएगा।

भाटिन : चित्रकूट से राम-सीता और लक्ष्मण अत्रि ऋषि के आश्रम पर गए।

भाट : अत्रि की पत्नी अनसूया को देखकर जानकी गद्‌गद हो गयीं। अनसूया के मन में बड़ा सुख उपजा। उन्होंने आशीष देकर सीताजी को पास बैठा लिया।

[सीता और अनसूया दृश्य में आती हैं। सीता को अनसूया पतिव्रत धर्म बताने लगती हैं]

अनसूया : धीरज धर्म मित्र अरु नारी। आपत काल परिखिअहिं चारी॥
वृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना॥
ऐसेहु पति कर किए अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना॥
एकई धर्म एक व्रत नेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा॥
जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं। वेद पुरान संत सब कहहीं॥
उत्तम के अस बस मन माहीं। सपनेहूँ आन पुरुष जग नाहीं॥
मध्यम परपति देखई कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसें॥
धर्म विचारि समुझी कुल रहई। सो निकिष्ट त्रिय श्रुति अस कहई॥
बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई॥
पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कल्प सत परई॥
सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी॥
बिनु श्रम नारि परम गति लहई। पतिव्रत धर्म छाँड़ि छल गहई॥
पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होइ पाई तरुनाई॥

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहई।
जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय॥

[जानकी-अनसूया का प्रस्थान]

भाट : अनसूया के आश्रम से सीता राम के साथ फिर आगे बढ़ीं।
भाटिन : और सीता माँ पंचवटी पहुँचीं। वहाँ फिर अपना आश्रम बनाया पर्णकुटीर।
भाट : फल-फूल और अन्न की बगिया लगायी अन्नपूर्णा, लक्ष्मी जानकी ने।
भाटिन : पंचवटी में राम ने खरदूषण आदि तमाम राक्षसों को नष्ट किया।

भाट : सूर्पणखा अपमानित होकर जानकी के सामने से भागी।

भाटिन : और लंका में, रावण के दरबार में खलबली मच गई कि अनन्त शक्ति स्वरूप जानकी के साथ राम सारे राक्षसों का नाश करता चला आ रहा है।

भाट : रावण ने अपनी सभी राक्षसी और दैवी शक्ति के साथ राम को नष्ट करने का संकल्प लिया।

भाटिन : और रावण ने लक्ष्य बनाया उसी जानकी माता को।

भाट : तभी राम ने एक उपाय किया। असली शक्ति स्वरूप सीता को अग्नि में छुपा दिया। और माया की सीता जगत के सामने आ गई।

भाटिन : एक बात बोलूं भाट, बुरा तो नहीं मानेगा ?

भाट : एक बात नहीं, हजार बात बोल।

भाटिन : भाट रे भाट !

भाट : अरे कुछ बोलेगी भी।

भाटिन : तीन तिरवाचा दे, बुरा नहीं मानेगा।

भाट : क्यों बार-बार तिरवाचा लेती है। औरत की जात को मर्द पर जरा भी विश्वास नहीं। हाँ नहीं तो···

भाटिन : हट, स्त्री को हमेशा हम लोगों ने अबला समझ रखा है।

भाट : अरे बकवास करती रहेगी या आगे का खेल भी होने देगी !

भाटिन : अरे तब तो खेल ही खेल है। जब असली शक्ति स्वरूप माता जानकी को अग्नि में पठाया तभी तो राम आधे रह गए।

भाट : एक मायामृग के पीछे दौड़े।

भाटिन : जानकी को धोखा देकर रावण उन्हें लंकापुरी ले गया।

भाट : उधर हनुमान लंका में उड़कर लंकापुरी को जला गया।

भाटिन : रावण को उसकी पत्नी मंदोदरी ने समझाना शुरू किया।

[रावण और मंदोदरी का प्रवेश]

मंदोदरी : कंत करष हरि सब परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू॥
समुझत जासू दूत कइ करनी। स्त्रवहिं गर्भ रजनीचर धरनी॥
तासू नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कंत जो चहहु भलाई॥
तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा सम आई॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें। हित न तुम्हार संभु अज कीन्हे॥

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।
जब लगी ग्रसत न तब लगि जनतु करहु तजि टेक॥

[रावण हँसत हुआ जाने लगता है। मंदोदरी रावण की बाँह पकड़कर फिर रोकती है।]

रावण : जौं आवइ मर्कट कटकाई। जिअहिं बिचारे निसिचर खाई॥
कंपहि लोकप जाकीं त्रासा। तासु नारि सभीत बड़ि हासा॥

[रावण हंसता हुआ जाने लगता है। मंदोदरी रावण की बांह पकड़कर फिर कहती है—]

मंदोदरी : कंत समुझि मन तजहू कुमतिही। सोह न समर तुम्हहि रघुपतिही॥
रामानुज लघु रेख खचाई। सोउ नहीं नाघेहू असि मनुसाई॥
पिय तेम्ह ताहि जितव संग्रामा। जाके दूत केर यह कामा॥
कौतुक सिंधु नाघि तव लंका। आयउ कपि केहरी असंका॥
रखवारे हति बिपिन उजारा। देखत तोहि अच्छ तेहिं मारा॥
जारि सकल पुर कीन्हेसि छारा। कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा॥
अब पति मृषा गाल बजि निरऊ। मोर कहा कछु हृदयँ विचारहु॥
पति रघुपतिहि नृपति जनि मानुहु। अग जग नाथ अतुल बल जानहु॥
बान प्रताप जान मारीचा। तासु कहा नहीं मानेहि नीचा॥
जनक सभां अगनित भूपाला। रहे तुम्हउ बल अतुल बिसाला॥
भंजि धनुप जानकी बिआही। तब संग्राम जितेहु किन ताही॥
सुरपति सुत जानई बल थोरा। राखा जिअत आँखि गहि फोरा॥

बधि बिराध खर दूषनहि लीला हत्यो कबंध।
बालि एक सर मारयो तेहि जानहु दसकंध॥

जेहिं जलनाथ बँधायऊ हेला। उतरे प्रभु दल सहित सुबेला॥
कारूनीक दिनकर कुल केतू। दूत पठायउ तब हित हेतू॥
सभा माझ जेहिं तब बल मथा। करि बरूथ महुँ मृगपति जथा॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके। रन बाँकुरे बीर अति बाँके॥
तेहि कहँ पिय पुनि नर कहहू। मुधा मान ममता मद बहहू॥
अहह कंत कृत राम विरोधा। काल बिबस मन उपज न बोधा॥
कालदंड गहि काहु न मारा। हरइ धर्म बल बुद्धि बिचारा॥
निकट का जेहि आवत साँई। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाईं॥

दुइ सुत मरे दहेउ पुर अजहुँ पूर पिय देहु।
कृपासिंधु रघुनाथ भजि नाथ बिमल जसु लेहु॥

[रावण और मंदोदरी का प्रस्थान]

भाट : स्त्री की शक्ति और मर्यादा न समझ पाने वाले रावण को मारकर राम ने फिर जानकी को प्राप्त किया।

भाटिन : राम ने फिर सीता की अग्नि परीक्षा ली।

भाट : नहीं रे नहीं। राम ने जिस असली सीता को अग्नि में छिपा रखा था, उसी असली सीता को फिर अग्नि से बाहर निकाला।

भाटिन : पर इस सत्य को लोग कहाँ समझ पाए ।

भाट : अयोध्या के लोगों ने सीता को उसी अंधविश्वासी नजर से देखा ।

भाटिन : मूर्ख धोबी के कहने से राम को सीता को बनवास देना पड़ा ।

[सीता अकेली बनवास के लिए जा रही हैं । गाँव की स्त्रियाँ एक किनारे खड़ी होकर गाती हैं—]

कहँवे से देवी निसरीं त कहँवा का जइहैं ।
कहँवे परिउहैं भुलाइ कुसल के जानिउ ।
पुरवे से देवी निसरीं त पुछवँ का जइहैं ।
बिचठैयाँ परीहैं भुलाय कुसल कह जइहैं ।
जो मैं जनतेउँ भवानी माई, यहि बाटे अउतिउँ ।
माता अचरन खोरिया बुहरतेउँ वहि बाटे अउतिउँ ।
बटिया माँ निमियाँ लगउतेउँ बहें जूहे अउतिउँ ।
जो बटिया माँ सगरा खनउतेउँ हमइया लेत अउतिउँ ।
बगिया माँ मलिया बसउतउँ हरवा लै चढ़उतेउँ ।
बगिया माँ अहिरा बसउतेउँ दहेड़िया चढ़उतेउँ ।
बगिया माँ पंडित बसउतेउँ हिंडोलवा झुलउतेउँ ।
बगिया माँ पंडित बसउतेउँ मैंहांमिया करउतेउँ ।

[स्त्रियाँ गाती हुई चली जाती हैं । प्रकाश बुझता है । जैसे ही प्रकाश फिर आता है—जानकी बैठी हैं और लव-कुश दो बालक सामने खड़े हैं । सीता का जननी स्वरूप प्रकट है । स्त्री-पुरुष समवेत स्वर में गाते हैं—]

बालक सीय के बिहरत मुदित मन दोउ भाइ ।
नाम लव-कुस राम-सिय अनुहरति सुंदरताइ ।।
देत मुनि मुनि-सिसु खेलौना, ते लै धरत दुराइ ।
खेल खेलत नृप-सिसुन्ह के बालबृंद बोलाइ ।।
भूप-भूषन-बसन-बाहन, राज-साज सजाइ ।
बरम-चरम, कृपान-सर, धनु-तून लेत बनाई ।।
दुखी सिय पिय बिरह तुलसी, सुखी सुत सुख पाइ ।
आँच पय उफनात सींचत सलिल ज्यौं सकुचाइ ।।

[स्त्री-पुरुषों से सीता कहती हैं—]

सीता : मैं हूँ वह आरती हाय आराध्य न जिसने पाया
मैं जलती ही रही किन्तु तुम सबने कब अपनाया
मैं हूँ कल्याणी, लक्ष्मी, सरस्वती, अन्नपूर्णा
पर किसने कब जाना मुझे रहा सब सूना-सूना ।

पति पद रज मैं सदा किन्तु अब धूलमयी आँधी हूँ
एक शक्ति हूँ जननी बसुधा की पर
शतशत नारी संकोचों में बाँधी हूँ।

लव-कुश मेरे ही नहीं पूरी मानवता की नई सुबह हैं। ये दो नन्हे फूल भविष्य-कानन के हैं।

जो कुछ मैंने सहा, किया वह राज्य देहधारी ने
निष्कासन तुम सबसे पाया सीता सुकुमारी ने।

[राम का प्रवेश]

राम : सुनो, सुनो, सीता ! विश्वास करो, मैं एक क्षण भी नहीं भूला कि तुम आदि शक्ति हो; सरस्वती, लक्ष्मी, अन्नपूर्णा हो तुम। तुम्हारे जननी स्वरूप के प्रमाण हैं ये मेरे दोनों पुत्र।

सीता : पर मेरा मूल स्वरूप किसने कब जाना ?

राम : मैं जाना। तुम शक्ति थी तभी तो मैं मर्यादाव्रती था।

सीता : एक बार ही मूर्ति-प्रतिष्ठा मंदिर में होती है।
एक सीप में एक बार ही आती शुभ मोती है।

राम : नहीं-नहीं, तुम ही जगत जननी सीता,
निष्कासित वैदेही मुझसे दूर हुई सुकुमारी,
किन्तु हृदय से दूर गई कब सीता जनक दुलारी !

सीता : मत कहो मुझे जगत जननी अब।
मुझे बनाया तुम सबने माया सुवर्ण की प्रतिमा
अबला कहा तुम सबने
मैं निष्काषित वैदेही
अपनी माँ पृथिवी में अंतर्धान होती हूँ
इस स्वप्न के साथ
एक दिन वह नया मनुष्य, नया कृषक
नव मानव मुझे
संपूर्ण शक्ति रूप में
पाएगा जननी कल्याणी
दुर्गा, सरस्वती सब एक मुझ में।

[सीता को घेरकर सभी स्त्री-पुरुष खड़े हो जाते हैं। सीता पृथ्वी में अंतर्धान होती हैं।]

राम : सीता की शक्ति स्वरूप नारी महिमा युग-युग खड़ी रहेगी।
सर्ग प्रलय तक जग में नारी नर से बड़ी रहेगी॥

सीता का स्त्री चरित्र इस जग की पुण्यमयी गीता है।
इस भूतल पर वहाँ-वहाँ मैं जहाँ-जहाँ सीता है।।

[सभी समवेत स्वर में गाते हैं—]

जय जय जग जननि देवी सुर नर मुनि असुर सेवि
मुक्ति मुक्तिदायिनी भय हरणि कलिका।
मंगल मुद सिद्धि सदी पर्वशर्वरीश वदनि
ताप तिमिर तरुण तरणि किरण मालिका।
जय जय जय जय जननि अनेक रूप नामिनी
समस्त लोक स्वामिनी प्रणत पालिका।

[पर्दा गिरता है।]

गुरु गोविन्दसिंह-रचित

चंडी दी वार

[पर आधारित नृत्य नाट्य]

पात्र

चण्डी
भगौती (भगवती)
दुर्गा
नारद
महिखासुर (महिषासुर)
सुंभ-निसुंभ
इन्द्र
धूम्रलोचन
चंड-मुंड
रक्तबीज
देवतागण
राक्षसगण
देवस्त्रियाँ

पहला दृश्य

[प्रारंभिक संगीत उठता है, जिसमें मिले हुए हैं ये शब्द—'वार श्री भगउती जी की···' संगीत, फिर शब्द—'ओंकार वाह गुरु जी की फतह'। संगीत फैलने के साथ साइक्लोर्मा पर गुरु गोविन्दसिंह का चित्र उभरता है। स्वर—प्रस्तुत है श्री गुरु गोविन्दसिंह-रचित 'चंडी दी वार' पर आधारित एक नृत्य नाट्य संगीत। साइक्लोर्मा गहरा नीला।]

गायन

प्रथम भगौती सिमर के गुरु नानक लइ धिआइ।
फिर अंगद गुरु ते अमरदास रामदास होईं सहाइ॥
अरजन हरिगोविन्द नो सिमरौ श्री हरिराइ।
श्री हरि किशन ध्याईए जिसु डिठे सभि दुखि जाइ॥
तेगबहादुर सिमरिए घर नऊ निधि आवे धाय।
सभ थाँई होइ सहाय॥

[साइक्लोर्मा पर सृष्टि-रचना, फिर धीरे-धीरे माँ दुर्गा का प्रकट होना—]

गायन

खण्ड प्रथमे साजि कै जिन सभ संसारु उपाईआ॥
ब्रह्मा विसनु महेस साजि कुदरती दा खेल रचाइ बणाइआ॥
सिंध परबत भेदिनी बिनु थमां गगनु रहाइआ॥
सिरजे दानो देवते तिन अन्दर वादु रचाइआ॥
तेही दुर्गा साजिकै दैतां दा नासु कराइआ॥
तैथों ही बलुरास लै नालि बाणा दहसिरु घाइया॥
तैथों ही बलु कृष्न लै कंसु कैसी पकड़ि गिराइआ॥
बड़े-बड़े मुनि देवते कई जुग तिनि तनु ताइआ॥
किनी तेरा अंतु न पाइआ॥

[दुर्गा का अदृश्य होना। नारद का मंच पर आना।]

नारद : ओम नारायण ! नारायण ! ओम नारायण ! वाह श्री भगवती माँ की। पातशाही श्री माँ भगउती सहाइ।

[दूसरी ओर अंहकारी देवताओं का दृश्य।]

नारद : जब पूरा धर्मवान सतयुग बीत गया, तब आधा धर्मवान त्रेता युग आ गया। देखो देवताओं का अंहकार, देखो इनका अज्ञान। सबके सिर पर कलह नाच रही है। वाह···वाह···वाह···धा···धा···

दूसरा दृश्य

[संगीत। इन्द्र भागता हुआ माँ दुर्गा के पास आता है।]

गायन

अभिमानु उतारना देवतियाँ महिखासुर सुंभ उपाइआ ॥
तीन लए तिन देवते तिह लोकी राजु कमाइआ ॥
वड्डा बीरू अखाइकै सिर उपरि छत्र फिराइआ ॥
दित्ता इन्द्र निकाल कै तिन गिरि कैलासू तकाइआ ॥
डरिकै हथों दानवीं दिल अन्दरि त्रासु बधाइआ ॥
पास दुरगा दे इन्दर आया ॥

इन्द्र : माँ ! राक्षसों ने इन्द्रासन छीन लिया। हमारा, देवताओं का राज्य ले लिया। तीनों लोक में राक्षसों का ढिंढोरा बज रहा है। देवता डर के मारे छिप गए हैं माँ ! महिषासुर के सामने कोई देवता टिक नहीं पा रहा है। हे माँ ! हम तेरी शरण हैं। हमारी रक्षा करो माँ। जगत जननी भवानी।

[दुर्गा का हँस पड़ना।]

गायन

दुरगा बैण सुणदी हस्सी हड़हड़ाय ॥
ओही सींहु मँगाया राकस भखणा ॥
चिन्ता करहु न कोई देवा नूं आखिआ ॥
रोह होई महाभाई रासि मारणे ॥

[सबका जाना। सूने मंच पर नारद]

नारद : माँ दुर्गा इन्द्र की रुलाई देखकर हँस पड़ीं—ठहाका मारकर। फिर माँ ने राक्षसों को खा जाने वाला अपना शेर मँगवाया। महाभाई ने डरे हुए देवता ओरू से कहा—चिन्ता मत करो, अब मैं राक्षसों से निपट लूँगी।

[युद्ध का संगीत शुरू। राक्षसों सहित महिखासुर का संग्राम भूमि में आना। उधर अकेली सिंहवाहिनी दुर्गा। युद्ध-दृश्य का संगीत]

गायन

चोटां पवन नगारे अणइया जुटियां ॥
धूह लईयां तखारी देवां दानवी ॥
वाहन वारो वारी सुरे संघरे ॥
वगे रतु झुलारी ज्यों गेरू बावुत्रा ॥
देखन बैठ अटारी नारी राकसां ॥
पाई धूम सवारी दुरगा दानवी ॥
लख नगारे बज्जन आमो सामणे ॥
राकस रणो न भज्जन रोहे रोहले ॥
सीहां वांगु गज्जन सभे सूरमे ॥
तणि तणि कैबर छड़न दुरगा सामणे ॥

[युद्ध में चंडी द्वारा महिषासुर-वध। माँ द्वारा राक्षस-विनाश। इन्द्र को राज्य देकर माँ का अन्तर्धान होना, पृष्ठभूमि में गायन—]

इति महिखासुर देत मारे दुरगा आइआ ॥
चौदह लोकां राणी सिंघ नचाइआ ॥
मारे वीर जटाणी दल विचि अगले ॥
मंगन नाही पाणी दली हुंकार कै ॥
जण करी समाइ पठाणी सुणि के राग नूं ॥
रत्तू दे हड़वाणी चले वीर खेत ॥
पीता फुलु इआणी घुमण सूरमे ॥

तीसरा दृश्य

[इन्द्र का दरबार। देवताओं सहित इन्द्र का रागरंग। अभिमान। भोग-विलास। देवस्त्रियों-नर्तकियों का नृत्य। नारद का आना। नारद को देखर सब हँसते हैं।]

नारद : इन्द्र, सावधान ! अहंकारी, भोगी-विलासी ! होश में रहो। भूलो नहीं, अहंकार ही राक्षस है। अज्ञान ही दानव है ?

इन्द्र : क्या रंग में भंग डालते हो नारद ! देखो स्वर्ग की इन सुन्दरियों को !

[अप्सराओं का नृत्य]

नारद : छी-छी इन्द्र ! सावधान !

[इन्द्र के साथ देवताओं की हँसी । नारद का अपमान]

इन्द्र : नारद, जाओ-जाओ, हिमालय में जाकर डमरू बजाओ ।
पहला देवता : अब हमारा कोई क्या करेगा ?
दूसरा देवता : अब हम किसी से क्या डरेगा ?
तीसरा देवता : अब कहीं कोई राक्षस नहीं है ।
चौथा देवता : तुम्हारे अलावा ।

[सबकी हँसी । नारद का जाना ।]

इन्द्र : नारद गए ? सब गए ।
इन्द्र : सुरापान सुन्दरी ! (पीकर) नाचो, नाचो ।
सब : (पीते हुए) नाचो । खींचो । बांधो ।

[नर्तन के साथ देवताओं के अहंकार दृश्य का समापन]

चौथा दृश्य

गायन

होई अलोपु भवानी देवा नू राज दे ॥
ईसर दी बरदान होई जित दिन ॥
सुम्भ निसुम्भ गुमानी जनमे सूरमे ॥
इन्द्र जी राजधानी तकी जितनी ॥

[पृष्ठभूमि में गायन चलता रहेगा । मंच पर डमरू बजाते हुए नारद । साइक्लोमा पर हिमालय का दृश्य । दुर्गा का आना ।]

नारद : माँ ! अहंकारी इन्द्र का दिमाग फिर खराब । देवपुरी में शराब ही शराब । भोग का रोग । माँ, इन्हें फिर शिक्षा दो । देवता कुंदजेहन हैं—अपने घमंड में मूर्ख मगन हैं ।

[दुर्गा का नर्तन । सुंभ और निसुंभ का पैदा होना । माँ का निर्देश पाकर]

सुंभ : मैं सुंभ ।
निसुंभ : मैं निसुंभ ।
दोनों : हम इन्द्र की राजधानी स्वर्गपुरी जीतने का संकल्प करते हैं ।

[युद्ध संगीत। राक्षसों का देवताओं पर आक्रमण]

गायन

दानौ देऊ अनागी संघ रचिआ ॥
फुल खिड़े जण बाणी बाणे जोधियां ॥
भूतां इलां कागीं गोसत मखिआ ॥
हुम्मड़ घुम्मड़ जाणी धती सूरिआ ॥
सट पई नगारे दलां मुकाबला ॥
दिते देऊ भजाई मिलकै राकसि ॥
लोकी तिही फिराई दोही आपणी ॥

[मंच पर राक्षसों की जीत। इन्द्र सहित देवताओं की हार। सुंभ-निसुंभ के हाथ में राज्य शासन का चिह्न। देवताओं की स्त्रियों को पकड़कर लाया जाना। नर्तन।]

पाँचवाँ दृश्य

गायन

दुरगा दी साम तकाई देवां डरदिआं
आंदी चंडि चड़ाई उत्ते राकसां ॥

[पृष्ठभूमि में गायन दुहराया जाना। मंच पर इन्द्र का माँ दुर्गा की शरण में आना। नारद का प्रवेश।]

नारद : अंड-बंड ! कहाँ गया इन्द्र का घमंड ?
इन्द्र : क्षमा करो देवर्षि ! मैं अज्ञानी, हतभागी, देवर्षि !
नारद : यही फल है राजसिंहासन के घमंड का। कहाँ है तुम्हारी देवपुरी अलका।
इन्द्र : क्षमा करो, नारद। अब ऐसी भूल कभी न होगी।
नारद : होगी-होगी। जब तक घमंड है, होगी। भोगी ! रोगी ! होगी।
इन्द्र : नहीं, मत दो ऐसा श्राप। अब नहीं होगा घमंड का पाप।
नारद : माँ के सामने लो सौगंध।
इन्द्र : माँ की सौगंध।
नारद : संकल्प करो।
इन्द्र : संकल्प करता हूँ।
नारद : शक्ति केवल माँ की है। महाशक्ति भगवती। पातशाही।

[माँ दुर्गा का आना। वचन देने का अभिनय। युद्ध-संगीत। युद्ध-दृश्य।]

गायन

चौबी धौंस बजाई दलां मुकाबला ।।
रोह भवानी आई उत्ते राकसां ।।
खब्बे दसत नचाई सीहुण सार दी ।।
बहुतियाँ दे तन लाई कीती रंगुली ।।
भाईयाँ मारन माई दुर्गा जाणि कै ।।
रोह होइ चलाई राकसि राइ नूँ ।।
जमपुर दीआ पठ़ाई लोचन धूम नूँ ।।
जावे दित्ती साई मारन सुंभ दी ।।
भन्ने दैत पुकारे राजे सुंभ थै ।।
लोचन धूम संघारे सणे सिहाहिआं ।।
चुणि चुणि जोधे मारे अंदर खेत दै ।।
जापन अंबर तारे डिगनि सूरमे ।।
गिरे पर्वत मारे भारे बिज्जु दै ।।
देतां दे दल हारे दहसत खाइ कै ।।
बचे सु मारे मारे रहदे राइ थै ।।

छठा दृश्य

[राक्षसों का सुंभ राजा के पास पहुँचना]

पहला : सुंभ राजा, त्राहि-त्राहि !
दूसरा : महाराज ! चंडी दुर्गा ने हमारी सेना समेत धूमर और लोचन को मार डाला।
तीसरा : महाराज !

पृष्ठभूमि में गायन

लोचन धूम संघारे सणे सिपाहिआं।
चुणि चुणि जोधे मारे अंदर खेत दै ।।
जापन अंबर तारे डिगनि सूरमे
गिरे पर्वत मारे भारे बिज्जु दै
दैतां दे दल हारे दहसत खाइ कै।
बचे सु मारे मारे रहदे राइ थै ।।

2

सुंभ : चंड और मुंड !
चंड : आज्ञा महाराज !
मुंड : चंड काटे दुर्गा का चंड। मुंड काटे दुर्गा का मुंड।

[दोनों का अट्टहास ।]

सुंभ : जाओ, दुर्गा को बाँध कर ले आओ।

[युद्ध-संगीत ।]

गायन

चोबी धौंसा पाइयां दलां मुकाबला ।
दसतीं धूह नचाइयां तेगां नंगीआ ।।
सूरिआं दे तन लाइआं गोश्त गिधीआं ।
बिधन राती आइआं मरदा घोड़िआं ।।
जोगणीआं मिल धाइआं लोहू भखणा ।
फौजा मार हटाइआं देवां दानवा ।।
भजदी कथा सुणाइयां राजे सुंभ थैं ।
मुई न पउणे पाइआं बूंदां रक्त दीआं ।।
काली खेत खपाइआं सभे सूरतां ।
बहुती सिरी बिहाइआं घड़ीआ कालकीआं ।
जाणि न जाए ममाइआं जूझे सूरमे ।।

सातवाँ दृश्य

[सुंभ राजा के सामने सेनापति धूम्रलोचन]

धूम्रलोचन : महाराज, गजब हो गया।
सुंभ : ऐसा क्या हुआ ?
धूम्रलोचन : चंड और मुंड दोनों मारे गए।
सुंभ : और रक्तबीज ?
धूम्रलोचन : दुर्गा ने काली चंडी का रूप धर कर रक्तबीज के सारे रूप नष्ट कर दिए।
सुंभ : असंभव ।
धूम्रलोचन : रक्तबीज के खून को काली भवानी ने जमीन पर गिरने ही नहीं दिया। रक्तबीज का खून काली के खप्पर में सूखता चला गया।
सुंभ : ओह ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ !

[डमरू बजाते हुए नारद का प्रवेश]

नारद : नारायण ! नारायण !

सुंभ : कौन है ?

नारद : मैं नारद हूँ, महाराज ! (**डमरू बजाना**) यह डमरू क्या कह रहा है ? सुंभ··· निसुंभ···सुंभ-निसुंभ···है ना ? तो ऐसा है, महाराज ! सुंभ और निसुंभ, आप दोनों अपनी सेना लेकर चंडी पर वार करो—ग्रह-नक्षत्र बहुत अच्छे हैं, अनुकूल। कबूल। नारायण ! नारायण !

[डमरू बजाते हुए जाना]

सुंभ : सही है। अब हम वध करेंगे चंडी भवानी का।

निसुंभ : सुंभ-निसुंभ की जै।

[युद्ध-संगीत शुरू। मंच पर चंडी और सुंभ-निसुंभ के बीच युद्ध।]

गायन

दुहां कंधारां मुहि जुड़े नाल धंऊसा भारी
लई भगउती दुरगसाह बरजागन भारी
लाई राजे सुंभ नो रतु पीए पिआरी
सुंभ पलाणो डिगिआ उपमा बीचारी
डुब रत्तू नालहु निकली बरछी दुधारी।
जाण रजादी उतरी पैन सुही सारी।

दुरगा अते दानवी भेड़ पइआ सबाही।
सस्तर पूजते दुरगसाह गह सभनी बाहीं
सुंभ निसुंभ संघारिआ वथ जेहे साहीं।
फऊजां राकसिआरियां देख रोवनि धाही।
मुहि कडुचे घाह दे छड्ड घोड़े राहीं
भजदे होऐ मारीअन मुड़ झाकन नाहीं॥

सुंभ निसुंभ पठाइआ जम दे धाम नो॥
इन्द्र सद दुलाइआ राज अभखेख नो।
सिर पर छत्र फिराइआ राजे इन्द्र दै
चऊदह लोकां छाइआ जसु जग मात दा
दुरगा पाठ बणाइआ सभे पऊड़ीआं
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ॥

[युद्ध समाप्त। दुर्गा के हाथों इन्द्र का राजतिलक। समस्त देवता और देव-स्त्रियों द्वारा माँ की आरती। नृत्य दृश्य।]

गायन

चौदह लोकां राणी सिंह नचाइआ।
इति दैत मारे दुरगा आइया॥
होई अलोपु भवानी देवा नू राज दे।
ईसर दी बरदानी होई जित दिन
दुरगा पाठ बणाइआ सभे पऊडीआं
फेर न जूनी आइआ जिन इह गाइआ॥

[पर्दा]

खाक एक सूरत बहुतेरी

पात्र

कबीर (करबीर)
नीमा
नीरू
लोई (माँ)
हैना-हैनी (दो चोर)
रामानंद
पुरोहित
पंडा
शेख
काजी
साकत
बामन
जुलाहा

पहला दृश्य

[प्रारंभिक संगीत के बाद लहरतारा तालाब का दृश्य उभरता है और अकेली लोई का गायन सुनाई देता है।]

हेरी है हिय झार बढेरी,
यह बिछुरन मोरे प्रान हरे री
नेह नगर में धूम मचाई
फेर फिरावत दे दो घेरी।
तन मन प्रान छार भये मेरे
धीरज जियरा नाहिं छरे री।
यह बिछुरन मोरे प्रान हरे री॥

[इस बीच माँ लोई अपने अंक में नवजात शिशु को लेकर आती है। तालाब में पुरइन के पात पर शिशु को सुलाकर रोती हुई जाती है। संगीत]

यह बिछुरन मोरे प्रान हरे री,
तन मन प्रान छार भये मेरे
धीरज जियरा नाहिं धरे री।

[लोई का प्रस्थान संगीत के समापन के साथ होता है। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर नीरू दौड़ी आती है। बच्चे को उठा लेती है अपने अंक में। पृष्ठभूमि से यह संगीत 'इको' गूंजता है।]

तिरिया के जनमे कवन फल, हे मोरे साहेब
पुतवा जनम जब लेई है तबै फल होई है
पुतवा के जनमे कवन फल, हे मोरे साहेब
दुनिया आनन्द जब होई, तबै फल होई है।

[लोई बच्चे को अंक में भरे आती है। मंच पर प्रकाश बुझता है। अँधेरे में वही संगीत उभरा हुआ है। प्रकाश आने से पहले संगीत चला जाता है।]

दूसरा दृश्य

[मंच पर एक ओर से पुरोहित, दूसरी ओर से मुल्ला का आना।]

ब्राह्मण : (पुकारता है) नीमा, नीरू, अरे सुना नहीं, मैं हूँ पंडित पुरोहित।

मुल्ला : मैं हूँ शेख मुल्ला।

ब्राह्मण : तो यहाँ क्यों आ गए करने हल्ला !

मुल्ला : अल्ला बिसमिल्ला। अल्ला बिसमिल्ला।

[नीमा और नीरू आते हैं।]

मुल्ला : देख नीरू, वह लौंडा, जिसका नाम कबीर है, उसकी सुन्नत नहीं हुई है, चुनांचे वह मुसलमान नहीं है।

ब्राह्मण : वह संस्कारहीन है इसलिए वह हिन्दू भी नहीं है। वह आवारा है।

मुल्ला : जिसकी वल्दियत का ही पता नहीं। गुमशुदा।

ब्राह्मण : जिसका न भगवान न खुदा। वह अछूत है। सब उससे भागते हैं, वह भूत है।

नीमा : हे रे नीरू, कहाँ है कबीर। कहाँ से उठा लाई, अब कैसे धरूँ धीर !

नीरू : अब तो वह बढ़कर जवान हो गया। वह इनसे अछूत ही सही, पर अब मेर सपूत सयान हो गया। हाय वह कैसा गाता है।

[नीरू गाती हुई नृत्य-अभिनय करती है।]

तेरी कुदरत केहू ना जानी।
काहे को कीजे पंडत छूत बिचार
छूत ही ते उपजै सब संसार।
एकै लोहू एकई दूध।
तुम कैसे बामन हम कैसे सूद।
तेरी कुदरत···
जनमत छूत मरत भी छूत
देखो हरी की निर्मल जातै।
नाहि कोऊ ऊँच नाहि कोऊ नीचा
एकै पिंड एकै सींचा।
तेरी कुदरत केहू ना जानी॥

ब्राह्मण : चुप रह, बेमतलब गला फाड़ती है। वही भाषण बोलती है।

मुल्ला : न कुछ समझती है न जानती है।

नीमा : तो मेरे कबीर को सँभलाओ।

नीरू : उसे सही रास्ता दिखाओ।

ब्राह्मण : वह···हमारा बाप-दादा बनता है।

मुल्ला : वह मुझे बांग देने वाला मुरगा कहता है।

ब्राह्मण : उसकी ऐसी की तैसी !
मुल्ला : उसपे खुदा का कुफ्र।
नीरू : मत दो बददुआ मेरे गरीब बेटे को।
नीमा : रहम करो।

[वे गुस्से में जाते हैं। नीरू और नीमा देखते रह जाते हैं। संगीत]

तीसरा दृश्य

[मंच पर प्रकाश आते ही दिखता है—एक ओर जुलाहा नीमा शटल पर कपड़ा बुन रहा है। उसकी पत्नी नीरू चर्खे पर सूत कात रही है। शेष मंच पर पुरोहित, शेख, इमाम, वैष्णव, जोगी, जति, साकत, सन्यासी ब्राह्मण, मुसलमान एवं अलग-अलग कुछ खड़े, कुछ बैठे हैं।]

साकत : अरे बंद कर अपना शटर-फटर। अबे ओ नीमा जुलाहे ! तुझे कुछ नहीं सुनाया। बंद कर अपना शटर-फटर। ओ री नीरू जुलाहन, बंद कर चर्खा चलायन।

ब्राह्मण : कहाँ है वह बालक जिसका नाम है करबीर वह तेरा पूत है, कहाँ है उसका नजीर।

साकत : हमने पता लगाया, वह है विधवा ब्राह्मणी का पूत। अबे जुलाहे, उसे कर दिया अछूत।

काजी : मैं हूँ काजी, सुनो मेरी बात। लाओ अदालत के खर्चे के लिए सौगात।

शेख : वाह-वाह ! एक खुदा काजी का, दूसरा खुदा जुलाहे का। एक अल्ला मेरा, तेरा अल्ला खैर सल्ला।

काजी : वह शिया है तू सुन्नी है। दूर हटो दूर। है नमाज का वक्त हो रहा, बड़बड़ाना बंद करो। शंख-घंटा-घड़ियाल नजर से दूर करो।

नीमा : खाकर नमक जो हक न नमक का अदा करे। दोनों जहान में उसे गारत खुदा करे।

शेख : अल्लाह हो अकबर।

ब्राह्मण : चुप रहो। देखते नहीं भगवान को सुला रहा हूँ।

शेख : चुप रह, कैसा तेरा भगवान। अल्लाह हो अकबर।

ब्राह्मण : तू चुप रह शेख मुसलमान, जै गोपाल जै गोपाल।

साकत : अरे ब्राह्मण ! मंत्र से शुद्ध करके बकरा खाने वाले। हरि ओ३म्। हरि ओ३म् ! अरे सबसे बड़ा पंथ साकत धर्म है। साकत। न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने।

ब्राह्मण : छी-छी ! कितना बदबू करता है यह दुष्ट साकत। असली मार्ग योग है।

साकत : दूर हट कुत्ते के पिल्ले। असली मार्ग योग नहीं भोग है।

ब्राह्मण : ब्रह्म सत्य, जगत माया। नहीं, जगत राम-कृष्ण की लीलाभूमि है जोगी-जती-बैरागी मूर्ख हैं।

साकत : जीवो जीवस्य जीवनम। वैष्णव ब्राह्मण बकवास करता है।

काजी : यह सही कहता है।

ब्राह्मण : तू मुसलमान, हमारे बीच में क्यों बोला रे।

शेख : यह शिया है, इसे मार भगाओ।

काजी : यह सुन्नी है, इसे मार भगाओ।

नीरू : भगवान के लिए मुझे अपना काम करने दो।

नीमा : हमारा काम ही हमारा राम है।

काजी : अबे राम नहीं अल्लाह।

ब्राह्मण : अल्लाह नहीं हरिनाम। राधे-कृष्ण। राधे-कृष्ण।

साकत : शक्ति परम शक्ति अनाहद नाद शिव शक्ति शिव शक्ति।

शेख : अल्लाह हो अकबर।

[सब अपनी-अपनी रट रहे हैं। परस्पर झगड़ा, मार-पीट। पृष्ठभूमि से कबीर की वाणी उभरती है—]

मो को कहाँ ढूंढ़े बंदे
मैं तो तेरे पास में
ना मैं बकरी ना मैं भेड़ी,
ना मैं छुरी गँडास में।
ना मैं मंदिर ना मैं मस्जिद
ना काबे कैलास में
ना मैं कोऊ क्रिया-करम में
नाहि जोग-बैराग में।

[कबीर मंच पर आकर सब गिरे हुए व्यक्तियों को छू-छूकर उठाते हैं।]

ब्राह्मण : छी-छी-छी ! तूने छू लिया।

शेख : सुभान अल्ला। यह कुफ्र है।

ब्राह्मण : है ! तू अपने आपको क्या समझता है।

साकत : साकत को कुत्ता कहता है। भस्म हो जा।

ब्राह्मण : मूर्तिपूजा का रहस्य तू क्या जाने। मूर्ख कहीं का। ना बाप का पता न माँ का।

साकत : हुअँ, बड़ा बनता है ज्ञानी।

[सब बड़बड़ाते हुए जाते हैं। संगीत]

चौथा दृश्य

[संगीत, हैना और हैनी दो चोर आते हैं। हैना बहुत मोटा है। हैनी उतना ही दुबला है। छोटा है, कुरूप है।]

हैना : हैनी !

हैनी : हैना !

हैना : अब क्या करना ?

हैनी : करबीर को चंपत कर लेना।

हैना : हैनी ! तू मेरी खोपड़ी है।

हैनी : तू मेरा शरीर लोमड़ी है।

हैना : तन मोटा मन छोटा।

हैनी : शरीर बंदर। दिमाग छछूंदर।

हैना : क्या···क्या हैनी ?

हैनी : क्या कहा हैना ?

हैना : अगर मैं नहीं तो तू कहाँ ?

हैनी : अगर मैं नहीं तो तू कहाँ ?

हैना : मैं नाचूँ तू नाचेगा।

हैनी : मैं ही तुझे नचाता हूँ।

हैना : चुप रहता है कि···

[तलवार निकाल लेता है।]

हैनी : तेरी यह मजाल मोटा।

[दोनों तलवार चलाते हैं। लड़ाई करते हैं। संगीत। कबीर का आना। दोनों छिप जाते हैं।]

झीनी झीनी बीनी चदरिया
काहे का ताना काहे के भरनी, कौन तार से बीनी चदरिया
इंगला पिंगला ताना भरनी, सुसमन तार से बीनी चदरिया
अट्ठ कमलदल चरखा डोले पंचतत्र गुन तीनी चदरिया
साईं को सियत मास लागे ठोक-ठोक के बीनी चदरिया
सो चादर सुरनर मुनि ओढ़ी, ओढ़ी के मैली कर दी चदरिया

[गाते, अभिनय करते हुए कबीर सूत को फैलाते हैं। अपने शटल में धागे भरते हैं। दोनों चोर सलाह करते हैं।

हैना : करबीर अगर अपने हाथ में आ जाए।

हैनी : तो मालामाल हो जाएँ।

हैना : कितने उम्दा कपड़े बुनता है ?

हैनी : कितना अच्छा गाता है !

हैना : यह हाथ लग जाए तो इससे भीख मँगवायें।

हैनी : कपड़े बुनवायें।

हैना : नीमा जुलाहा मालामाल हो गया।

हैनी : अब यह माल अपने हाथ आ जाएगा।

[हैना एक डंडे में फल लटकाकर कबीर के सामने करता है। कबीर का वही संगीत चल रहा है।]

हैना : आ जा, आ जा। ले पकड़, बड़ा मीठा फल है।

हैनी : एक बार पकड़ लें तो खींच ले चलें इसे।

[दोनों पुचकारते हैं। बुलाते हैं। अंत में कबीर उस सूत को पकड़ लेते हैं। ये दोनों खींचते हैं। गिर पड़ते हैं।]

कबीर : (देख रहे हैं, हृदय में सोचते हुए) आह ! यह कैसा भयंकर दृश्य है। तन-चोर। मन-बुद्धि भी चोर। सब अलग-अलग। सबकी आपस में लड़ाई। धर्म के क्षेत्र में न केवल हिन्दू व मुसलमान दो वर्गों में बँटकर आपस में लड़-भिड़ रहे हैं। बल्कि जोगी-जती, वैष्णव, साकत-संन्यासी, शेख व काजी भी अपनी-अपनी हाँक रहे हैं। एक समाज अलग-अलग वर्गों में—वर्गों से उपवर्गों में बँट रहा है। सामाजिक क्षेत्र में भी एक और वर्ण व्यवस्था के कारण हिन्दुओं के भीतर इतनी जातियाँ होकर एक-दूसरे से अलग हो रही हैं। दूसरी ओर ऊँच-नीच, छूत-अछूत, अंध-विश्वासों में सब कुछ विश्रृंखलित हो रहा है।

हैना : अरे, यह क्या बड़बड़ा रहा है।

हैनी : इसका दिमाग खराब हो गया है।

हैना : भागो। भागो।

[दोनों भागते हैं। प्रकाश सिमट कर कबीर पर आ जाता है।]

कबीर : सद्गुरु ! रास्ता दिखाओ। बिन गुरु होइ न ग्यान। दुइ दुइ लोचन पेखा। गुरु बिन अउर न देखा।

[संगीत]

सतगुरु यह जग अंधा मैं केहि समुझावो।
इक दुइ होय उन्हें समझावो सब ही भुलाता पेट का धंधा।
बाहरी नदिया अगम कहै घरवा खेवनहारा पड़िगा फंदा।
घर की वस्तु निकट नहि आवत दियरा बाहिर के ढूँढत अंधा।
लागी आग सकल बन जरिगा बिनु गुर ग्यान भटकिया बंदा।

[गुरु की तलाश में कबीर चलते हैं। पृष्ठभूमि में उनका स्वर सुनाई दे रहा है। प्रकाश बुझता है। जैसे ही प्रकाश लौटता है, अगला दृश्य]

पाँचवाँ दृश्य

[मंच पर विभिन्न स्थलों पर विभिन्न धर्मगुरु बैठे हैं। कबीर अपना वही पद गाते हुए एक-एक के पास जाते हैं। धर्मगुरु उनकी उपेक्षा करते हैं।]

पहला : न हिन्दू न मुसलमान, तेरा कैसा ईमान।

दूसरा : जिसके माँ-बाप का ही पता नहीं, मैं उसे अपना शिष्य नहीं बनाता।

तीसरा : मैं तुझे अपना गुरु-प्रसाद नहीं दे सकता।

चौथा : मंदिर-मस्जिद, कर्मकांड, पुरोहित-पंडा, काजी-मुल्ला सब की हँसी उड़ाता है। जा, जा, मेरे पास मत आना।

पाँचवाँ : अल्ला अल्ला खैरसल्ला।

छठा : न रोजा न नमाज, न पूजा-पाठ-हल्ला।

[कबीर को अचानक लोई माँ प्रकाश में नृत्य करती हुई दिखती है। उस प्रभाव से डरकर धर्मगुरु भागते हैं।]

माँ : कोटि सरजाके परकास
कोटि महादेव शत कैलास
दुरगा कोटि जाके मरदन करै
ब्रह्मा कोटि वेद उच्चरै
नवग्रह कोटि ठाढ़े दरबार
धरम कोटि जाके प्रतिहार

[माँ संकेत करती है। रामानन्द आते दिखते हैं।]

माँ : जा तुझे सतगुरु मिलेगा,
जा तुझे सतगुरु मिलेगा।

[माँ जाती है। अँधेरा हो जाता है।]

छठा दृश्य

[सीढ़ियों पर कबीर सोये पड़े हैं। रामानंद आते हैं। उनका दायाँ पैर कबीर के ऊपर पड़ जाता है।]

रामानन्द : राम-राम! (कबीर को उठाकर अपने अंक से लगाने लगते हैं।)

[संगीत। पीछे नीरू का सखियों के साथ नृत्य-गान]

दुलहिन गावहु मंगलचार मोरे घर आए रामभतार
तरन करि हो मनरत करि हो पंच तत्र बराती
रामदेव मेरे पाहुन आए मैं जोबन मदमाती।
रामदेव संग भांवर तेहू धन धन भाग हमारी
कहै कबीर हम ब्यात चले हैं पुरुष एक अविनासी।

[दृश्य समापन—एक ओर गुरु-शिष्य, दूसरी ओर शक्ति माँ अपनी शक्तियों/सखियों के साथ]

[कबीर के आसपास गरीब लोग बैठे हैं। कबीर इन्हें उपदेश दे रहे हैं, दूसरी ओर नीमा और नीरू दुखी खड़े हैं।]

कबीर : मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपता क्या लागे है मेरा॥
जब मैं था तब हरी नहीं अब हरी है मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिट गया जब दीपक देखा माहिं॥
ऐसा कोई न मिले जासो कहो निसंक।
जासू हिरदे की कहूँ सो फिर मारे डंक॥
चलती चक्की देखि कै दिया कबीरा रोय।
दुई पाटन के बीच में साबुत बचा ना कोय॥
निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छवाय।
बिन साबुन पानी बिना निर्मल करे सुभाय॥

[दूसरी ओर नीमा-नीरू दुखी हैं।]

तनना बुनना तज्या कबीर।
राम नाम लिख लिया सरीर॥
ठाढ़ी रोवै कबीर की माई।
ऐसन पूत क्यूं जीवै खुदाई॥
ताना बाना कुछ न सूझै।
हरि रस चाखै बूझै॥
हरे कुल कौन राम कह्यो।
जब मे आया तब से सुख न भयो॥

[पृष्ठभूमि में कोलाहल उठता है। एक-एक कर लोग गुस्से में आते हैं। सब अपने-अपने चरित्र का मूक अभिनय करते हैं। जवाब केवल कबीर देते हैं। शेष अभिनय करता है।]

कबीर : लोका जानि न भूलो भाई
खालिक खालिक सब घट रह्यो समाई।
अल्लाह एकै नर उपजाया
औरों की कैसी निन्दा
एक नर से सब जग उपजा
कौन भला को मंदा।

[ब्राह्मण अभिनय करता है।]

कबीर : पत्थर पूजे हरी मिलै तो मैं पूजूं पहाड़।
याते तो चाकी भली पीस खाय संसार॥

[ब्राह्मण अभिनय करता है]

कबीर : जो तू बामन बमनी जाया।
तो आन बाट काहे नाहि आया।

[साकत अभिनय करता है]

कबीर : ई सब झूठी बंदगी बरिया पाँच नमाज।
साँचे मारै झूठ पाढ़ि काजी करै अकाज।

[साकत आदि सब आते हैं। कबीर सबको देखते हुए]

कबीर : एक बूंद एकै मलमूता एक चाम एक गूदा।
एक जोति में सब उत्पन्ना को ब्राह्मण को सूदा॥

[सब कबीर को क्रोध और आवेश में देखते हैं। कबीर का गायन]

तेरी गठरी में लागा चोर बटोहिया का सोवै।
पाँच दर्वेस तीन हैं चोरवा
ये सब कीन्हा सोर बटोहिया का सोवै।
जागु सवेरा बाट अनेड़ा फिर नाहि लागै ओर
भवसागर एक नदी बहुत है बिन उतरे जावो बोर
कहै कबीर सुनो भाई संतों जगत मत कीजै भोर
बटोहिया का सोवै।

एक : हमें चोर कहा।
दूसरा : हमें बेईमान कहा।
तीसरा : हम झूठे हैं ?
चौथा : तू बड़ा सच है।
पाँचवाँ : बदमास !

[सब कबीर पर टूट पड़ते हैं। मारकर चले जाते हैं। नीमा और नीरू आते हैं। कबीर की समाधि लग जाती है। गीत सब गाते हैं।]

एक : अरे इसे क्या हो गया?

दूसरा : इसकी तो समाधि लग गई।

तीसरा : हम से बड़ा अत्याचार हुआ।

चौथा : इसका दुख हमें बाँध रहा है।

नीरू : मेरे बेटे की सहज समाधि लगी है।

नीमा : सहज समाधि भली।

जहँ जहँ डूमो सोइ परिकामा
जो कुछ करूँ सो पूजा।

एक : यह सही कहता था।

दूसरा : एक जोति से सब उत्पन्न।
को ब्राह्मण को सूदा।

तीसरा : हमें क्षमा करे।

चौथा : कुछ बोलो कबीर!

पाँचवाँ : एकै पवन एक ही पानी, एक जोति संसारा।

एक : बोलो कबीर!

[साइक्लोर्मा पर प्रकाश। शक्ति माँ अपनी शक्तियों सहित पीछे दिखती हैं। कबीर उठते हैं। सब एक समूह में बँध कर सुनते हैं। कभी कबीर को मंत्र-मुग्ध होकर देखते हैं, कभी एक शक्ति माँ को। दोनों गीत इंटरेक्ट होंगे और समापन बनाया जाएगा।]

हम तो एक एक करि जाना
एकै पवन एक ही पानी एक जोति संसारा।
खाक एक सूरत बहुतेरी एक ही सिरजनहारा
सब घट अन्तर एकै करये धरै अनेकों बाना
खाक एक सूरत बहुतेरी कहै कबीर दिवाना।

होरी आयी रे आयी होरी आयी रे आयी।
सब मिली रंग उड़ाई रे भाई (टेक)
होरी आयी रे आयी होरी आयी रे आयी
वेद कुरान इफतरा भाई दिल का फिकिर न जाई
होरी आयी रे आयी···
आँखिन देख जो करो हाजिर हुजूर खुदाई।
होरी आयी···

ई जो दुनिया सिहर मेला कोऊ दूसर नाई
होरी आयी रे···
सब मिलि खेलो होरी
नैन रहे रंग लाई।
सब मिलि रंग उड़ाई
होरी आयी रे···
बाजीगर डंक बजाई···

[नृत्य-संगीत]

सब खलक तमासे आयी
होरी आयी रे आयी···

आइना देख अपना

[रेडियो-रूपक]

पात्र

अपर्णा
सिन्हा
राधा
रोहित
दुर्गा
जीत कुमार
शंकर
मजदूर
कुछ स्वर

[प्रारम्भिक संगीत के बाद फेड इन—घड़ी चलने की आवाज।]

अपर्णा : आहा—आठ बज गए। ये अब तक नहीं जगे। जगाऊँ तो गुस्सा। (**घड़ी की आवाज**) सुनते हैं···सुनो !···देखो आठ बज गए···फिर मुझे न कहना। ठीक सवा दस बजे तुम्हारी मीटिंग है।

सिन्हा : (**जगते हुए**) क्या है ?···मेरी घड़ी कहाँ है ?

अपर्णा : आठ बज चुके हैं।

सिन्हा : तुम्हारी घड़ी में, मेरी रिस्टवाच कहाँ है।

अपर्णा : रखते कहाँ हैं, ढूंढ़ते कहाँ हैं···यह लीजिए···अरे इसमें तो साढ़े आठ हैं।

सिन्हा : यही फर्क है। हर चीज़ में फर्क है। मैंने कहा था, मेरी घड़ी देख कर मुझे आठ बजे जरूर जगा देना।

अपर्णा : देखो चिल्लाओ नहीं, उठे नहीं कि···। मेरा ब्लडप्रेशर यूँ ही इतना बढ़ा हुआ है। चाय तैयार है।

सिन्हा : चाय यहीं ले आओ···और हाँ, फोन भी।

अपर्णा : अब हर चीज यहीं ले आओ। (**पुकार**) राधाबाई के हाथ भिजवाए देती हूँ।

राधा : साहब, चाय।

सिन्हा : फोन लाओ···

राधा : ये लो साहब।

सिन्हा : अपर्णा कहाँ गयी।

राधा : पूजा के कमरे में, बुलाऊँ ?

सिन्हा : (**पुकारते हुए**) अपर्णा ! तुम अभी तक दफ्तर नहीं गए। यह क्या करते हो। मुझे कुछ नहीं सुनना। फौरन पहुँचो दफ्तर। देखो···सारे कागजात तैयार रखना। ···हाँ-हाँ···दोनों टाइपिस्टों को लगा देना···अब साइक्लोस्टाइल करेगा··· ह्वाट।···लिसिन, आई वांट रिजल्ट। ओ० के० ! (**फोन रखना**)

राधा : साहब, चाय।

सिन्हा : (**पीकर**) ले जाओ इसे।

राधा : क्या हुआ साहब ? ठंडी है, कोल्ड।

सिन्हा : जाओ (**फोन मिलाना**) हैलो ! साहब को देना। गुड मार्निंग, सर ! कोई हुकुम, सर ? जी हाँ, नाम बताइए सर···जी···यस सर···जी, हो जाएगा··· बिलकुल। आपकी इच्छा मेरे लिए आर्डर है सर···राइट सर···राइट, थैंक यू

सर ! **(फोन रखना । पुकारना)** अपर्णा···अपर्णा ।

अपर्णा : क्या चिल्ला रहे हो । एक मिनट भगवान का भी नाम नहीं लेने देते ।

सिन्हा : माई डियर, मैंने अब तक पहली चाय नहीं पी है ।

अपर्णा : एक दिन मीठी चाय पी लेते तो क्या आसमान गिर जाता । राधाबाई भूल जाती है कि तुम···।

सिन्हा : अरे सैन्टेन्स तो पूरा कर लो । **(फोन करना)**

अपर्णा : तुम्हें फोन से फ़ुर्सत कहाँ है । यह लो चाय आ गई । ये लो अपनी पहली चाय ।

सिन्हा : वाह ! क्या चाय है । चाय जब तुम्हारे हाथ की होती है तो···तो गजब की होती है । वाह !

अपर्णा : क्या बात है, बड़े खुश नजर आ रहे हो । बॉस से टेलीफोन पर कोई मीठी बात हुई है क्या ?

सिन्हा : माई डियर, मैं बहुत जल्दी चीफ़ इंजीनियर बन रहा हूँ ।

अपर्णा : हाँ, बन ही तो सकते हो, हो तो सकते नहीं ।

सिन्हा : क्या ?

अपर्णा : बनने और होने में जमीन-आसमान का फर्क है ।

सिन्हा : किसी ड्रामे का भूला-बिसरा डायलाग याद आ गया । छोड़ो भी **(फोन)** शर्मा !

अपर्णा : सुनो ।

सिन्हा : क्या है ?

अपर्णा : अपने रोहित ने भी टेंडर भरा है ।

सिन्हा : कौन रोहित ?

अपर्णा : अरे, अपना रोहित शर्मा । दुर्गा का जिससे···

सिन्हा : मैं कुछ नहीं जानता ।

अपर्णा : सुनो तो ।

सिन्हा : मेरे पास वक्त नहीं है । **(जाते हुए)** मेरे कपड़े किधर हैं ! पानी गर्म है । गीजर ऑन है ।

अपर्णा : पता नहीं । जैसे इस घर में मैं इनकी नौकरानी हूँ । अगर तुम्हारे पास मेरी बात सुनने तक का वक्त नहीं, तो ठीक है मेरे पास भी वक्त नहीं है ।

सिन्हा : क्या बड़बड़ा रही हो !

अपर्णा : पहले मैं डायलॉग बोलती थी, अब बड़बड़ाती हूँ ।

सिन्हा : सचमुच मुझे पन्द्रह मिनट में दफ्तर पहुँचना है ।

अपर्णा : तो जाओ न ।

सिन्हा : तुम तो खामखा बुरा मान जाती हो ।

अपर्णा : मुझे पता है···बॉस ने फोन पर किसी का नाम लिया होगा, बस-बस···शुरू हो गए···माई डियर हो गई···।

सिन्हा : रोहित को इतने बड़े कान्ट्रैक्ट का कोई ऐक्सपीरियन्स नहीं है । उसके टेंडर का

मुझे पता है। सबसे कम लागत का होगा। उसे कुछ पता नहीं···ह्वाट इज़ ह्वाट।

अपर्णा : मैं समझ गयी। बातें मत बनाओ श्री हरिश्चन्द्र सिन्हा साहब। टेंडर तो तुम्हारे बॉस ने खोल दिया।

सिन्हा : डोंट टाक, नानसेंस। नाश्ता जल्दी लगाओ, मैं नहाने जा रहा हूँ।

[दरवाजा बन्द होने की आवाज़। अपर्णा का पूजा करना। धीरे-धीरे गाना—]

हरि बिन क्यूँ जाऊँ री माय।
हरि कारण बारी भई जस काठहि घुन खाय॥
औषध मूल न सँचरै तिहि लागी बौराय।
कमठ दादुर बसत जलमहुँ जल ही तें उपजाय।
हरी ढूंढ़न गई बन बन, कहूँ मुरली धुन पाय॥

हे ईश्वर ! हे दीनानाथ ! मेरे पति को सद्बुद्धि दो। रोको इसे। यह जिस तरह अपने आप से दूर होता चला जा रहा है···इसी दूरी का नाम तरक्की है क्या। अपनी जड़ों से अपने आप को उद्दंडता से खींचता हुआ, अपने स्वभाव से दूर··· इतनी दूर मेरा पति कहाँ जाना चाहता है। रोको प्रभु ! बचाओ !

[संगीत। परिवर्तन। फेड्स इन दफ्तर। टाइप होने की आवाज। सुपर इम्पोज।]

रोहित : जी, मुझे साहब से मिलना है। आप सिन्हा साहब के पी० ए० हैं।

पु० स्वर : जी हाँ, फरमाइए। साहब तो इस समय बिज़ी हैं।

रोहित : मेरा नाम रोहित है, यह मेरा कार्ड है। साहब को दे आइए, प्लीज़।

पु० स्वर : क्यों मुझे सस्पेन्ड करवाना चाहते हो।

रोहित : मेरा कार्ड दे आइए। वह मना कर देंगे तो मैं चुपचाप चला जाऊँगा।

[दरवाजा खुलना]

पु० स्वर : साहब, माफ़ कीजिए। आपसे यह साहब मिलना चाहते हैं। क्या बोल दूं ?

सिन्हा : (सोचते हुए) ओ···अ···हाँ, बाहर बैठाओ। टैल हिम टू वेट।

[दरवाजा खुलना]

पु० स्वर : इंतजार करना होगा। बैठिए।

रोहित : थैंक्यू।

[टाइपिंग की आवाज। काल बैल।]

पु० स्वर : साहब, जाइए।

रोहित : नमस्ते अंकल।

सिन्हा : कहिए, क्या बात है।

रोहित : वही एक गार्डन का टेंडर···।

सिन्हा : ए० ओ० सिस्टर आहूजा हैं, उनसे बात कीजिए।

रोहित : मेरी उनसे बात हो गई है। उन्होंने ही बताया है एक गार्डेन बनाने का कान्ट्रैक्ट सुधीर टंडन को मिला है···जेम्स कान्सट्रक्शन एण्ड कम्पनी को···।

सिन्हा : मे बी, आई डोन्ट नो।···सॉरी आई एम बिजी।

रोहित : लेकिन मेरा टेंडर।

सिन्हा : डोन्ट वेस्ट माई टाइम···यू कैन गो।

रोहित : थेंक्यू।

[संगीत का टुकड़ा। अपर्णा की हँसी।]

अपर्णा : ऐसे ही होता है···ऐसा ही हो रहा है। रोहित, तुम तो इन्हें पाँच सालों से देख रहे हो। मैं हरिश्चन्द्र सिन्हा साहब को तब से देख रही हूँ जब यह बी० ए० आनर्स फर्स्ट ईयर के सीधे-सादे छात्र थे। तब वह अपना नाम हरीश बताते थे। (हँसना) दिल्ली में उन दिनों एक ड्रामा ग्रुप था। उसी क्लब के एक ड्रामे में मैं हीरोइन का रोल कर रही थी···यह चपरासी का रोल तैयार करते हुए मुझे मिले थे। (हँसना) यह ऐसे बोले थे···शर्माते हुए···अजब नमकीन आवाज में··· अपर्णाजी ! मैं आपको प्राम्प्ट कर दूँ।

[अपर्णा की हँसी के साथ रोहित की हँसी। तभी दरवाजे का बजना।]

रोहित : लगता है, दुर्गा आ गयी।

दुर्गा : हैलो आंटी।

अपर्णा : हेलो रोहित, कहा न। झूठी कहीं की। कान खोलकर तुम दोनों सुन लो··· जिन्दगी में कभी नाटक न करना। स्टेज पर, शादी के बाद हनीमून में नाटक चाहे जितना कर लेना।

दुर्गा : आंटी ! आप जितनी ब्रेव मैं कहाँ हूँ।

अपर्णा : हाय, बेचारे रोहित का टेंडर ही नहीं खोला गया। अरे, यह खुद इतना यंग मैन है। आ इधर, तेरे गाल में चिकोटी काट कर देखूँ···तू दुर्गा से शादी करके उससे मोहब्बत बरकरार रखेगा या नहीं। (चिकोटी काटना। रोहित का चीखना।)

रोहित : हाय आंटी, यह क्या कर रही हो ! हाय, जब इनकी···लेडीज फर्स्ट की जगह आंटी आपने तो···।

अपर्णा : मैं कुंवारे आदमी का जरा भी विश्वास नहीं करती।

दुर्गा : चलिए आंटी जी, कहीं घूम आएँ।

अपर्णा : दुर्गा, तू मुझे ब्रेव कहती है। किसी दिन छिप कर देख, मैं पूजा के कमरे में भगवान के सामने कितना रोती हूँ। दुर्गा, मैं बहुत कमजोर हूँ, वरना मैं सिन्हा साहब को···मेरी कोई भी बात नहीं मानते हैं।

रोहित : छोड़िए, चलिए घूमने चलते हैं। आपको उधर ही लेकर चलूंगा जिधर राक

गार्डन की साइट।

दुर्गा : अप्पी आंटी ! आपको सिन्हा अंकल मिली कहते हैं···पहले तो आपको अप्पी कहकर···

रोहित : अप्पी पहले कहते थे, फिर अपरना कहने लगे, फिर रैना, फिर पता नहीं क्या-क्या···देखो, मैं ऐसे ही चलूं या···।

दुर्गा : आप ऐसे ही चलिए। फिर भी लोग आप ही को देखेंगे।

रोहित : दुर्गा आपसे उमर में बड़ी लगती है।

अपर्णा : चुप रह। चल कार स्टार्ट कर, हम आते हैं।

रोहित : ओ० के०। (**जाना**)

अपर्णा : दुर्गा, आई एम वेरी सॉरी। रोहित की मैं कोई मदद न कर सकी। रोहित थोड़ा उदास है।

दुर्गा : जी हाँ, उन्हें बहुत उम्मीद थी।

अपर्णा : मैंने ही तो वचन दिया उसे। मैंने ही टेंडर भरवाए थे। मैंने ही सब कुछ···।

दुर्गा : जब कुछ आपके ही आशीर्वाद से···।

अपर्णा : शादी से रोहित मुकर तो नहीं जाएगा। मर्दों पर से मेरा यकीन बड़ी तेजी से उठ रहा है दुर्गा। खास कर ये मर्द···जो 'रूटलेस' होते जा रहे हैं···अपनी जड़ों से उखड़ कर इक्वीशन और घमण्ड आई, आई···आई···

[सिन्हा का 'आई आई का इको'। फिर कट टू आफिस।]

सिन्हा : आई डोंट नो हिम। मैं और किसी को नहीं जानता। मैंने जो कह दिया वही होगा।

जीतकुमार : सर, मैं मारा जाऊँगा। मेरा नाम जीतकुमार है, आप मुझे भूल गए। मैं आपके अंडर ओवरसीयर था—दो साल तक। ओखला के पास जो बिल्डिंग कम्पैलक्स बन रहा था, यह देखिए; आपका दिया हुआ सर्टिफिकेट···

सिन्हा : मैं आपको नहीं जानता। मैंने कह दिया···।

जीतकुमार : सर, मुझे सस्पेंड न कीजिए। मैं छुट्टी पर चला जाता हूँ···मैडिकल लीव पर।

सिन्हा : मैं अपनी जिम्मेदारी के अलावा और कुछ नहीं जानता।

जीतकुमार : सर, जिन दिनों आप असिस्टेंट इंजीनियर थे···।

सिन्हा : चुप रहो। गेट आउट।

जीतकुमार : सर, यह जीप नहीं है। आप पर चीफ़ इंजीनियर बनने का भूत सवार है।

सिन्हा : मैंने क्या कहा आपसे ! आई से···।

[मैंने···मैंने, 'आई आई का इको' छा जाता है। कट टू का तोड़ा जाना, मशीन का चलना, रोलर, ट्रैक्टर की, ट्रक की आवाजें।]

एक स्वर : सर ! चीफ़ सेक्रेट्री आ रहे हैं।

[कार का रुकना । दरवाजा खोलना]

सिन्हा : गुड मार्निंग, सर।

शंकर : कहिए सिन्हा साहब, ठीक चल रहा है ?

सिन्हा : यस सर !

[पृष्ठभूमि में काम होने की आवाज़ें चल रही हैं।]

शंकर : शिड्यूल से पन्द्रह दिन पहले पूरा रॉक गार्डन तैयार हो जाना चाहिए। जापान के डेलीगेशन को यहीं लंच दिया जाएगा।

सिन्हा : यस, सर ! सब कुछ आपकी खुशी के मुताबिक होगा।

शंकर : सिन्हा।

सिन्हा : यस, सर।

शंकर : जो काम इंग्लैंड-अमरीका कर सकते हैं, वह काम हम क्यों नहीं कर सकते।

सिन्हा : यस, सर ! तशरीफ़ रखिए, सर ! बैठिए, सर !

शंकर : सुनो सिन्हा, प्राचीन ऋषियों ने कहा है—बैठे रहना द्वापर है, उठकर खड़े होना होता है, और चल पड़ना ही सतयुग है। तो चल पड़ो।

सिन्हा : पैदल, सर !

शंकर : चलना भी क्या जीप या कार से होता है। सिन्हा साहब, आपके बॉस ने मुझे कहा है—यू आर मैन आफ़ वर्ड्स। इसका मतलब क्या है !

सिन्हा : यह साइट देखिए, सर ! यहाँ से यह पहाड़ी इस तरफ़ तोड़-तोड़ कर इधर चारों ओर फैला दी जाएगी।

शंकर : आपके बॉस मिस्टर पुरी भी आने वाले थे। कहाँ हैं ?

सिन्हा : सर, मिस्टर पुरी को अचानक एक मीटिंग में जाना पड़ा। फ्लड इंजीनियर के साथ उन्हें···।

शंकर : (हँसना) मिस्टर सिन्हा, अपने बॉस के लिए बहुत समझ-बूझ कर कुछ बोलना चाहिए। लगता है इस साल का सी० आर० कुछ ऐक्सेप्शनल से भी ऐक्सट्रा आर्डनरी···।

सिन्हा : सब आप लोगों का आशीर्वाद है, सर !···यह गार्डन का लेआउट देखिए, सर ! इधर कोई आ जाए तो कितनी प्राइवेसी है···सबसे अलग···।

शंकर : मिस्टर सिन्हा।

सिन्हा : सर, आप मुझे सिन्हा कहें, काफ़ी है।

शंकर : (हँस कर) इस एकांत, निर्जन में देखो, इस विराट गगनचुम्बी इमारत को। ऐसा नहीं लगता कोई भूत-प्रेत खड़ा है खोखली इंजीनियरिंग का। मेरे पिताजी कहते थे, भूत-प्रेत गरीबी की देन हैं। गरीब देश का अपने यथार्थ से सम्पर्क टूट जाता है।

सिन्हा : हाँ, हाँ, बोलो-बोलो···। ओहो ! सिन्हा, तुम चेहरा बिगाड़ कर क्या सोचते रहते हो।

सिन्हा : हमारे इंजीनियर्स ने बड़े आविष्कार किए हैं। ये मिल, ये हाउसिंग कम्पलैक्स…।

शंकर : अरे भाई सिन्हा, सुनो। उत्तेजित मन से कभी कोई आविष्कार नहीं किया जा सकता। सारे बड़े आविष्कारों का इतिहास देखो…बड़े ही सहज भाव से अनायास ही बड़े काम हो जाते हैं, सत्य एकाएक प्रकट हो जाता है। अपने सत्य पाने के समय आर्कमेडीज़ बाथ-टब में बैठे थे और सर आइजक न्यूटन सेब के पेड़ के नीचे। तुम क्या हो, कौन हो सिन्हा, कभी देखा है ?

सिन्हा : सर !

[काम होने का तेज सामूहिक स्वर उभरता है। परिवर्तन संगीत। सिन्हा का घर।]

राधाबाई : मेम साहब, हम साफ़ बोलता…बिना कॉफी का एक ओनली प्याला पिए और एक हूँ पान खाए हम से कुछ नई होता। आप भी कॉफ़ी पिएगा !

अपर्णा : कॉफ़ी तो नहीं, हाँ, आज राधाबाई तुम्हारा पान खाऊंगी…और तुम्हारा जर्दा भी…जरा-सा।

राधाबाई : केरल का टोबाको है मेम साहब।

अपर्णा : अरे केरल का हो या रंगून का, सब निगल लूंगी गटक से।

राधाबाई : (हँसना) खटक मे, पटक से…(हँसना) तुम बौत इन्ट्रेस्टिंग मेम साहब है। पर साहब तो बौत सीरियस रहता…व्हाई ? पता नई। ये लो पान। खाओ।

अपर्णा : साहब, इसलिए सीरियस रहते हैं क्योंकि वो बहुत अकेले हैं…लोनली समझो।

राधाबाई : लोनली। आप उनके साथ नहीं सोता ? नहीं ?

अपर्णा : अरे एक साथ सोने से क्या होता राधाबाई।

राधाबाई : जाओ-जाओ, तुम बौत मजाक करता। ओह, मेरी कॉफी ठंडी होई गई।

[दरवाजे का बजर बजना। दरवाजा खोलना]

राधाबाई : साहब आ गया मेम साहब।

अपर्णा : गुड ईवनिंग सर ! अरे, आज तो बहुत खुश हो। तरक्की हो गई क्या। यह गुलदस्ता तो बहुत अच्छा है। हूँ, क्या खुशबू है…ओ रजनीगंधा तोमार… रजनीगंधा…वाह !

सिन्हा : पुरी साहब ने मुझे स्टाफ़ कार दे दी…जीप के साथ नई कार। ड्राइवर समेत। बँगले पर रहेगी कार।

अपर्णा : जरा मुस्कराकर मुझे देखो तो।

सिन्हा : देखो अपर्णा, वक्त नहीं है, यह गुलदस्ता तुम कभी ले जाकर मिस्टर और मिसेज़ पुरी को उनके बँगले पर उन्हें प्रेजेंट करोगी। उनकी शादी की सालगिरह है आज।

अपर्णा : हमारी शादी की सालगिरह कब है ?

सिन्हा : जाओ, झटपट तैयार हो जाओ। कार बिल्कुल तैयार खड़ी है।

अपर्णा : मगर मैं तैयार नहीं हूँ।

सिन्हा : देखो, वक्त बरबाद मत करो। वे लोग अपने बँगले पर सिर्फ सवा सात बजे तक हैं। उसके बाद वे···।

अपर्णा : मैं उन्हें नहीं जानती।

सिन्हा : क्या ? तुम मिस्टर और मिसेज़ पुरी को नहीं जानतीं।

अपर्णा : नहीं।

सिन्हा : दिमाग़ तो नहीं खराब है।

अपर्णा : जिनसे मेरा कोई काम नहीं, मैं उन्हें नहीं पहचानती। मैं जानती हूँ सिर्फ अपने पति को।

सिन्हा : अपना···।

अपर्णा : इतना जोर से मत बोलो, मैं बहरी नहीं हूँ···सब सुन रही हूँ···सब देख रही हूँ। जिस किसी से तुम्हारा काम खत्म हो जाता है, तुम उसे पहचानते हो ! ···तुम जहाँ से चले हो, कभी पीछे मुड़ कर देखा है। तुम जैसे-जैसे ऊपर बढ़े हो, क्या सबको छोड़ते नहीं गए। तुम अपने लोगों को भी पहचानने से इनकार करने लगे···तुम जीतकुमार को नहीं पहचानते। रोहित को नहीं पहचानते। मुझे नहीं जानते···अपने आप से भाग कर, किस कदर तुम अजनबी स्ट्रेंजर बनते चले जाओगे···।

सिन्हा : तुम समझती नहीं, परिचय का लोग नाजायज फायदा उठाते हैं। धीरे-धीरे नजदीक आते हैं···फिर ऐक्सप्लायट करना शुरू करते हैं।

अपर्णा : क्या तुमने ऐसा नहीं किया है ? क्या इस वक्त तुम मुझे ऐक्सप्लायट नहीं करना चाह रहे हो ? क्या तुम्हारा बॉस तुम्हें ऐक्सप्लायट नहीं कर रहा है ? क्या मैं तुम्हारा ऐक्सप्लायटेशन नहीं करती ? सारी जिन्दगी ऐक्सप्लायटेशन पर खड़ी है।

सिन्हा : दिस इज़ हारिबल।

अपर्णा : यस इन रीयलिटी, लाइफ़ इज़ हारिबल।

राधाबाई : साहब, कॉफी।

अपर्णा : ओवन में से साहब के लिए कुछ लेकर आओ।

राधाबाई : और···।

सिन्हा : मुझे और कुछ नहीं चाहिए। प्लीज चली भी जाओ। बहुत जरूरी है। सुनो मैं···।

अपर्णा : देखो, अपनी जरूरत पर तुम्हारी भाषा, सारा अंदाज़ किस तरह बदल जाता है।

सिन्हा : तभी मैंने इतनी तरक्की की है।

अपर्णा : पता नहीं।

सिन्हा : तभी मैं लोगों से इतना काम ले लेता हूँ। लोग डरते हैं, तभी काम करते हैं।

अगर डर न हो तो कोई काम न करे ।

अपर्णा : तुम भी डर के मारे काम करते हो ।

सिन्हा : बिल्कुल, डर आज बड़ी चीज है ।

अपर्णा : हाँ, डर के साथ अगर लालच जुड़ जाए, तो क्या कहने !

सिन्हा : कामचोर लोग हर वक्त हमसे परिचय बढ़ाने की तलाश में रहते हैं । पर्सनल स्टाफ़ से पूछते रहते हैं कि साहब किस जाति के हैं । कहाँ के रहने वाले हैं, इनकी बीवी कहाँ की है, इनके माँ-बाप कौन हैं, कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं । कौन इनके मिलने-जुलने वाले हैं । मतलब, ये लोग सिर्फ इतना जान लेना चाहते हैं, कि यह भी हमारी तरह एक आदमी है, बस । अगर हमारी ही तरह यह आदमी है, तो आदमी की बात आदमी क्यों माने । आदमी के अधीन कोई क्यों काम करे ? इनसे काम लेने के लिए चाहिए एक दूरी, जितनी बड़ी दूरी होगी मातहत और अफसर के बीच उतनी ही उनकी मजबूरी काम करने के लिए । तुम्हें क्या पता, काम कैसे लिया जाता है । काम कैसे होता है ।

अपर्णा : (हँसकर) सच, सब कुछ तुम्हीं जानते हो ।

सिन्हा : इसमें हँसने की क्या बात है !

अपर्णा : क्योंकि तुम अपने आपको नहीं जानते ।

सिन्हा : ये सब फजूल की बातें हैं ।

[अपर्णा हँसती रहेगी ।]

सिन्हा : नानसेन्स ! पूजा-पाठ करती रहो । घण्टी बजाओ, पति को परमेश्वर मानो, मगर उसकी एक बात भी न मानो ।

अपर्णा : च···च···च···।

सिन्हा : रियली आई एम सो लोनली ।

अपर्णा : एण्ड स्ट्रैन्जर···आउट साइडर (हँसी) पश्चिम की सारी टैक्नोलोजी के साथ पश्चिम की बीमारियाँ भी तो इम्पोर्ट हुई हैं ।

सिन्हा : मैं···मैं खुद जा रहा हूँ मिस्टर पुरी के यहाँ । तुम सोचती हो तुम्हारे बिना··· मैं अकेले ही सब कुछ कर सकता हूँ । मैंने···मैं···।

[कुछ उठाने-खोजते-ढूंढ़ने का अभिनय करता है ।]

अपर्णा : क्या ढूंढ़ रहे हो ।

सिन्हा : तुमसे मतलब ।

अपर्णा : देखो-देखो···यह क्या फेंक रहे हो ।···देखो, यह क्या है। तुम्हारा वह आईडेंटिटि कार्ड···देखो, जब तुम पढ़ रहे थे । अपनी ओरीजिनल फोटो देखो ।

सिन्हा : क्या कूड़ा जमा कर रखा है ।

अपर्णा : यही कूड़ा-करकट हमारी जड़ है ।

सिन्हा : यह क्या है । यहाँ क्यों रखा है ।

अपर्णा : ये ड्रामे की वे पांडुलिपियाँ हैं, जिन्हें हमने अपने हाथों से लिखा था···देखो अपनी ओरीजिनल हैंडराइटिंग। कितनी खुशनुमा है। लो पढ़ो इसे।

सिन्हा : मुझे जाना है।

अपर्णा : लो अपनी ही लिखी हुई एक लाइन पढ़ लो।

सिन्हा : जिद मत करो, मुझे अब नहीं पढ़ना। मैं जहाँ से गुजर जाता हूँ, फिर लौट कर नहीं देखता।

अपर्णा : मगर तुम उससे अलग नहीं हो सकते।

सिन्हा : उससे माने ?

अपर्णा : जिनसे तुम गुजर कर बड़े हुए हो···जहाँ से हम निकले हैं···जो हमारी जड़ें हैं।

सिन्हा : बकवास।

अपर्णा : बकवास से तुमने प्रेम किया है। बकवास अपर्णा से तुमने शादी की। वे बकवास ड्रामे तुम्हें इतने प्रिय क्यों थे ? ड्रामे में मेरे साथ ऐक्टिंग करने के लिए तुम तड़पते थे। तुमने नाटक लिखने शुरू किए थे। तुम्हारी ऐक्टिंग की चारों ओर इतनी वाहवाही थी। तुम्हें क्रियेटिव लाइफ़ इतनी पसंद थी···।

सिन्हा : ड्रामा···ऐक्टिंग···थियेटर···'क्रियेटिव लाइफ़' सब बकवास है। कोई पूछने वाला नहीं। भूखों मरना। कोई घास नहीं डालता। किस-किस की जी-हजूरी करो, खुश रखो···।

अपर्णा : जो ढूंढ़ रहे थे, पा गए।

सिन्हा : पता नहीं मैं क्या ढूंढ़ रहा था।

अपर्णा : अब तो यूँ भी साढ़े सात बज गए। क्यों न इस गुलदस्ते को तुम मुझे प्रेजेन्ट कर दो। मैं इसे अपने बेडरूम के फ्लावर पौट में सजा दूंगी। रात-भर तुम चीफ़ इंजीनियर बनने का ख्वाब देखते रहोगे, और रात-भर यह रजनीगंधा का गुच्छा महकता रहेगा।

सिन्हा : इस फूल को तुम अपने भगवान की पूजा में नहीं चढ़ा सकतीं।

अपर्णा : जी नहीं। होता है पूजा में चढ़ाना···चढ़ाना माने देना। जीवन में इस्तेमाल करना। इसे हम चढ़ा नहीं सकते, इस्तेमाल कर सकते हैं। **(गुलदस्ते को खोलने की आवाज)** अब इसे काटने के लिए कैंची, ब्लेड या···राधाबाई···राधा··· **(जाती हुई आवाज)**

[कट टू फोन की घंटी।]

सिन्हा : (उठना) यस सर। जी···जी···जी हाँ···मैं अभी जाता हूँ सुधीर टंडन के पास। जी, आप कब तक डिनर से लौट आएँगे। जी···मैं ग्यारह बजे बँगले पर हाजिर रहूँगा। थैंक्यू सर। **(रखना)** सुनो, मैं जा रहा हूँ। **(जाता है।)**

[कार का स्टार्ट होना···जाना।]

अपर्णा : ओ राधाबाई, कहाँ थी ?

राधाबाई : जरा पान खाने गई थी। बोलो न, क्या माँगता ?

अपर्णा : राधाबाई, तुम पान खाने के बहाने बाहर जाती हो, लोगों से हँस-हँस कर बात करती हो, क्या बात करती हो ?

राधाबाई : ओ, हम ओनली अपने साउथ इण्डियन मलियाली से ही बात करता। हम आपस में बोल कर भी हैप्पी हो जाता।

[बजर की आवाज]

राधाबाई : देख लेना, रोहित साहब आए हैं।

अपर्णा : नहीं, दुर्गा ही होगी।

[दरवाजा खुलना]

अपर्णा : हैलो दुर्गा। नाइस टू सी।

दुर्गा : चलिए, आइए कहीं घूम आएँ।

अपर्णा : सीधे क्यों नहीं कहती···रोहित को बुला दो। अभी लो···इसमें घूमने जाने की क्या बात है। फोन का नम्बर मिलाना।

दुर्गा : रोहित अपने दफ्तर में नहीं है। जेम्स कन्सट्रक्शन के सुधीर टंडन उसके पीछे पड़े हुए हैं। राक्स डिजाइन और गार्डन लेआउट के रोहित ही स्पेशलिस्ट हैं··· फाउन्टेन का कोई मामला उलझ गया है।

अपर्णा : रोहित की बोली···ही मस्ट चार्ज फार हिज़ हैल्थ एण्ड ऐडवाइस। कोई एहसान नहीं है।

दुर्गा : रोहित कहते हैं···अंकल सिन्हा की प्रेस्टीज का सवाल है। राकगार्डन की सफलता पर ही उनकी चीफ़ इंजीनियरी की तरक्की जुड़ी हुई है।

अपर्णा : हुअँ ! वह चारों तरफ़ से ऐक्सप्लायट हो रहा है···मिलना-जुलना उसे खाक नहीं। फिर वह तुमसे शादी कैसे करेगा। शादी के लिए, घर-गृहस्थी जमाने के लिए इतने सारे पैसे चाहिए।

दुर्गा : कोई बात नहीं।

अपर्णा : देख लो, इस दुनिया में आज एक ओर सिन्हा साहब जैसे लोग हैं, जो बिना मतलब के किसी को पहचानते ही नहीं, दूसरी ओर सुधीर टंडन जैसे कन्ट्रैक्टर हैं, जो जरा-सी पहचान का भी इस्तेमाल करने से नहीं चूकते। दिस इज़ लाइफ़।

दुर्गा : आंटी, कोई और बात करो।

अपर्णा : तो फिर जा कर वी० डी० ओ० फिल्म देखो और कल्पना की दुनिया में खो जाओ।

[दोनों को हँसना]

अपर्णा : देखो दुर्गा, जो दूसरों की नजरों से अपने-आपको देखता है, उससे बड़ा अभागा और कोई नहीं हो सकता। फिर रात-दिन दूसरों को ही देखते रहो···फलाँ यह, फलाँ वह, वह वो हो गया, मैं यह रह गया···नॉनसेंस।

दुर्गा : चलिए आंटी, कहीं घूम आएँ।

अपर्णा : तुम्हारी-रोहित की शादी हो जाएगी, हम एक साथ रहेंगे।

दुर्गा : वंडरफुल। रियली···वंडरफुल।

अपर्णा : यह कोई रहने की जगह है। कालोनी···आफिसर्स कालोनी···कलोनियल माइंड के ये खचरे आफिसर्स···दिन-रात जलना, हर वक्त हाय-हाय करते मरना···किसी को हाईब्लडप्रेसर, शुगर, हाईपरटेंशन···छी! खुदगर्ज···मीन एण्ड ग्रीडी। देखो न, मेरे कितने खूबसूरत दो बच्चे हैं—केनू और सोनू! इस खुदगर्ज हरिश्चन्द्र सिन्हा ने उन्हें नैनीताल पब्लिक स्कूल के हौस्टिल में डाल दिया···'डाल दिया' हाँ, यही इक्जैक्ट शब्द थे मेरे पति देव के···'डाल दिया' जैसे मूली-गाजर का कोई गट्ठा हो। गोदाम में डाल दिया···।

[बजर]

दुर्गा : कौन ?

जीतकुमार : जी, मैं जीतकुमार हूँ। आंटी जी हैं।

अपर्णा : आओ-आओ जीत···बैठो···कैसे हो ?

जीतकुमार : प्रणाम आंटी जी, सब आपका आशीर्वाद है।

अपर्णा : मिलो, यह दुर्गा है। इसे मैंने अपनी बेटी बनाया है।

जीतकुमार : पर आप दोनों तो सगी बहनें लगती हैं।

अपर्णा : अरे, सब सगे हैं रे। यह जीतकुमार है···सिन्हा साहब की इसने बड़ी सेवा की है, इतनी मदद और सेवा कि बता नहीं सकती। और इसे आजकल सिन्हा साहब ने सस्पेंड कर रखा है···इसके खिलाफ़ डिपार्टमेंटल इनक्वायरी अलग से चल रही है।

जीतकुमार : आंटी जी, आपसे जो मुझे सच्चा स्नेह, आशीष और जिन्दगी की समझ मिली है, उसके आगे यह कुछ नहीं है।

अपर्णा : देख रे जीत, बेटे, तू खामखा इमोशनल न हुआ कर, नहीं तो बेटा तू मरेगा।

जीतकुमार : मरना तो है ही आंटी, यहाँ कौन रहेगा !

[दुर्गा का चाय-पानी ले आना।]

दुर्गा : लीजिए, कुछ जलपान कीजिए।

अपर्णा : देखा, यह कितनी समझदार है। चुपचाप गई और ले आयी।···रोहित है न। अरे वही रोहित···!

जीतकुमार : जी हाँ, आर्चिटेक्ट इंजीनियर···रोहित···।

अपर्णा : हूँ, वही। यह रोहित की फियाँसी है। जानता है, फियाँसी क्या होती है। खाक जानता है।

दुर्गा : आप भी आंटी···लीजिए, आप भी चाय पीजिए।

अपर्णा : मतलब मेरा मुँह बंद करना चाहती हैं। **(चाय पीकर)** अरे जब पति लोनली

अकेला और स्ट्रैन्जर अजनबी पागलों की तरह दिन-रात काम और जी-हुजूरी करेगा तो उसकी बीवी अकेली बक-बक न करेगी···

[साँस फूल जाना। खाँसी, जैसे दम घुटने लगा हो।]

दुर्गा : पानी। पानी लीजिए आंटी।
जीतकुमार : आंटी, चुपचाप लेटी रहिए।

[साँसें—कराह के साथ।]

अपर्णा : नहीं, मेरे पास बैठी। अपने हाथ मुझे दो (**टूटती साँस**) जी कहता है, सारी दुनिया के साथ हँसूँ, खेलूँ···सबसे मिलकर···।
दुर्गा : आंटी, बोलिए नहीं।
अपर्णा : राम-राम। मेरे ठाकुर जी।
दुर्गा : डाक्टर को फोन करूँ।
अपर्णा : नहीं रे।
दुर्गा : सिन्हा साहब को फोन करूँ।
अपर्णा : कहाँ ढूँढ़ेगी उन्हें। वही तो खो गए हैं। (**अजीब-सी हँसी**) ऐसे क्यों देख रहे हो ! ऐसे मत देखो मुझे।
राधाबाई : क्या हो गया मेम साहब।
अपर्णा : वही रे···वही साँस उखड़ जाना।
राधाबाई : आपको सादा पान खिलाती हूँ। यह खाओ मेम साहब। खा लो। चबाओ। हाँ ऽऽ···। देखा···

[अपर्णा पान चबाती है]

राधाबाई : लो अब पानी पी लो। लो घूँट जाओ। हाँ ऽऽ।
अपर्णा : आह ! मैं बिल्कुल ठीक हूँ।
राधाबाई : यह आपको तीसरी बार अटैक पड़ा है मेम साहब, आपको चेक-अप कराना चाहिए।
जीतकुमार : आंटीजी, चलिए आपको नर्सिंग होम में···।
अपर्णा : देखो-देखो···इसकी हिमाकत, मेरे पति ने इसे सस्पेंड किया है। यह मुझे नर्सिंग होम में ले जा रहा है।
जीतकुमार : आपके लिए मैं अपनी जान दे सकता हूँ (**गला भर आना**) आपसे ही मैंने जाना···जीवन का अर्थ है—अपनी जड़ों से जुड़े रहना···जड़ों को खोजते रहना···। (**रो पड़ता है**)
अपर्णा : अरे रोता क्यों है रे !
जीतकुमार : यही हूँ मैं। मेरी जड़ें आँसुओं में हैं।
अपर्णा : वाह ! क्या बात कही है। जीत बेटे, वह गजल सुना···ग़ालिब की···वह क्या

कलाम था···आइना देख अपना-सा मुँह लेके रह गए···।

जीतकुमार : (बड़े दर्द से—)

बेदाद-ए-इश्क से नहीं डरता मगर असद
जिस दिल पे नाज़ था मुझे वो दिल नहीं रहा !
आइना देख अपना-सा मुँह लेके रह गए।
साहब को दिल न देने पे कितना गुरूर था···।

दुर्गा : लो आंटी, आप भी रोने लगीं।

अपर्णा : सब की जड़ में यही एक समान खारा पानी है रे। चाहे इसे पसीना कहो, चाहे आँसू।

जीतकुमार : वाह !

अपर्णा : वाह ! वाह क्या ! अभी यह तीसरा अटैक था। चौथे में खेल खतम।

दुर्गा : नहीं आंटी, ऐसे मत बोलिए, प्लीज़।

जीतकुमार : हम कहाँ जाएँगे फिर ?

अपर्णा : अरे देखो न, सिन्हा साहब को मैं छोड़ नहीं सकती। सिन्हा साहब को अपने अलावा और किसी जरूरत नहीं। एक दिन वह मुझे ही नहीं पहचानेंगे। जब वह चीफ़ इंजीनियर हो जाएँगे, फिर मैं इससे भी बड़े बंगले में अकेली बैठी रहूँगी, दीवारों से बातें करती-करती···(हँसना) अटैक पड़ेगा···कोई आस-पास तो होगा नहीं···(हँसना)

[हँसना। मिक्स संगीत—राकगार्डन बनने का। मशीन चलने, पत्थर टूटने का प्रभाव···रोलर चलना।]

सिन्हा : इधर आओ···सुनो।

मजदूर : का है हुजूर।

सिन्हा : कान्ट्रैक्टर साहब किधर हैं। सुधीर टंडन।

मजदूर : हमें का पता साहब।

सिन्हा : कमाल है। कहीं उनका अता-पता ही नहीं। ड्राइवर। जीप मोड़ो। उधर चलो, उधर।

[जीप चलना]

सिन्हा : रोको जीप। (रुकना) रोहित ! रोहित !

रोहित : (दूर से) यस सर।

सिन्हा : रुको वहीं···मैं खुद आ रहा हूँ।

[चलना। आवाजें।]

रोहित : आपने क्यों तकलीफ़ की।

सिन्हा : सुधीर टंडन किधर हैं।

रोहित : वह तो शायद बैंगलौर गए।

सिन्हा : बैंगलौर। यहाँ का काम छोड़कर। ऐसे वक्त, जब इसके कम्प्लीशन की तारीख के कुल सत्तरह दिन रह गए। आज से बाईसवें दिन वहाँ उस जगह उस पार्क में, वहाँ उसी फाउन्टेन के पास फौरेन डेलीगेट्स की लंच होस्ट किया जाएगा। अठारह तारीख को मंत्री महोदय इस राकगार्डन का उद्घाटन करेंगे।

रोहित : डोंट वरी अंकल। सब पूरा होगा···दिस इज़ माई रैसपौन्सिबिलिटी।

सिन्हा : रोहित तुम···।

रोहित : अंकल, आप बिल्कुल परेशान न हों। सुधीर टंडन को राकगार्डन के बारे में ए बी सी तक नहीं पता। ये लोग गरीब ठेकेदारों से काम लेते हैं···सड़कें बनाना जानते हैं···वह भी कभी साइट पर नहीं जाते···होटलों में बैठे रहते हैं···अफसरों से मिलकर कान्ट्रैक्ट बटोरते हैं।

सिन्हा : ओ माई गौड।

रोहित : अंकल, मुझे मालूम है, यह राकगार्डन आपकी प्रेस्टिज है। इसी की सफलता पर आपको चीफ़ इंजीनियरी मिलेगी।

सिन्हा : यह तुम्हें कैसे मालूम ?

रोहित : सुधीर कह रहा था।

सिन्हा : क्या ?

रोहित : आपके बॉस पुरी साहब भी कह रहे थे।

सिन्हा : सच ? क्या कह रहे थे।

रोहित : मैं उस राक के नीचे लेआउट चेक कर रहा था, पुरी साहब और चीफ़ सेक्रेट्री शंकर साहब के बीच बातें हो रही थीं।

सिन्हा : क्या ?

रोहित : यही···कम्पलीशन के दूसरे दिन ही आप चीफ़ इंजीनियर बना दिए जाएँगे··· यू विल सुपरसीड···।

सिन्हा : यस···यस···आई विल सुपसीड टैन आफिसर्स।

[आई···आई···सुपरसीड का इको। नया सीन—टेलीफोन उठाना।]

सिन्हा : हैलो···यस सर। जी···यस सर···समय से दो दिन पहले ही कम्प्लीट हो गया राकगार्डन···जी हाँ सर, योर गुड विसेज। थैंक्यू सर। (फोन रखना।)

सिन्हा : सुनो···अपर्णा।

अपर्णा : बड़े खुश नजर आ रहे हो।

सिन्हा : आज रात पुरी साहब अपने यहाँ हमें डिनर दे रहे हैं। शंकर साहब भी आ रहे हैं।

अपर्णा : मैं रोहित और दुर्गा के साथ काली मंदिर जा रही हूँ शाम को। मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकूँगी।

सिन्हा : क्यों ?

अपर्णा : काम है बहुत जरूरी।

सिन्हा : सबसे जरूरी है तुम्हारा मेरे साथ साहब के डिनर पर जाना।

अपर्णा : क्यों ?

सिन्हा : क्यों क्या होता है ?

अपर्णा : क्यों क्यों ही होता है, जिसका हर वक्त जवाब देना होता है।

सिन्हा : मेरे क्यों का जवाब दो।

अपर्णा : कभी मेरे क्यों का जवाब दिया है ?

सिन्हा : फिजूल बातें। घर में बैठी-बैठी बातें-बातें-बातें।

अपर्णा : सिन्हा साहब, चिल्लाइए नहीं। कम डाउन। लीजिए, ठंडा पानी पी लीजिए।

[हाथ से मारना। गिलास टूटना]

अपर्णा : बिल्कुल बच्चे हैं आप···श्री हरिश्चन्द्र सिन्हा साहब।

सिन्हा : जो हूँ वह हूँ।

अपर्णा : यही तो जड़ की बात है···जो आप हैं, वह नहीं हैं। जो आप हैं, उसे कभी खोजा नहीं। जो हैं उसे कभी कबूल नहीं किया। जो नहीं हैं वही बनने के लिए भागते रहे। कुत्ते की तरह दुम हिलाते रहे। जरा-सी हड्डी के लिए···डिनर टेबुल से साहब का जूठन नीचे गिरे तो···।

सिन्हा : अपर्णा। माइंड योर लेंग्वेज।

अपर्णा : माई डियर ! कभी अपनी भी लेंग्वेज को माइंड किया है। आपने जीतकुमार को नहीं पहचाना। रोहित को नहीं जानते।

सिन्हा : नानसेन्स।

अपर्णा : रोहित ने नहीं जीतकुमार ने मुझे बताया—सुधीर टंडन तुम्हारे बॉस पुरी साहब के इशारे पर काम से भाग गया···ताकि समय से राकगार्डन कम्प्लीट न हो सके। यह रोहित है—रोहित जिसने तुम्हारे लिए राकगार्डन इस तरह कम्प्लीट किया।

[हवा में पत्थर का टूटना। संगीत फेड्स इन सिन्हा]

सिन्हा : मेम साहब कहाँ हैं ?

राधाबाई : मेम साहब नैनीताल गया।

सिन्हा : क्या ?

राधाबाई : रोहित बाबू और दुर्गा हैं न—दोनों का शादी करा दिया। कालीबाड़ी में शादी हुआ। नैनीताल साथ ले गया। हनीमून होता है कुछ···।

सिन्हा : ओ गौड।

राधाबाई : लाइट ऑन कर दूँ साहब ?

सिन्हा : नहीं, जाओ। मैं खुद कर लूँगा। वे लोग कब गए ?

राधाबाई : मार्निंग में गए। मेम साहब कहता, हम नैनीताल से अपने बच्चों को लेकर

आएगा। उन्हें अकेला नहीं छोड़ेगा।

सिन्हा : कैसे गए वे ?

राधाबाई : पता नहीं साहब।

सिन्हा : ओह् (**फोन मिलाना**) किसे फोन करूँ। कोई भी तो नहीं। राधाबाई !

राधाबाई : जी साहब।

सिन्हा : अपन को पता है···मैं चीफ़ इंजीनियर हो गया। हाँ, मैं चीफ़ हो गया चीफ़।

राधाबाई : साहब हमकू इनाम मिलेगा।

सिन्हा : यह किसकी तस्वीर है। लाइट ऑन करो। सारी लाइट ऑन।

[लाइट ऑन करने की आवाज़]

सिन्हा : किसने लगाया ? यह मैं। मेरे आइडेंटिटि कार्ड से मेरा फोटो एनलार्ज कर यहाँ लगा दिया···। हरीश···यह हूँ मैं ! यह है मेरा नाम। मैं कौन हूँ। वह या मैं ?

[मैं···मैं···का इको।]

सिन्हा : अपर्णा ! कहाँ हो तुम ?

अपर्णा : (**इको**) तुम कहाँ हो हरीश ?

सिन्हा : देखो।

अपर्णा : (**इको**) हाँ देखो, खोजो।

सिन्हा : कहाँ ?

अपर्णा : देखो अपने आईने में।

सिन्हा : कहाँ ? कैसे ?

अपर्णा : अंडरग्राउंड···। रूट्स।

सिन्हा : क्या ?

अपर्णा : सबकी जड़ें एक ही खारे पानी में हैं।

सिन्हा : अपर्णा ! कहाँ हो तुम ?

अपर्णा : तुम कहाँ हो ? खोजो। देखो। खोजो अपने-आपको, अपनी-अपनी रूट्स को···

[दरवाजे पर बजर]

सिन्हा : कौन ? (**खोलना**) ओह, शंकर आप ! सर आप···।

शंकर : क्यों, मैं तुम्हारे यहाँ नहीं आ सकता ?

सिन्हा : सर बैठिए···आपने सचमुच बड़ी कृपा की।

शंकर : सोचा, चलकर तुम्हें बधाई दे दूँ।

सिन्हा : आप ही की कलम से तो मुझे यह तरक्की मिली है। वरना मेरे बॉस पुरी साहब ने मेरी जड़ काटने की कोई कसर नहीं उठा रखी।

शंकर : (**हँसकर**) भई, यह जड़ काटने की बात खूब कही। पेड़-पौधों की जड़ें तो जरूर दूसरा काटता है, मगर इन्सान अपनी जड़ें खुद काटता है···। क्योंकि अपनी जड़ें मनुष्य खुद जानता है, दूसरे को क्या पता। (**हँसना**) नहीं समझे ? जड़ें दिखती

नहीं। जमीन के नीचे पाताल के अन्धकार में छिपी होती हैं···उन्हीं से मनुष्य खुराक लेता है···जैसे पेड़ लेते हैं।

सिन्हा : आह! यह पहली बार सुन रहा हूँ सर।

शंकर : पेड़-पौधों के चारों ओर हवा बहती है, धूप में जलते हैं, पानी में भीगते हैं···इन सब चीजों को पेड़-पौधे खुराक बना लेते हैं। मनुष्य के सम्पर्क में जो कुछ आता है, वही तो उसका है। उसका है तभी तो उसके पास आया है, क्यों?

सिन्हा : जी सर! मगर पुरी साहब के लिए मैंने जितना किया, मैं···।

शंकर : ओ हो हो हो। यह जो 'मैं' है न, आई···सारी खुराफात की जड़ यही है। 'मैं' का चक्कर ही गजब है। हर 'मैं' सोचता है···मैं उस 'मैं' से अलग हूँ। पर है नहीं।

सिन्हा : मैंने पुरी साहब के साथ···।

शंकर : फिर वही बात। देखो भाई, ऊपर, सबसे ऊपर बहुत ही कम जगह होती है, सो वहाँ धक्कमधुक्का, उखाड़-पछाड़ नेचुरली है।

सिन्हा : सर, आप न होते तो···।

शंकर : अरे, मिसेज सिन्हा कहाँ हैं?

सिन्हा : सर, वह अचानक नैनीताल चली गईं। सर, क्या खातिर करूँ।

शंकर : बस खुश रहो, अब चलूँगा।

सिन्हा : सर, आपका यह अहसान कभी नहीं भूलूँगा।

शंकर : न जाने कितनों पर तुम्हारे भी अहसान होंगे।

सिन्हा : ओह!

शंकर : तुम्हारे ऊपर भी कितने अहसान दूसरों ने किए होंगे। यही है जड़ की बात।

सिन्हा : आपकी इतनी कृपा!

शंकर : कृपा तुम्हारी भी है मुझ पर···आज से साठ साल पहले मेरे छोटे बच्चे का ऐक्सीडेंट हुआ था—याद है, या भूल गए, मैं नहीं भूल सकता···तब तुमने कितनी मदद की थी। 'मैं' अकेला तो कुछ नहीं है। 'मैं' तभी कुछ होता है···जब वह 'मैं से हम होता है···जब वह किसी का होता है। अकेला मैं तो पागलपन है···अकेला मैं···आई···फियर है···ग्रीड है···हिंसा है।

[सिन्हा के मानस में 'राक' टूटने के प्रभाव]

शंकर : अच्छा भाई सिन्हा, अब चलूँगा। घर पर कुछ मेहमान आए हैं। (सहसा) यह किसकी फोटो है?

सिन्हा : म···मेरी है सर।

शंकर : बड़ा सेंसिटिव···आर्टिस्ट का चेहरा है।

सिन्हा : मैं तो अपना यह चित्र बिल्कुल भूल गया था···मेरी वाइफ़ ने ब्लो-अप कराके ···यह मेरे आइडेंटिटि कार्ड का फोटो था।

[समापन संगीत शुरू]

शंकर : अच्छा, मिसेज सिन्हा, जैसे ही नैनीताल से लौटें, तुम्हारा मेरे घर डिनर।

सिन्हा : थैंक्यू सर। अब मैं अकेला नहीं आऊँगा। सपरिवार आऊँगा।···हम सब आएँगे ···मेरे बच्चे भी···।

[संगीत उभरेगा।]

ओह ! हे ईश्वर···मैं किस झूठी नकली दुनिया में···किस पत्थर के नीचे दबा पड़ा था···

[पत्थर टूटना। समापन संगीत]

खुशबू

[रेडियो सीरियल]

पात्र

सेठी साहब (उम्र 50 वर्ष)
चंद्रा (23 वर्ष)
राकेश (25 वर्ष)
डा० जैन (30 वर्ष)
कमला (45 वर्ष)
दयानंद (48 वर्ष)
केशव (22 वर्ष)
मोनू (22 वर्ष)
सुभाष (16 वर्ष)
डिम्पल (14 वर्ष)
रोशनी (32 वर्ष)
प्रसाद साहब (50 वर्ष)
सुधा (25 वर्ष)

: एक :

[प्रारंभिक संगीत के बाद अनेक लोग—स्त्री, पुरुष की मिलीजुली बातों का शोर —सुनिए बैठिए···देखिए, इतना तेज मत बोलिए···अरे भाई लड़ो नहीं···अरे आस-पास इतनी गंदगी है तो क्या करें···। आप चुप रहिए···बड़ी आई चुप कराने ···हाथ जोड़ता हूँ—शांत···खामोश साइलेंस प्लीज़। शोरगुल का धीरे-धीरे खत्म होना।]

दयानंद : डाक्टर जैन, आपको तो इस कालोनी के बारे में शुरू से अब तक सब कुछ पता है। कालोनी का नाम 'खुशबू विहार' आप ही का दिया हुआ है, पर कालोनी में कितनी गंदगी है कि···

रोशनी : (**बीच ही में**) गंदगी है···कीचड़ है···मलबा है, धूल है, मच्छर है, कारन कलोनी के बंदा-बंदी हैं। सच्च बोलूं हूं। केऊ का डर नाई पड़ो।

डा० जैन : रोशनी ! जरा चुप रह। चौधरी दयानंद जी को पहले बोल लेने दे।

रोशनी : बोल्लोजी।

दयानंद : डाक्टर जैन, देख लिया न रोशनी का रंग।

रोशनी : देक्खै मेरी जुत्ती। मैं चली झाड़ू बुहारी कन्नै···(**जाती-जाती**) कूड़ा हर कोई दूसरे के दरवज्जै पै फैंके।

दयानंद : 'खुशबू कालोनी' कुल सात साल पुरानी है। पीछे गाँव है। आगे महानगर। हम तो बीच में हैं डाक्टर साहब।

एक वृद्ध स्वर : न शहर के न गाँव के।

दूसरा स्वर : गाँव की बुराइयाँ लेकर आए—शहर की बुराइयाँ और ले लीं।

कमला : सनीमा-टेलीविजन तो था ही, ऊपर से वी० डी० ओ०, पी० पी० ओ०।

डा० जैन : पी० पी० ओ० ? यह क्या है ?

कमला : हमारे चौधरीजी से पुच्छो।

दयानंद : (**हँसते हुए**) पी० पी० ओ० माने पब्लिक को पतन में ले जाने का औजार।

[सबका हँसना]

डा० जैन : हाँ तो भाई, अपन ने सबी शिकायत नोट कर ली—कालोनी की सिक्योरिटी, खुले गंदे नाले की बदबू। दिन-दहाड़े चोरी-सीनाजोरी, लड़के-लड़कियों की आवारागर्दी···आपस में मन-मुटाव···कालोनी में दुकानों की भरमार···।

हैल्थ हाइजीन समस्या···।

एक स्वर : सबसे बड़ी समस्या तो सेठी साहेब हैं—कई बिजनेस करते हैं—कुछ सामने, कुछ इधर। कुछ बाहर कुछ भीतर।

दूसरा स्वर : बाहर से चोर-उचक्के, गुंडे, अपराधी सेठी साहब की वजह से आते हैं।

दयानंद : जी हाँ, इस बीच तीन फ्लैट और उन्होंने खरीद लिए हैं। एक में तम्बू-कनात, कैटरिंग, दूसरे में वीडियो पार्लर, तीसरे में ब्यूटी कार्नर···

[सहसा दो तरफ से संगीत उठना—एक तरफ से फिल्मी, दूसरी तरफ से वेस्टर्न म्यूजिक]

दयानंद : ये सुनिए डाक्टर जैन वीडियो पार्लर से सिनेमा संगीत और ब्यूटी कार्नर से वेस्टर्न म्यूजिक···। कच्ची उम्र के बच्चों पर इसका बुरा असर पड़ रहा है।

[संगीत का धीरे-धीरे खत्म होना। अचानक बंद दरवाजे पर हलकी दस्तक। धीरे से दरवाजा खुलना।]

सुभाष : डिम्पल।

डिम्पल : हाय सुभाष··· (**फिल्मी अन्दाज से गाकर—**)

आई आई आई मैं तो आई···।
देखो, मैं क्या ले आई, ले आई···लाई।

सुभाष : फिल्म कैसेट। स्कूल नहीं गई?

डिम्पल : स्कूल से खिसक आई। तुमसे मिलने। मुझे पता था तुम्हारे घर में कोई नहीं होगा। ओ० के० चलो, फिल्म देखें।

सुभाष : तुम तो जानती हो, मेरे यहाँ वी० सी० आर० नहीं है।

डिम्पल : अरे यार, मेरे यहाँ तो है।

सुभाष : तुम्हारे घर में कोई नहीं?

डिम्पल : यार, घर में कौन रहता है। चलो, मेरे साथ। फिल्म देखेंगे जैसे हीरो-हीरोइन करेंगे, वैसे ही हम करेंगे।

सुभाष : डिम्पल, मुझे डर लगता है।

डिम्पल : किसका?

सुभाष : सबका। मेरे पिताजी, माँजी, फिर दोनों भाई, ताऊजी···।

डिम्पल : बस, बस···बुद्धू कहीं का। जब मैं तेरे साथ हूँ तो डर किसका?

सुभाष : तुझे किसी का डर नहीं?

डिम्पल : सिर्फ तेरा डर है मुझे और किसी का नहीं। (हँसना-गाना) 'प्यार किया तो डरना क्या'···चल ना।

सुभाष : कहाँ?

डिम्पल : जहन्नुम में। (**हँसना**) चल ना।

सुभाष : कोई देख लेगा कालोनी में तो? कई लोग बातें करने लगे हैं।

डिम्पल : क्या ? व्हाट ?
सुभाष : आजकल इतनी कच्ची उमर के लड़के-लड़कियाँ···
डिम्पल : रियली ? आई लव यू सुभी।
सुभाष : मुझे सभी अच्छा नहीं लगता।
डिम्पल : मुझे सुभाष नहीं अच्छा लगता···(हँसना-गाना)
सुभाष : कोई सुन लेगा—धीरे-धीरे।
डिम्पल : मैं एक बहादुर लड़की हूँ। मेरा नाम सिम्पल नहीं डिम्पल है।

[कालबेल]

सुभाष : अरे बाप रे, कोई आ गया। छिप जा। इधर···यहाँ। ऐसे।
डिम्पल : मैं इतनी डरपोक नहीं। तू सरकारी स्कूल में पढ़ता है। मैं कान्वेंट में पढ़ती हूँ। (पुकारना) कौन है ?
आवाज : दरवाजा खोलो।
डिम्पल : आप कौन हैं ?
आवाज : चंद्रा।

[दरवाजा खुलना]

चंद्रा : और कोई नहीं ?
डिम्पल : नो। कोई नहीं।
चंद्रा : ये राशन कार्ड है चौधरी दयानंद का। यहाँ रख देती हूँ।
सुभाष : (अचानक, दूर से) नमस्ते चंद्राजी, बात यह है कि···
चंद्रा : कोई बात नहीं सुभाष। खुश रहो।
सुभाष : बात ये है कि···।
चंद्रा : जा रही हूँ—दुकान पर कोई नहीं है। खुश रहो। (जाती है।)
डिम्पल : मुझे देखा तक नहीं—मैं कौन हूँ। पूछा तक नहीं। ऐसी लेडी···मुझे बहुत अच्छी लगती है। मैं इसी के स्टोर से चाकलेट, च्विंगम खरीदती हूँ। शी इज वेरी नाइस एंड वेरी स्मार्ट···

[संगीत—चेंज ओवर।]

कमला : एजी, चंद्राजी ! कल साढ़े बारह बजे दिन में आपने मेरे घर सेठी साहब की सबसे छोटी छोकरी डिम्पल को देखा था—मेरे छोटे लौंडे सुभाष के साथ ?
चंद्रा : कमला माँजी, मैं तो आपका राशन कार्ड वापस करने गई थी। कुछ और देखने नहीं।
कमला : इसके माने यह हुआ कि और कुछ देखने को वहाँ था।
चंद्रा : मैंने और कुछ देखा नहीं।
कमला : मेरे पड़ोसी प्रसाद साहब की बेटी सुधा ने देखा···।
चंद्रा : पता नहीं।

कमला : मैं अभी मिसेज सेठी के पास जाती हूँ—हुर्रें, ये क्या तमाशा है। लेकिन इस समय तो मिसेज सेठी घर होतीं ही नहीं।

चंद्रा : माफ कीजिएगा, आप अपने घर में होती हैं ?

कमला : मेरा तो फ्लैटों में दम घुटै। चूहेदानी में जी न लगै। तो महिला संकीतन में ढोल बजाने जाऊँ !

चंद्रा : ये बात हुई न। यहाँ सब अकेले-अकेले हैं तो घर में, स्कूल में, अपने-अपने काम में किसी का जी कैसे लगे ? सब बहाना करते हैं अपने आप से भागने का।

कमला : मैं समझी ना तेरी बात।

चंद्रा : अकेलापन अच्छी चीज नहीं माँजी।

कमला : तेरी बात मेरी समझ ना आवै।

चंद्रा : अपने घर में रहा करो। बच्चों को अकेला मत छोड़ो माँजी। (रुककर) अपनी गलतियों पर पर्दा डालने के लिए दूसरे को दोषी ठहराना आम बात है।

कमला : मिसेज सेठी दिन-भर घर में नहीं होतीं।

चंद्रा : बताइए, अपने घर न आप होती हैं, न मिसेज सेठी, फिर अकेले बच्चे क्या करें ?

[संगीत—चेंज ओवर ! रोशनी की आवाज दूर से नजदीक आती हुई]

रोशनी : डरे मेरी जुत्ती। मैं केऊ से ना डरूँ, हाँ। सारा कूड़ा सीढ़ियों पै गेरें। बड़ी मेम-लाट बनती हैं। बात करन कू तमीज नेईं। चार अक्षर अंग्रेजी का पढ़ि लिया—'पलूसन' की बात करें। (रुककर) ला रे, बीड़ी पिला, आजु कूड़ा नाई उठाती। देखूं का कर लेती हैं। जैसे गरीब आदमी ना इसकी नजरों में। (बीड़ी दागना) मैं डाक्टर जैन को बोल दूंगी, हाँ नेईं तो। (सहसा) अरे डाक्टर जैन इधर कू ही आ रहे हैं।

डा० जैन : राम-राम रोशनी। किस पर नाराज हो रही है ?

रोशनी : अपनी किस्मत पर डाक्टर साहब। घर जाऊँ तो हरामजादा, नशाखोर जमादार उल्टी-सीधी बोलै। कलोनी मैं ये धक्काखाड़ी बीवियाँ चकर-चकर करें। ये लो, कहती हैं रोशनी सफाई ना करै। 'हाईजीन' का खियाल नेईं। 'पलूसन' करै रोशनी'''। अपना जो 'पलूसन' करें जे उसकी जरा भी फिकर नेईं।

डा० जैन : बिल्कुल ठीक कहती है रोशनी।

रोशनी : जब प्रेम नहीं तो 'पलूसन' होगा ही। वही कहावत—'अपना कूड़ा, दूसरे का घूरा'। सब दिखावा। असलियत गायब तो 'पलूसन' और का है ?

[डाक्टर की हँसी]

डा० जैन : 'पलूसन' का मतलब जानती है रोशनी ?

रोशनी : मैं तो रही गँवाइन। इत्ता जानूं हूँ डाक्टर साहब, 'पलूसन' माड़े गंदगी, और गंदगी दिमाग में होवै। सो दिमागी गंदगी माड़े 'पलूसन'।

डा० जैन : बिल्कुल सही।

[संगीत—चेंज ओवर]

दयानंद : राम-राम, डाक्टर साहब।

डा० जैन : आओ भई दयानंद जी।

दयानंद : एक गम्भीर समस्या है मेरी, डाक्टर साहब।

डा० जैन : बोलो-बोलो।

दयानंद : आप पहले इनको दवा दे लो। क्यों भाई मलिक साहब, आपको क्या हुआ ?

स्वर : क्या बताऊँ। अच्छा डाक्टर साहेब, नमस्ते।

डा० जैन : नमस्ते। जो कहा है उस पर ध्यान देना मलिक साहब। हाँ, चौधरी दयानंदजी, बोलिए, क्या समस्या है ?

[दूर से संगीत आना]

दयानंद : ये खिड़की बंद कर लो। सेठी के ब्यूटी पार्लर से म्यूजिक का शोर आ रहा है। (**खिड़की बंद होना**) ऐसा है डाक्टर साहेब, मेरा सबसे छोटा लड़का सुभाष 16 साल का है—ग्यारहवीं क्लास में पढ़ रहा है। पढ़ने में उसका जी नहीं लगता। पढ़ाई में कमजोर भी है। घर में ही घुसा रहता है। फिल्मी गाने सुनना, फिल्म देखना। बहुत कम बोलता-चालता है। लगता है, हर वक्त कुछ सोचता रहता है। नींद भी उसे कम आती है। भूख भी कम लगती है।

[दूर से रोशनी का गुस्सा—]

रोशनी : इहाँ कूड़ा क्यों गेरा ? दूसरे को गंदा खुद कर साफ रहोगी ? दिमाग खराब है बीवियों का।

डा० जैन : रोशनी सही बात करती है ! हाँ तो आप कह रहे थे···। हाँ सुभाष के बारे में इससे आगे भी एक बात है दयानंदजी, जिसे आप छिपा रहे हैं। बात ये है कि सुभाष का कोई साथी नहीं है। वह बिल्कुल अकेला है। उसकी दुनिया में अगर कोई साथी है, तो वह है सेठी साहब की सबसे छोटी लड़की—डिंपल, जिसकी उम्र है कुल चौदह साल। डिंपल की भी स्थिति वही है, जो सुभाष की है। इसलिए जिसका जैसा हाल, उसकी वैसी चाल।

दयानंद : ओ हो ! आप तो सब जानते हैं डाक्टर साहेब।

[एक ओर रोशनी का वही गुस्सा, दूसरी ओर वेस्टर्न संगीत]

डा० जैन : ये पूरी 'खुशबू कालोनी' हमारे सामने आबाद हुई है। सात सौ पचास फ्लैट की आबादी आबादी नहीं, एक बड़ा परिवार है मेरे लिए। यहाँ सबका दुख-दर्द मेरा जीवन है।

दयानंद : यह आपकी कृपा है डाक्टर साहेब।

डा० जैन : नहीं, यह मेरा फर्ज है और सबका अपना-अपना फर्ज है। आपकी मलिक—साहब, जो अभी अपने को दिखाने आए थे, उनकी भी वही समस्या है। कोई साथी नहीं। इसलिए मर्ज को, 'इलनेस' को ही अपना साथी बना लिया। वैसे इन्हें कोई रोग नहीं है। प्यार नहीं मिलता, यही समस्या है उनकी। सबकी यही समस्या है।

मगर असली समस्या है कि लोग चाहते हैं प्यार पाना। देना नहीं चाहते।

दयानंद : बिल्कुल सही कह रहे हैं डाक्टर साहेब। पाना सब चाहते हैं—देना कोई नहीं चाहता।

डा० जैन : देना क्या होता है—इसे जानना चाहिए।

दयानंद : क्या होता है डाक्टर साहेब ?

डा० जैन : देना माने दूसरे को जानना। लेकिन कालोनी में क्या, अपने घर में कोई किसी को जानना ही नहीं चाहता। सबका अकेलापन यही है 'पलूसन'।

दयानंद : ये क्या कह रहे हैं डाक्टर साहेब ?

डा० जैन : दयानंदजी, सबका अपना-अपना चरित्र है। सब सुख चाहते हैं। दुख कोई नहीं चाहता। सब आदर चाहते हैं। अनादर कोई नहीं चाहता। इसलिए कोई अकेलापन नहीं चाहता। सबको तलाश है साथी की···साथी-साथी, दोस्त बिना अकेले कोई नहीं।

[डिंपल-सुभाष की हँसी]

दयानंद : सुभाष ! सुनो बेटे। डिंपल ! सुनो बेटी।

डा० जैन : पुकारो नहीं। धीरे से उनके पास जाओ।

[समापन संगीत]

: दो :

[प्रारम्भिक संगीत के बाद डिम्पल और चंद्रा की बातचीत।]

डिम्पल : चंद्रा मैडम, आप दफ्तर में भी काम करती हैं, सुबह-शाम दुकान भी चलाती हैं, आप आराम कब करती हैं ?

चंद्रा : तुम जानती हो न डिम्पल, मेरी माँ नहीं है। मेरे पिताजी एक तरह से इन्वैलिड ही हैं। मुझे कई तरह के काम करने पड़ते हैं। तुम्हें क्या पता, तुम्हारी अभी उम्र ही क्या है ? मगर यह बताओ तुम इस वक्त मेरे पास आई कैसे ? क्या बात है ?

डिम्पल : (हँसती हुई) मुझे आपसे एक सलाह लेनी है। पर कैसे लूं ?

चन्द्रा : संकोच नहीं करो, जो कहना है साफ-साफ कहो।

डिम्पल : आप मेरी बात कभी किसी को बतायेंगी तो नहीं ? मुझे बड़ा अच्छा भी लग रहा है और डर भी लग रहा है। (खिलखिलाती हुई) नहीं, नहीं, डर की कोई बात नहीं है। मैं तो ऐसे ही कह रही हूँ। मुझे किसी बात का न तो डर है, न मैं किसी की परवाह करती हूँ। पर बात क्या है, यह तो बताओ ?

[डिम्पल कुछ बोलना भी चाहती है, खिलखिलाती भी है, फिर एकाएक साँस भरने लगती है।]

डिम्पल : मैं कैसे कहूँ··· (खिलखिला कर हँसती है)

चंद्रा : अरे डिम्पल, तू मुझसे राय लेने आई है या अपनी हँसी सुनाने। देख मुझे दफ्तर जाने को देर हो रही है, मेरी सवा नौ की बस छूट जाएगी।

डिम्पल : मैं सुभाष के साथ कहीं भाग जाना चाहती हूँ। मेरा उनके साथ प्यार है।

चंद्रा : क्या कह रही है तू ? तेरी उम्र क्या है ? मुश्किल से 14 साल की है। जानती भी है, प्यार क्या होता है ? भागने का मतलब भी जानती है ? खबरदार कभी ऐसा मत करना।

[इस दौरान डिम्पल खिलखिलाकर हँसती रहती है।]

डिम्पल : खैर, मैंने आपका विचार जान लिया। लेकिन आप मेरी यह बात किसी को बताइएगा नहीं। (हँसकर) मैंने एक फिल्म देखी थी जिसमें एक छोटी-सी लड़की एक लड़के से··· (हँसते हुए भाग जाना।)

चन्द्रा : अब मैं क्या करूँ। इसके माँ-बाप को बताऊँ या दयानंद चौधरी से कहूँ ? लेकिन डिम्पल ने मुझ पर इतना विश्वास किया है, उस विश्वास का क्या करूँ। (रुककर) मैं उसे समझाऊँगी। सुभाष से भी बात करूँगी। ऐसा भी हो सकता है कि डिम्पल मुझसे मजाक कर रही हो। आजकल के जरा-से लड़के-लड़कियाँ···

[चेंज ओवर संगीत]

दयानंद : डा० साहब, आपके पास सुभाष आया था।

डा० जैन : नहीं तो। क्यों क्या बात है ? चौधरी जी, आप इतने घबड़ाए हुए क्यों हैं ?

दयानंद : अरे डाक्टर साहब ! रात को सुभाष स्कूल से नहीं लौटा। उधर सेठी साहब की बेटी डिम्पल भी घर से गायब है। मुझे डर लग रहा है, कहीं दोनों···

डा० जैन : क्या ऐसा हो सकता है ?

दयानंद : आज क्या नहीं हो सकता !

डा० जैन : लेकिन अभी तो वे दोनों नाबालिग हैं। अगर ऐसा हुआ तो मामला सीरियस हो जाएगा। आप सेठी साहेब के यहाँ से आ रहे हैं ?

दयानंद : बिल्कुल। लेकिन उन लोगों को तो जैसे परवाह ही नहीं है। सेठी साहब ने कहा कि आप किसी को यह बात मत बताइए। दो-एक दिन में वे लौट आएँगे। वे कहीं पिकनिक पर गए होंगे। इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है ! ऐसा कहा मिस्टर सेठी ने मुझसे। लेकिन मेरे तो पैरों के नीचे से जैसे जमीन ही खिसक गई। मैं किसी को क्या मुँह दिखाऊँगा। सुभाष मेरा सबसे छोटा बेटा है, लेकिन कालोनी में एक सदस्य के नाते सेठी साहब की बेटी डिम्पल भी तो मेरी ही बेटी हुई।

डा० जैन : कोई खत-वत छोड़कर···मेरा मतलब कोई नोट छोड़कर गए हैं वे लोग ?

दयानंद : डिम्पल तो किसी से बात ही नहीं करती। या तो मेरे घर आती या मिस चंद्रा से बात करती है। अपने घर में तो उसका जैसे किसी से लेना-देना ही नहीं है।

[एकाएक थ्री व्हीलर स्कूटर का आकर रुकना]

डा० जैन : अरे ये तो मिस चंद्रा ही स्कूटर से उतर रही हैं। शायद इनके पिता की तबीयत ज्यादा खराब हो गई है।

[मिस चंद्रा का आना]

डा० जैन : आइए, आइए। मिस चंद्रा। नमस्कार।

चंद्रा : नमस्कार डाक्टर साहब।'''नमस्कार दयानंदजी।

डा० जैन : आज तो हमारा सौभाग्य है जो आप यहाँ आईं।

दयानंद : हाँ, ये तो बड़ी बिजी बहन हैं। सुबह छः बजे कालोनी में अपनी दुकान खोलती हैं। सबको दूध-पावरोटी, बच्चों का सामान, स्त्रियों की रसोई की चीजें। नये बच्चों के लिए तरह-तरह की खाने की चीजें, और सवा नौ बजे दफ्तर के लिए रवाना। ठीक छः बजे वापस आना और सात बजे शाम से रात नौ बजे तक फिर दुकान। पता नहीं कब आराम करती हैं, कब खाती हैं, कब सोती हैं !

डा० जैन : और फिर भी ये कितनी खुश और स्वस्थ हैं। (**रुककर**) हाँ, बताइए आपके पिताजी कैसे हैं ?

चंद्रा : पिताजी वैसे ही हैं। लेकिन अब सुबह-शाम चारपाई से उठकर कुर्सी पर बैठने लगे हैं। आपको याद किया है।

डा० जैन : पिताजी से मेरा प्रणाम कहिएगा। मैं डिस्पेंसरी बन्द करके सीधे ही उन्हें देखने आऊँगा। बोलिए आप कैसी हैं ?

चंद्रा : मैं ईश्वर-कृपा से बिलकुल ठीक हूँ।

दयानंद : चंद्रा बहन, आपको मालूम है डिम्पल और सुभाष दोनों कल से ही लापता हैं। आपका क्या अनुमान है। डिम्पल से कभी आपकी कोई बातचीत हुई ?

चंद्रा : (**सोचती हुई अपने-आप**) कमाल है, डिम्पल इतनी तेज निकली ! मैं तो कहाँ उसे समझाने की सोच रही थी। उसने यह क्या कर डाला ? (**प्रकट**) जी, डाक्टर साहब'''दयानंद भाई, ऐसा हो गया ? आपको पक्का मालूम है ? रुकिए खुद मैं पता लगाती हूँ।

डा० जैन : अरे आप बैठिए तो। आईं और चली जा रही हैं।

चंद्रा : डाक्टर साहब, यह बड़ी सीरियस बात है। इस तरह डिम्पल का घर से गायब हो जाना। उसकी अभी इतनी कच्ची उम्र है, नासमझ है।

दयानंद : मैं भी चलूँ बहन तुम्हारे साथ ?

चंद्रा : नहीं, पहले मुझे देख लेने दीजिए।

[चंद्रा का उसी स्कूटर से वापस जाना]

डा० जैन : कितनी जिम्मेदार हैं मिस चंद्रा ।

दयानंद : मैंने तो डाक्टर साहब, इस जैसी लड़की देखी ही नहीं । लोगबाग इसके बारे में न जाने क्या-क्या रिमार्क कसते हैं। पर इसने कभी किसी को जवाब नहीं दिया। औरतें भी न जाने क्या-क्या बात चंद्रा बहन के बारे में करती रहती हैं। 'पति ने तलाक दे दिया', 'बाँझ है बाँझ', 'अब इसकी कहाँ शादी होगी···' ।

[चेंज ओवर संगीत]

चंद्रा : (कालबेल बजाते हुए) कोई है ?

[भीतर से आवाज : कौन है ?]

चंद्रा : जी, मैं चंद्रा हूँ। 54 में रहती हूँ।

आवाज : क्या बात है ? क्या काम है ?

चंद्रा : मिस्टर या मिसेज सेठी दोनों में से कोई है ?

आवाज : जी नहीं, इस समय घर में कोई नहीं है ।

[चेंज ओवर संगीत]

दयानंद : चंद्रा बहन, यह बताइए, हम क्या करें ? सेठी साहब को तो कोई चिंता है नहीं । न मिसेज सेठी को कोई चिंता है । पर मेरे यहाँ तो तब से किसी ने कुछ खाया-पिया भी नहीं । सुभाष की माँ रो रही है। मेरे बच्चे कह रहे हैं कि अखबार में दो। पुलिस में खबर करो। आप बताइए चंद्रा बहन, क्या किया जाए ? इसमें तो बड़ी बदनामी है और मुझे तो ज्यादा चिंता डिम्पल की है।

चंद्रा : मेरा अपना अनुमान है, डिम्पल सुभाष को बहकाकर ले गई है । सुभाष ऐसा लड़का नहीं है । डिम्पल भी बुरी लड़की नहीं है। कच्ची उम्र की हवा में उड़ती हुई अबोध लड़की है, जिसे न माँ से प्यार मिला, न पिता से। जन्म से लेकर आगे की उम्र तक जिसने केवल पैसा ही देखा हो और पैसे से जुड़ी हुई जिन्दगी देखी हो, उसका अंजाम और क्या हो सकता है ?

दयानंद : लेकिन चंद्रा बहन, किया क्या जाए ? एक-एक दिन बीतने का मतलब है, बात का और बिगड़ते जाना ।

चंद्रा : हम अभी फिर सेठी साहब के मेन आफिस चलते हैं। उनसे हमारी मुलाकात जरूरी है।

दयानंद : इस बात में तो दम है, लेकिन सेठी साहब कहीं मिलें तब तो। मिसेज सेठी भी घर में नहीं मिलतीं ।

[चेंज ओवर संगीत । टाइपराइटर मशीन चलने की आवाज]

चंद्रा : लगता है, सेठी साहब आफिस में बैठे हैं।

दयानंद : ईश्वर करे उनसे हमारी भेंट हो जाए ।

[कालबेल बजाना। सेठी भीतर से ही—कौन ?

दयानंद : अरे सेठी साहब, हम लोग हैं।

[दरवाजा खुलना]

सेठी साहब : आइए-आइए, चौधरी दयानंदजी। चंद्राजी, आइए। बैठिए।

[टाइपराइटर की आवाज बंद]

दयानंद : टाइप वाला अपना काम खत्म कर लीजिए।

सेठी : जी नहीं, इतना कोई जरूरी नहीं है। टाइपिस्ट, अब कल आना। कल सुबह मेरे घर पर फोन कर लेना छः और सात के बीच में।

टाइपिस्ट : यस सर।

सेठी : जी, बोलिए, क्या बात है ? कैसे आना हुआ ?

दयानंद : कमाल है, सेठी साहब, आपकी बेटी घर से गायब है और आप हैं कि··· जैसे आपको कुछ याद ही नहीं है।

सेठी : ओह, क्या बताएँ, इतनी बिजी जिन्दगी है कि सब कुछ भूल जाता हूँ।

चंद्रा : जी हाँ, सिर्फ पैसे के अलावा। बेटी से भी बड़ा रुपया है आप लोगों के लिए।

सेठी : जी हाँ, कुछ हद तक आप सही कह रही हैं। मगर बात ये है, ऐ···सा···है यू···नो···सुनिए, आपको···एक बात बताता हूँ···ऐसा है···।

चंद्रा : हम सिर्फ यह जानने के लिए आए हैं कि डिम्पल की कोई खबर आपको कहीं से मिली या नहीं। आपने उसकी कोई चिंता की ?

सेठी : ओ हो, हाँ, उसका तो टेलीफोन आया था मेरे पास—मसूरी के एक होटल से।

दयानंद : दोनों कुशल से तो हैं ?

सेठी : दोनों ? डिम्पल ने ही फोन किया था, उसने सुभाष के बारे में बताया ही नहीं।

चंद्रा : फोन पर उसने क्या बात की ?

सेठी : उसने सात हजार रुपये माँगे थे। मैंने होटल के मैनेजर से वे पैसे दिलवा दिए। वह कल-परसों में आ जाएगी।

दयानंद : आप तो सेठी साहब, इतने नार्मल ढंग से बात कर रहे हैं जैसे बेटी भागी न हो—कहीं सपरिवार पिकनिक मनाने गई हो।

सेठी : इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है ? अगर पैसा है तो इज्जत है। मैं तो इतना ही जानता हूँ।

चंद्रा : सेठी साहब, जरा होश में आइए। आप अपनी बेटी की जिन्दगी बिगाड़ रहे हैं। रुपया जिन्दगी के लिए है। रुपये के लिए जिन्दगी नहीं है।

[फोन की घंटी बजती है।]

सेठी : (फोन पर) हैलो, कौन बोल रहा है ? ओह, डिम्पल, तुम ? कहाँ से बोल रही हो ?—चण्डीगढ़ से ?

दयानंद : डिम्पल ही है फोन पर ? जरा उससे पूछ लीजिए, सुभाष उसके साथ है ?

सेठी : (फोन पर) हैलो डिम्पल, हैलो···हैलो···हैलो ! डिम्पल, सुभाष तुम्हारे साथ

है ? क्या कहा ? सुभाष तुम्हारे साथ नहीं है ? सुभाष कहाँ है ? क्या कह रही हो ? सुभाष तुम्हारे साथ मसूरी नहीं गया ? अच्छा वह शिमला जाना चाहता था। ओह, आई सी। ठीक है। चण्डीगढ़ से बाइ प्लेन तुम दिल्ली आ जाओ।

[फोन रख देना।]

दयानंद : डिम्पल कब आ रही है ?

सेठी : आज या कल आ जाएगी।

चंद्रा : और सुभाष ? सुभाष कहाँ गया, आपको कोई चिंता नहीं ? देखिए चौधरी दयानंदजी, अपने बेटे सुभाष के लिए चिंतित नहीं थे। चिंतित थे तो आपकी बेटी के लिए और आप हैं सेठी साहब, कि सुभाष के बारे में आपको कोई चिंता नहीं है। चिंता तो आपको अपनी बेटी के लिए भी नहीं है।

सेठी : सुभाष भी आ जाएगा। वह भी कहाँ जाएगा ?

चंद्रा : पता नहीं, सुभाष तो इतना स्मार्ट नहीं है।

सेठी : पहले डिम्पल को तो आ जाने दीजिए। हो सकता है, सुभाष ट्रेन से आ रहा हो।

दयानंद : मुझे सुभाष की इतनी चिंता नहीं है, जितनी चिंता मुझे डिम्पल बेटी की है।

[चेंज ओवर संगीत। बंद दरवाजे पर दस्तक]

चंद्रा : (**चंद्रा दरवाजा खोलती हुई**) ओह, डिम्पल तुम ?

डिम्पल : यस चंद्राजी, मैं ? मैं आपके लिए एक प्रेजेंट ले आई हूँ।

चंद्रा : सुभाष कहाँ है ?

डिम्पल : पता नहीं, सुभाष कहाँ है ?

चंद्रा : तुम और सुभाष, दोनों एक साथ नहीं भागे थे ?

[डिम्पल की खिलखिलाती हुई हँसी]

डिम्पल : यस, भागे तो थे हम लोग साथ-साथ। वह बड़ा थ्रिलिंग एक्सप्रीरियंस था। लेकिन जब हम लोग ट्रेन से चण्डीगढ़ पहुँचे तो स्टेशन पर हमारी लड़ाई हो गई। सुभाष कहता था, शिमला चलो। मैं कहती थी, मैं शिमला नहीं जाऊँगी। वहाँ मेरे कई रिलेशन रहते हैं। मैं तो मसूरी जाऊँगी।

चंद्रा : आओ मेरे साथ।

डिम्पल : आप मुझे कहाँ ले जाना चाहती हैं ? मैं अपने घर नहीं जाना चाहूँगी। सुभाष के घर भी नहीं जाऊँगी। प्लीज आंटी, मुझे इस तरह खींचिए मत। मेरी क्या गलती है ?

चंद्रा : तुम्हारी क्या गलती है यह तुम्हें अभी पता चलेगा। चलो मेरे साथ। सीधे से चलो मेरे साथ।

[संगीत]

चंद्रा : दयानंदजी, जल्दी से दरवाजा खोलिए।

दयानंद : अरे, डिम्पल बेटी, तुम ! कब आई ?

चंद्रा : कमला बहन, आप फौरन जाकर सेठी साहब को बुला लाइए। कहिए, डिम्पल यहाँ है। फौरन आएँ।

आवाज : हे भगवान, मेरा बेटा कहाँ है ? इसको पकड़ रखना, कहीं भागे नहीं।

दयानंद : क्यों बेटी, तुमने ये क्या किया ?

डिम्पल : अंकल जी, मैंने एक फिल्म में देखा था—एक लड़की जो स्कूल की पढ़ाई में बहुत कमजोर थी, वह एक दिन अपने मोहल्ले के एक लड़के के साथ भाग जाती है।

दयानंद : फिर क्या होता है ?

डिम्पल : उसके बाद क्या होता है, मुझे नहीं मालूम।

दयानंद : उसके बाद यह होता है···

[झापड़ मारना। डिम्पल का रोना। इसी बीच सेठी साहब का आना।]

सेठी : अरे डिम्पल, क्यों रो रही है ?

दयानंद : इसको मैंने मारा है। आपका तो अपनी बेटी से लगाव है नहीं ? आपका ख्याल है, दुनिया में सब कुछ रुपया है। कच्ची उम्र की बच्ची है। इसे नीच-ऊँच का तो कुछ पता है नहीं, और न आपको पता है···

सेठी : डिम्पल, चल अंकल से माफी माँग।

दयानंद : मुझे फुसलाने की कोशिश मत कीजिए। माफी माँगने की चोंचलेबाजी मैं नहीं जानता। इसको आपने कभी कुछ बताया है ? रुपये देने के अलावा आपने कुछ दिया है इसे ?

सेठी : मुझे खुद ज्ञान नहीं है इन बातों का। सचमुच अपने व्यापार में मैं इतना फँस गया हूँ।

चंद्रा : यह बता सुभाष कहाँ है ?

डिम्पल : (सिसकते हुए) सुभाष पार्क में बैठा है।

चंद्रा : जा उसे अपने साथ ला !

[डिम्पल का जाना।]

दयानंद : देख लीजिए सेठी साहब ! कच्ची उम्र कितनी खतरनाक होती है। खास तौर पर तब जब माँ-बाप की उस पर रखवाली की नजर न रहे।

चंद्रा : इस उम्र में बच्चों को रुपया नहीं चाहिए, माँ-बाप का प्यार चाहिए।

[डिम्पल और सुभाष का आना।]

सेठी : आ गए तुम दोनों ! अब तुम दोनों मेरे साथ मेरे घर चलो। वहीं तुम दोनों मुझसे निपटना और मैं तुमसे निपटूंगा।

चंद्रा : सेठी साहब, चौधरी दयानंदजी, पहले आप दोनों बच्चों से माफी माँगिए। फिर दोनों से निपटिएगा। वे तो कच्चे फल हैं। आप लोग तो पके हुए लोग हैं।

[समापन संगीत]

: तीन :

[प्रारम्भिक संगीत के बाद स्त्रियों की हँसी।]

डा० जैन : अरे भाई, किस बात पर हँस रही हो तुम लोग ? अरे, रोशनी भी है इधर ? रोशनी तू चुप क्यों है।

[स्त्रियों की फिर हँसी।]

डा० जैन : बात क्या है, मुझे भी तो बताओ।

रोशनी : मैं बताऊँ डाक्टर साहब ! ये जनानियाँ हंस रही हैं अप्प ही को देखकर। कहें आपने तो शादी की नहीं, और जनानियों को कँहसे कहें कि बच्चा न जनो ? मेरा खसम कहे कि तेरा डाक्टर जैन को का पता। मैं तो अपने खसम से बहुत परेशान हूँ। महानालायक है, टुच्चा, हरामखोर। मुझसे बोल्लै—तुझको अभी तीन बच्चे और जनने हैं। मैंने कही मैं तेरा मुँह तोड़ दूंगी। सच्ची डाक्टर साहब, वो जब पी लेता है तो मेरी जिन्दगी हराम कर देता है। मुझे सलाह दो मैं का करूँ ?

डा० जैन : ऐसा है रोशनी ! नासमझ मर्द शराब क्यों पीता है ? अपने को बड़ा समझदार साबित करने के लिए। मर्द की एक कमजोरी यह भी है कि वह हर वक्त औरत से अपने-आपको बड़ा ताकतवर साबित करना चाहता है। तेरे मर्द के लिए सिर्फ यही आसान बात है। ताकतवर साबित करने के लिए कि वह बच्चे पर बच्चा पैदा करता रहे। इससे यह साबित होता रहे कि वह असली मर्द है।

रोशनी : (**हँसती हुई**) ओ हो, आज जो बात समझ में आई तो असली बात यही है। मेरे एक पर एक पाँच बच्चे हुए दनादन। और हर बच्चे पर मेरे कितने मना करने पर भी दाढ़ीजार ने लड्डू बँटवाए। भले ही मैं भूखी रही, मेरे बच्चे नंगे रहे।

डा० जैन : तू कभी भी अपने शौहर के कहने में न आना। अब एक भी बच्चा तेरा और नहीं पैदा होना है। तूने जो करा लिया है न, उसे निकालना नहीं। तेरा मर्द कितना भी कहे। उसे बेवकूफ बनाने के सारे हथकंडे इस्तेमाल करते रहना।

रोशनी : अच्छा डाक्टर साहब ! मगर एक बात पुच्छूं ? समझदार लोग शराब क्यों पीते हैं ? और दो से तीन और चार तक बच्चे क्यों पैदा कर लेते हैं ?

डा० जैन : जो शराब पीता है, वह कहाँ का समझदार है ? वह भी तो अपनी मर्दानगी साबित करने को मजबूर होता है। बच्चा पैदा करना मर्दानगी का सबसे आसान सबूत है।

[औरतों की फिर हँसी। इसी हँसी में चेंज ओवर संगीत।]

दयानंद : राम-राम डाक्टर साहब।

डा० जैन : आओ दयानंदजी, क्या हालचाल हैं आपके ?

दयानंद : हालचाल ठीक नहीं हैं, डाक्टर साहब। वो जो मेरा बीच का लौण्डा है, मोनू, जो एक बैंक में क्लर्क है, वह प्रसाद साहब की बेटी सुधा से ब्याह करने के लिए पागल है। अब देखो डाक्टर साहब, मोनू की बीवी तीसरे बच्चे के प्रसव में मर गई। पहली बीवी से दो बच्चे हैं। अगर वह दुबारा शादी करता है तो कम-से-कम दो बच्चे और पैदा करेगा। फिर तो मुसीबत होगी न ? जैसे मैं मुसीबत में फँसा हूँ। जैसे मेरा बड़ा बेटा छः बच्चों की मुसीबत में फँसा है।

डा० जैन : चौधरी जी, मैंने मोनू को एक राय दी है कि वह अपना आपरेशन करा ले, फिर एक ऐसी स्त्री से शादी करे जो सिर्फ उसकी जीवन-संगिनी हो सके।

दयानंद : लेकिन उसकी समझ में तो कुछ नहीं आवे। मुझसे कहता है, कि मेरी पहली शादी आपने अपनी पसंद से मेरे ऊपर थोपी थी। अब मैं अपने मन की शादी करूँगा।

डा० जैन : इस बारे में मैं मोनू को फिर से समझाना चाहता हूँ। लेकिन वह मुझसे मिलने से ही कतराता है। आप उसे लेकर मेरे पास आएँ।

दयानंद : ठीक है, डाक्टर साहब, कोशिश करूँगा।

[चेंज ओवर संगीत]

मोनू : (**दरवाजे पर दस्तक देते हुए**) प्रसाद साहब ! प्रसाद साहब !

प्रसाद : (**दरवाजा खोलते हुए**) ओह ! मोनू बाबू ! आइए, आइए ! बहुत दिनों पर आए। क्या आप इन दिनों अपने पिता दयानंद चौधरी के साथ नहीं रहते ?

मोनू : जी, कभी-कभी रहता हूँ, लेकिन मेरी जी पिताजी के साथ बिल्कुल नहीं लगता। बड़े क्रोधी हैं, हर वक्त अपनी बात ही ऊपर रखते हैं। (**रुककर**) सुधा कहाँ है ?

प्रसाद : सुधा बेटी अभी तक दफ्तर से नहीं आई। उसके दफ्तर में कोई सेमीनार चल रहा है। अब वह सीनियर टाइपिस्ट हो गई है। तुम आजकल बैंक की कौन-सी ब्रांच में हो ?

मोनू : ग्रीन पार्क।

[स्कूटर आकर रुकने की आवाज।]

प्रसाद : लगता है, सुधा बेटी आ गई।

मोनू : यह तो बहुत अच्छा हुआ। मैं दरअसल सुधा से ही मिलने आया था।

[सुधा का आना]

मोनू : हैलो सुधा ! मैं तुम्हारा कब से इन्तजार कर रहा हूँ।

सुधा : जी, रहने भी दीजिए।

मोनू : मैं इधर रोहतक चला गया था। रोहतक से पचास मील दूर एक गुरुकुल आश्रम है। वहाँ मैंने अपने दोनों बच्चों को आश्रम में दाखिल कर दिया है। और अब मैं मुक्त हूँ तुमसे शादी करने के लिए।

सुधा : **(आश्चर्य से)** यह आप क्या कह रहे हैं ? आखिरकार वे दोनों आपके बच्चे हैं, जिससे आप दुबारा शादी करेंगे, आखिर उससे भी तो आप बच्चे पैदा करना चाहेंगे।

मोनू : यही तो ? मैं आपसे कहने आया हूँ, मैं अब और बच्चे नहीं चाहूँगा।

सुधा : लेकिन दूसरी औरत तो जरूर एक या दो बच्चों की माँ बनना चाहेगी।

मोनू : ठीक है, अगर वह चाहेगी तो ठीक है।

सुधा : जी नहीं, यह बिल्कुल ठीक नहीं है।

मोनू : प्रसाद साहब, आप सुधा को समझाइए। बच्चों के मामले में वह जिद न करे।

प्रसाद : मैं सुधा का पिता जरूर हूँ पर सुधा अब स्वतंत्र है। उसे अपने हित-अहित का पता है। मैं उसके रास्ते में बाधा नहीं बन सकता। **(रुककर)** मैं तुम दोनों के लिए चाय लेकर आता हूँ। मुनीन्द्र जी, पहले आप पानी तो पी लीजिए। **(पानी देना)** तुम भी लो बेटी **(पानी डालने की आवाज)** अब आप दोनों ठंडे दिल से बात कीजिए। मैं चाय लेकर आता हूँ। **(जाते हैं।)**

सुधा : देखिए चौधरी मुनीन्द्रजी, मैं इस संस्कार में पली हुई हूँ कि पिताजी मुझे पानी देते हैं और खुद चाय बनाकर मुझे पिलाते हैं जरूरत पड़ने पर। उनके लिए मैं वह लड़की नहीं हूँ कि दफ्तर में भी काम करूँ और घर आकर गृहस्थी की सारी जिम्मेवारी भी निभाऊँ।

मोनू : लेकिन मैंने ऐसा तुमसे कब कहा ?

सुधा : हमारी इस विषय पर काफी बातचीत हो चुकी है। तुम हमेशा भूल जाते हो। तुम्हारे इसी स्वभाव और संस्कार से तो मुझे लगता है कि तुम्हारे ऊपर, बल्कि तुम्हारे चरित्र के ऊपर तुम्हारे पिता का बड़ा असर है। जबकि तुम अपने पिता को बिल्कुल पसंद नहीं करते और उसके साथ घर में रहना नहीं चाहते।

सोनू : यह तुम आज क्या बातें कर रही हो ?

सुधा : हमारे समाज में जब कोई लड़का किसी लड़की से ब्याह के प्रसंग में सोचता है तो पहली बात यह कि वह पति बनकर सोचता है, इन्सान बनकर नहीं। इसलिए वह होने वाली पत्नी पर दया करता है। दूसरी बात यह कि वह डबल स्टैण्डर्ड रखता है। कहता कुछ है, चाहता कुछ है। उसूल कुछ हैं, आचरण कुछ हैं।

[प्रसादजी का चाय लेकर आना।]

प्रसाद : लो भाई, गरमागरम चाय पीओ।

[चाय डालने, पीने आदि का प्रभाव।]

प्रसाद : और क्या हालचाल हैं मुनीन्द्रजी ?

मोनू : बिल्कुल ठीक हूँ बाबूजी। सुधा मुझसे कुछ नाराज है क्या ?

सुधा : यह बात तुमने मुझसे सीधे क्यों नहीं पूछी ? मैं तो कभी कुछ छिपाती नहीं हूँ। छिपाने का जो गुण पहले स्त्रियों में होता था, वह आजकल पुरुषों में आ गया है।

[प्रसाद साहब का ठहाका मारकर हँसना]

मोनू : मैंने क्या छिपाया तुमसे ?

सुधा : मुनीन्द्रजी, बहुत-सी बातें तर्क करने की नहीं होतीं, अनुभव करने की होती हैं। लड़की बहुत-सी बातें लड़कों की तरह साफ-साफ नहीं कह सकतीं।

मोनू : अब तो मैंने सब बातों का खुलासा कर दिया।

सुधा : आप अपने मतलब में तो बिलकुल साफ हैं। अब आपको एक और पत्नी चाहिए। पर मुझे एक और पति नहीं चाहिए। सिर्फ पति चाहिए। आप एक पत्नी के पति हो चुके हैं। (एकाएक जाती हुई) माफ कीजिएगा, मैं और कुछ नहीं कहना चाहती।

मोनू : लेकिन आप जा कहाँ रही हैं, रुकिए तो।

[चेंज ओवर संगीत]

चंद्रा : अरे सुधा, आज तुम दफ्तर नहीं गईं।

सुधा : हुजूर, चंद्राजी, आप भी तो दफ्तर नहीं गईं।

चंद्रा : मुझे आज छुट्टी लेनी पड़ी। फादर को हास्पिटल चेकअप कराने ले जाना था।

सुधा : डाक्टरों की रिपोर्ट क्या है ?

चंद्रा : बुढ़ापा और उसके ऊपर डिप्रेशन। क्या करूँ दुकान बन्द कर दूँ, या नौकरी छोड़ दूँ। या बीमार पिता को किसी हास्पिटल में रख दूँ। ये तीनों सवाल मेरे सामने हैं, लेकिन इनमें से किसी एक का भी मेरे पास हल नहीं है।

सुधा : ये तीनों सवाल व्यक्तिगत सवाल नहीं हैं। इन तीनों सवालों का हल समाज के पास है। और समाज है नहीं। इस खुशबू कालोनी में ज्यादातर लोग इंडिवीजुअल हैं। समाज होता तो सचमुच इस कालोनी में खुशबू होती। चंद्राजी, आप में समाज है। जब कभी भी मैं आपसे मिलती हूँ, मुझे महसूस होता है कि मैं आपके साथ व्यक्ति से सामाजिक हो रही हूँ। अपने फ्लैट से निकलकर पूरी कालोनी की सहभागिनी हो रही हूँ।

चंद्रा : ओ हो ! आज तो तुम पता नहीं किस लोक से बोल रही हो।

सुधा : मैं भी आज दफ्तर इसलिए नहीं गई कि आज मेरी शादी का 'फाइनल मैच' हो रहा था।

[दोनों का हँसना]

चंद्रा : 'टास' कौन जीता ?

सुधा : जाहिर है, टास तो लड़के वाले ही जीतते हैं। और हमसे कहते हैं कि खेलना शुरू करो।

[दोनों की फिर हँसी]

चंद्रा : तो तुमने क्या फैसला किया—मोनू से अपनी शादी के बारे में ?

सुधा : मैं उससे शादी नहीं करूँगी। (हँसती हुई) भारत की जनसंख्या-वृद्धि में और सहायक बनूँ, इसे मैं विवाह नहीं मानती !

[रोशनी का आना]

रोशनी : अरे चंद्राजी, आपके घर डाक्टर साहब आए हैं। आपके पिता को देखने।

चंद्रा : तो क्या मुझे बुलाया है ?

रोशनी : बुलाया तो नहीं। मैं तुम्हारे घर से काम करके जब लौटने लगी तो मेरी खोपड़ी में आयो कि तुझसे तो बता दूं। (हँसना) डाक्टर बाबू बहुत अच्छे आदमी हैं। तुम भी बहुत अच्छी हो। काहे, इनसे इतना दूर-दूर रहती हो ? दुकान में क्या रक्खो है ? जाओ अपने घर। (फिर हँसना) उठो न ? देरी काहे करो। डाक्टर बाबू अकेले हैं तुम्हारे पिता के पास।

सुधा : ठीक है, चंद्रा, तुम जाओ। मैं तब तक दुकान पर बैठ जाती हूँ।

चंद्रा : तुम और दुकान पर ?

सुधा : मेरा भी हिसाब-किताब बुरा नहीं है, तुम जाओ। डाक्टर साहब को बिदा करके इधर ही आना।

[सुधा और रोशनी दोनों का हँसना। चेंज ओवर संगीत]

चंद्रा : डाक्टर साहब, नमस्कार।

डा० जैन : नमस्कार। नमस्कार। आपको कैसे पता कि मैं यहाँ आया हूँ ?

चंद्रा : ऐसी चीजों-बातों का पता चल ही जाता है।

डा० जैन : कैसे, जरा मैं भी तो जानूँ ?

चंद्रा : यह डाक्टरी नहीं है। (हँसकर) यह बताइए, आप क्या पीएँगे ?

डा० जैन : मैं मेहमाननवाजी कराने नहीं आया, आपके पिताजी को देखने आया हूँ। चुपचाप, बिना आपको बताए।

चंद्रा : जैसे कि मुझे आपका स्वभाव पता नहीं है।

डा० जैन : सच। आप मेरे स्वभाव को जानती हैं ? (हँसकर) थोड़ा मैं भी आपके स्वभाव को जानता हूँ। आपके पिताजी की तबीयत अब काफी ठीक है। ब्लड-प्रेशर नार्मल हो नार्मल हो गया है। भूख भी लगने लगी है। ऐसा वे मुझे बता रहे हैं।

चंद्रा : दरअसल डाक्टर साहब, जितना समय मुझे पिताजी को देना चाहिए, अफसोस है, मैं नहीं दे पाती।

डा० जैन : आप काफी समय देती हैं। मैं तो आपका एक्जाम्पल देता हूँ।

चंद्रा : और मैं आपका एक्जाम्पल देती हूँ।

डा० जैन : बस, एक ही एक्जाम्पल काफी है आपका।

[चंद्रा हँस पड़ती है।]

चंद्रा : आप तो 'एक या दो बस'। फेमिली प्लानिंग का यह नारा हर वक्त याद रखते हैं।

डा० जैन : आपके पिताजी सो रहे हैं, वरना मैं अभी उनसे गवाही दिलवाता कि वह आपके बारे में मुझसे क्या कह रहे थे।

चंद्रा : तो आप ही गवाही दे दीजिए न ?

डा० जैन : मैं फिर आऊँगा। अभी इजाजत चाहता हूँ। क्लीनिक पहुँचना है।

[दूर से रोशनी की आवाज पास आती हुई]

रोशनी : मैं नहीं बताती डाक्टर सह्हाब कहाँ हैं। सुसरे डाक्टर सह्हाब के पीच्छे पड़े रहते हैं। अरे मैं ई कहूँ, आक्खिरकार डाक्टर भी इन्सान हैं। उनके भी तो दिल्ल है। या कि कैंइची छुर्री हैं सिर्रिफ।

डा० जैन : अरे भई, क्या है रोशनी। मैं आ रहा हूँ।

रोशनी : ना डाक्टर सह्हाब, आप अभी क्लीइनिक मत जाओ। आप यहीं चंद्राजी के पास बैइठो। जैइसे सुधा जी इनकी दुकान पर्र बैइठी हैं, वैइसे मैं भी ज्जा रही हूँ आपका क्लीइनिक्क सम्भालूँगी।

डा० जैन : अरे तू कैसे सम्भालेगी ?

रोशनी : मैं सब्ब समझ गई डाक्टर सह्हाब। मैं जन्नानियों को समझाऊँगी—'एक या दू बस्स'। और मरदुओं को डांटूंगी—'दो से ज्यादा न फँस्स'।

डा० जैन : ये बस्स और फँस्स खूब रही तेरी ?

रोशनी : अरे मैं तो सबसे बड़ी भुगतभोगी हूँ। मुझे क्या पत्ता था, सस्सुरों ने कच्ची उमर में एक तो शादी कर दी—धड़ाधड़ एक के बाद एक पाँच-पाँच बच्चे हो गए। मेरी समझ में तो तब आई जब मैंने खाट पकड़ ली। अपनी आँखिन देखने लगी कि मेरे बच्चे खाने बिना तरह रहे हैं।

डा० जैन : तेरी बड़ी बेटी अब तो तेरह साल की हो गई। वह किस क्लास में पढ़ती है।

रोशनी : सातवीं में पढ़े है छोकरी। लेकिन मेरे सारे रिश्तेदार कहैं कि छोकरी की अब शाद्दी कर दे। मैंने झाड़ू उठा लिया और बोल्ली—मैं एक-एक को गिरफ्तार करवा दूंगी हाँ···।

[डाक्टर की हँसी और रोशनी का गुस्सा]

रोशनी : सस्सुरे बेवकूफ हैं, न कायदा जानें न कानून, बेसिर-पैर की बात्तें करें। जमाना कितना बदल गया, ये सस्सुरे बदलना नहीं चाहते। इनकी दवा तो मेरे पास है। टोकरी का कूड़ा इनके सर पर मारूँ ! और जबान पर मारूँ झाड़ू। हाँ, मज्जाक नहीं कर रही डाक्टर सह्हाब।

[समापन संगीत]

: चार :

[प्रारम्भिक संगीत के बाद दयानंद और मोनू में बातचीत]

दयानंद : क्या मुँह लटकाए हुए बैठा है रे मोनू ?

मोनू : इन लड़कियों की हिम्मत कि लड़कों को ऐसे शादी के लिए मना कर दें ?

दयानंद : सुधा ने बिलकुल ठीक किया। कोई भी समझदार लड़की सुधा की जगह होती तो यही करती।

मोनू : आप भी पिताजी, बेसिर-पैर की बातें करते हैं। अगर मैं दो बच्चों का बाप हूँ और मेरी वाइफ मर गई तो क्या मुझे हक नहीं दूसरी शादी करने का ? अभी मेरी कुल उम्र 35 साल है।

दयानंद : अरे अगर तुझे दूसरी शादी करनी ही है तो किसी विधवा से क्यों नहीं कर लेता ? बहुतेरी पड़ी हैं बेचारी। कितनी तो बारविडो बैठी हैं, उन्हीं में से किसी से कर ले।

मोनू : लेकिन मैं किसी विधवा से शादी क्यों करूँ ?

दयानंद : कुँवारी सुधा ने तो मना कर दिया न ? कोई भी समझदार कुँवारी लड़की तुमसे शादी क्यों करेगी ?

मोनू : मैं करके दिखा दूंगा।

दयानंद : यही नासमझी तो मुझे और तेरे बड़े भाई केशव को डुबा गई। लड़की पर लड़का पैदा करने का घमण्ड हमें मुसीबत में फँसा गया। और तू हमें देखकर भी नासमझ बनता है।

मोनू : मैं यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँगा। वहाँ अपने मन की शादी करूँगा।

दयानंद : तू कहीं भी चला जा लेकिन अगर तूने किसी कुँवारी से शादी की तो मैं तेरा मुँह नहीं देखूँगा।

[चेंज ओवर संगीत]

सुधा : डाक्टर साहब, नमस्ते। मैं आपसे एक सलाह लेने आई हूँ।

डा० जैन : बोलो सुधाजी, क्या बात है ?

सुधा : क्या किसी लड़की को इतना भी अधिकार नहीं है कि वह किसी लड़के को साफ मना कर दे कि वह उससे शादी नहीं करना चाहती।

डा० जैन : बिलकुल, बिलकुल, पूरा अधिकार है। और वर्किंग गर्ल की तो यह जिम्मेदारी है कि वह ऐसे व्यक्ति से शादी करे जो हर मायने में उसे पसंद हो और उसकी भावनाओं की कद्र करना जानता हो। नये विचारों का हो। वर्किंग गर्ल की दिक्कतों को समझता हो। वर्किंग गर्ल एक से ज्यादा बच्चा नहीं पाल सकती।

सुधा : लेकिन यह क्या चरित्र है आजकल के युवकों का कि शादी के मामले में वे अभी भी दकियानूस हैं। किसी लड़की के न कहने पर वे उसे बदनाम करना चाहते हैं।

डा० जैन : मुझे पता है, सुधाजी। मोनू आपके बारे में उल्टी-सीधी बातें कर रहा था।

मगर इसका मुँहतोड़ जवाब एक ओर चंद्राजी ने दिया, दूसरी ओर रोशनी ने दिया। रोशनी ने तो कसम दिलवा दी कि मोनू आइंदा इस तरह की बातें कभी नहीं करेंगे। बात यह है सुधाजी, कि पुरुष अभी भी अपने आपको स्त्री से बड़ा मानता है। वह किसी भी मायने में किसी स्त्री से 'न' सुनना बर्दाश्त नहीं कर पाता, यह उसका छोटापन है। स्त्री के समान पुरुष को भी बदलना होगा। इसी में है समाज कल्याण।

[चेंज ओवर संगीत]

रोशनी : (आती हुई) उल्लू के पट्ठों ने क्या समझ रक्खा है ? मैं बेपढ़ी हूँ, जमादारन हूँ ! नासमझ हूँ ! मगर अब तो नासमझ नहीं हूँ। जिन्दगी की ठोकरों ने मुझे बहुतेरी समझदारी देइ दी है। मैं सालों की खाट खड़ी न करवा दूँ तो मेरा नाम रोशनी नहीं।

चंद्रा : क्या बात है रोशनी ? इतनी परेशान क्यों है ?

रोशनी : मैं तो आप ही के पास दौड़ी आ रही हूँ। मेरा जो खसम है दाढ़ीजार, वह चौबीस घंटे से लड़ाई कर रहा है कि मैं अपनी बड़ी छोरी का रिश्ता पक्का कर लूं और उसकी पढ़ाई छुड़वा दूँ। मैं कहूँ क्या लड़की की जिन्दगी सिर्फ बच्चा पैदा करने के लिए है ? वह कोई मशीन है सस्सुरी ?

चंद्रा : बता मैं तेरी क्या मदद कर सकती हूँ ? मैं बिलकुल तुम्हारे साथ हूँ।

रोशनी : आप मेरे साथ मेरी कलोनी में चल्लो। और देक्खो सब सस्सुरे भुक्खे सियार की तरह मेरे और मेरी 13 साल की लौंडिया के पीच्छे पड़े हैं।

चंद्रा : ठीक है, चल आज मैं दुकान नहीं खोलूंगी और न दफ्तर जाऊँगी। मैं अपने साथ सुधा, डाक्टर साहब, दयानंद, यहाँ तक डिम्पल को भी ले चलूंगी।

[चेंज ओवर संगीत]

रोशनी : अब देक्ख लो। पूरी खुशबू कलोनी मेरे साथ है। अब जिस्सको जो बोल्लना हो बोल्ले।

एक आवाज : तेरी भी तो शादी 12 साल की उम्र में हुई थी रोशनी।

रोशनी : सुन्न लो डाक्टर सह्हाब इनकी बक्कवास।

डा० जैन : सुनिए। आप लोग गुस्सा मत कीजिए। मेरी बात सुनिए। पहले की बात आज मत दोहराइए। आँख खोलकर देखिए। इस कालोनी में जितनी औरतें खड़ी हैं, देखिए सबकी सेहत, और रहन-सहन। कोई 35 साल से ज्यादा उम्र की औरत नहीं है यहाँ। लेकिन सब बूढ़ी नजर आ रही हैं। किसी के चेहरे पर खुशी नहीं है। एक कमरे में दस-दस प्राणी कैसे रहते हैं, यह तो आप खुद भोग रहे हैं। आप लोग यही चाहते हैं कि रोशनी की बेटी मंगला इन्हीं लोगों जैसी जिन्दगी जिए। मंगला पढ़ रही है, उसे पढ़ने दो। क्या वह भी अपनी माँ की ही तरह जमादारनी बने और बच्चों पर बच्चे पैदा करती रहे !

दूसरी आवाज : हमारी पंचायत में यही चलता है कि लड़की तेरह साल की हुई तो उसकी शादी जरूर कर दी जाए। हम जवान लड़की को न घर में रख सकते हैं न स्कूल में।

चंद्रा : तेरह साल की लड़की जवान कैसे हो गई ?

दयानंद : अरे तुम लोग पागल हो ? सरकारी कानून है, 18 साल से पहले अगर लड़की की शादी कर दी तो हथकड़ी पड़ जाएँगी। छठी का दूध याद आ जाएगा।

एक आवाज : हम में बड़ी एकता है जी। हम एक-दूसरे की शिकायत नहीं करते।

दयानंद : बड़ी एकता है। एक-दूसरे के दुश्मन होना एकता है ? जिसे अपनी लड़की पर विश्वास नहीं, वह दूसरे पर क्या विश्वास करेगा ? कान खोलकर सुन लो। अगर मंगला की शादी करने की बात भी किसी ने सोची तो पुलिस को रिपोर्ट मैं करूँगा। मेरा नाम है दयानंद चौधरी।

चंद्रा : हम सारी औरतें रोशनी के साथ हैं।

एक आवाज : इतनी हिम्मत है अगर तो मंगला को गोद क्यों नहीं ले लेते ? उसको पढ़ाओ-लिखाओ। उसकी खुद शादी करो।

[सब आपस में विचार करने लगते हैं।]

डा० जैन : जी, मैं तैयार हूँ मंगला को गोद लेने के लिए।

चंद्रा : मैं भी तैयार हूँ मंगला को गोद लेने के लिए।

एक आवाज : कितनी लड़कियों को गोद लेंगे आप लोग ? मेरी भी एक छोटी-सी लड़की है, और उसकी माँ मर चुकी है। मैं दूसरी लाना चाहता हूँ।

[सबकी व्यंग्य-भरी हँसी।]

डा० जैन : मैं उस लड़की को भी गोद लेने को तैयार हूँ, पर एक शर्त पर—तुम दूसरी शादी अगर करोगे तो उससे पहले तुम्हें नसबंदी करानी होगी।

वही आवाज : जी, मैं तैयार हूँ। लेकिन आपसे नसबंदी नहीं कराऊँगा।

रोशनी : अजी वाह, बड़े होशियार बनने चले हैं दाढ़ीजार। नसबंदी करेंगे तो डाक्टर साहब ही करेंगे।

दयानंद : चलो पंचायतनामा लिखो।

चंद्रा : हम दोनों बच्चियों को गोद लेते हैं और ये हलफनामा लिखते हैं कि नसबंदी के बाद ही दूसरी शादी करेंगे।

सुधा : हम ? हम माने क्या चंद्राजी ?

[संगीत]

रोशनी : हम माने हम ! चंद्रा डाक्टर बम !! अब मुझे क्या गम !!!

[चेंज ओवर संगीत]

रोशनी : राम-राम डाक्टर सह्हाब।

डा० जैन : मंगला कहाँ है ? अरे मंगला तुम्हारी बेटी। उसे तो हमने गोद ले लिया है।

[रोशनी हँसती रहती है।]

डा० जैन : अरे तू हँस क्यों रही है। बोलती क्यों नहीं ? मंगला को क्यों नहीं ले आई ? वो मेरे घर रहेगी।

रोशनी : डाक्टर सह्‌हाब, आपका घर कहाँ है ? (**हँसी**) घर तो जब होवै जब आपके हाथ पीले हों। (**हँसती हुई**) मैं आपकी शाद्दी में नाच्चूंगी, गाऊँगी।

डा० जैन : अरे मैंने शादी कर ली तो ये क्लीनिक कौन देखेगा। और तुम सबकी देखभाल कौन करेगा ?

रोशनी : आप शाद्दी तो करो। बाकी हम पंच खुद्दई देख लेंगे।

डा० जैन : मगर तुम मंगला को क्यों नहीं ले आई ?

रोशनी : क्यों नहीं ले आई, नहीं बत्ताती। मुझे तो लाज्ज लागै।

डा० जैन : वो जो दूसरा आदमी था, जिसकी छोटी बच्ची थी, जिसकी बीवी नहीं रही, उस बच्ची को तो भिजवा। हम उसे पालेंगे। पढ़ाएंगे।

रोशनी : अरे बू ससुरा जन्दू जिसका नाम है ? वो दूसरी औरत ले भी आया। और वह औरत तीन बच्चों को अपने साथ ले आई। अब होगा ताक धिन्ना धिन्न, ताक धिन्ना धिन्न।

डा० जैन : तो जन्दू ने ऐसा किया ? मैं अभी जाता हूँ उसके पास। बच्ची को तो उसके चंगुल से निकालकर ले ही आऊँगा। उसकी नई बीवी को समझाऊँगा। हो सकता है जंदू भी मेरी बात मान ले।

रोशनी : मत बताना कि मैंने आपको सब बताया है। वह सबसे मिलकर अभी कल ही दूसरी बिब्बी ले आया है।

[चेंज ओवर संगीत।]

मोनू : (**दरवाजे पर दस्तक देते हुए**) सुधाजी, सुधाजी ! कृपा कर दरवाजा खोलिए। मैं मोनू हूँ, आपसे दो बातें करनी हैं मुझे।

सुधा : (**दरवाजा खोलती हुई**) अरे मुनीन्द्रजी, आइए अन्दर आइए।

मोनू : मैं आपके अन्दर आने लायक नहीं हूँ। मुझसे जो गलती हुई, उसके लिए मैं आपसे माफी माँगने आया हूँ।

सुधा : आप बैठिए तो। इधर। नहीं, नहीं, लीजिए पहले पानी पी लीजिए।

[मोनू का पानी पीना।]

सुधा : आप कहीं दूर से आ रहे हैं क्या ?

मोनू : सुधाजी, मैं तो यहाँ से चला ही गया। मैं अब पिताजी के साथ नहीं रहता। किदवईनगर के पास एक कमरे का मकान ले लिया है, किराये पर। बिना आपको

बताए और बिना आपसे माफी माँगे मैं चुपचाप चला गया। इसी की माफी माँगने आया हूँ।

सुधा : आप कैसी बातें करते हैं, यह भी कोई गलती है।

मोनू : जी हाँ, आप सही कहती हैं। यह तो बड़ी गलती नहीं है। लेकिन मेरी जो बड़ी गलती हुई है, मैं कैसे उसे अपने मुँह पर लाऊँ। मुझे शर्म आ रही है। सच बात यह है सुधाजी कि जब आपने शादी के लिए मुझे मना कर दिया तो मुझसे ज्यादा मेरे पुरुषत्व को चोट लगी। बदले की भावना से मैं भर गया। आपसे बदला लेने का, या किसी भी स्त्री से बदला लेने का पुरुष के पास एक आसान-सा साधन है—उसे बदनाम करना। मैंने वही आपके खिलाफ करना चाहा। जिसके लिए मैं आपसे क्षमा माँगने आया हूँ। मैंने सचमुच बड़ा अपराध किया है।

सुधा : मुझे बहुत खुशी है कि आपमें इतनी हिम्मत तो है सच्चाई कबूल करने की। अब मेरे मन में आपके प्रति कोई दुख की भावना नहीं है, क्योंकि आपने दूसरे के दुख को अपना दुख माना है। यह आपकी जिन्दगी की एक नई शुरुआत है, जो आपको मनचाहा फल देगी।

मोनू : अगर आपको मुझ पर इतना विश्वास है तो आप फिर से हमारी शादी के बारे में क्यों नहीं विचार करतीं ?

सुधा : देखिए, मुनीन्द्रजी, आपकी प्रकृति और मेरी प्रकृति में जमीन-आसमान का फर्क है। आपका परिवेश और मेरे घर का परिवेश दोनों में भी बहुत अन्तर है। हम दोनों आगे चलकर एक-दूसरे से खुश नहीं रह पाएँगे, इसलिए मैंने फैसला किया है कि हमारा यह विवाह न हो।

मोनू : आपसे ही बल प्राप्त कर मुझे यह कहने का साहस हो रहा है कि आपका फैसला मेरे सिर-माथे। आपके प्रति मेरे दिल-दिमाग में सदा एक आदर-भाव रहेगा। ईश्वर आपको सदा सुखी और आनन्दित रखे।

सुधा : (**हँसती हुई**) धन्यवाद मुनीन्द्रजी। (**फिर हँसना**) खुश रहना और आनन्द पाना इतना आसान नहीं है। स्त्री का सुख और आनन्द पता नहीं क्यों इतना अधिक पुरुषों के साथ जुड़ा हुआ है कि मैं तो कभी-कभी अचम्भे में पड़ जाती हूँ। मेरी दादीजी थीं, मुझे याद है, वे जिसको भी आशीर्वाद देती थीं, यही कहती थीं—सुख पाओ। पहले मुझे उनका यह आशीर्वाद समझ में नहीं आता था। अब समझ में आ रहा है, सुख अपने आप किसी के पास नहीं आता खुद चलकर। (**हँसी**) आपके लिए चाय बनाऊँ ?

मोनू : नहीं, आपका इस तरह जल पिलाना, आपका इतने विश्वास से मुझसे बात कर लेना और खासकर आपकी यह हँसी कभी नहीं भूलेगी। मुझे सदा बल मिलता रहेगा।

[खुशी-भरा चेंज ओवर संगीत]

मोनू : चन्द्रा बहन, नमस्कार।

चंद्रा : अरे, मोनू भाई, आप तो कितने दिनों से दिखे ही नहीं।

मोनू : जी हाँ, मैं यहाँ से चला गया। कहीं और रहता हूँ।

चंद्रा : क्या दूसरी शादी कर ली ?

मोनू : जी नहीं।

चंद्रा : तो क्या तुम अकेले रहते हो ?

मोनू : जी हाँ, फिलहाल तो अकेली ही हूँ। (**सोचते हुए**) आपसे एक जरूरी बात कहने आया हूँ। मैंने दूसरे विवाह के बारे में बहुत सोचा। मेरी उस सोच में आपका, मेरे पिताजी का, डाक्टर साहब का सबका हाथ रहा है। लेकिन सबसे बड़ा हाथ रहा है, सुधाजी का। और मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि मैं अपने से ज्यादा उम्र की किसी विधवा से ही शादी करूँगा। और अपने दोनों बच्चों को उसकी गोद में रख दूँगा।

चंद्रा : और क्या आप उसके चरण छू लेंगे ?

मोनू : जरूरत पड़ी तो उसके चरण जरूर छू लूँगा। पत्नी के प्रति अब मेरा भाव बिलकुल बदल गया है।

चंद्रा : क्या बदल गया, जरा मैं भी तो सुनूँ।

मोनू : स्त्री कोई बच्चा पैदा करने की मशीन नहीं है। उसके साथ मित्र की तरह तो रहा जा सकता है। वह जीवनसंगिनी भी तो है।

[समापन संगीत]

: पाँच :

[प्रारम्भिक संगीत के बाद सुभाष और डिम्पल में बातचीत।]

सुभाष : डिम्पल, तब से तुम मेरे घर कभी आई ही नहीं।

डिम्पल : तुम भी तो कभी नहीं आए।

सुभाष : मैं तुम्हारे यहाँ दो बार गया। लेकिन तुम्हारे घर कोई होता ही नहीं। सिर्फ नौकर-चाकर ही मिलते हैं।

डिम्पल : हाँ, मेरे डैडी फरीदाबाद में एक नई फैक्टरी लगा रहे हैं। वे अक्सर वहीं रह जाते हैं। माँ एक नर्सिंग होम में एडमिट थीं। अपनी मोटाई कम करा रही थीं। (रुककर) अच्छा ये बताओ, सुधा ने तुम्हारे बड़े भाई मोनू से शादी करने के लिए मना कर दिया ?

सुभाष : हाँ, बिलकुल।

डिम्पल : भई वाह ! वेरी गुड ! मैंने सुधाजी को बहुत कांग्रेचुलेशन्स दिया। सुभाष,

तुम्हें यह घटना कैसी लगी ?

सुभाष : मुझे भी बहुत अच्छा लगा। मुझे स्त्री का साहस देखकर बहुत अच्छा लगता है। डिम्पल, तुममें भी तो वही साहस था। और उसी साहस का फल है कि हमने भाई-बहन के रूप में फिर से एक-दूसरे को पाया।

डिम्पल : मैं अपने खाली समय में चंद्राजी के साथ रहती हूँ। मुझे वे बहुत अच्छी लगती हैं। उनसे मैंने बहुत चीजें सीखी हैं। जिन्दगी क्या है, इसकी समझ मुझे उनसे मिल रही है।

सुभाष : हमारे डाक्टर साहब चंद्राजी से बहुत आकृष्ट हैं, बल्कि डाक्टर साहब ने ही चंद्राजी की अच्छाइयों और गुणों के बारे में मुझसे कई बार बातें की हैं। और यहाँ तक कहा है कि सही मायनों में चंद्रा एक आदर्श आधुनिक नारी है। मुझे तो लगता है डिम्पल, दोनों में प्यार है।

डिम्पल : व्हाट प्यार ? नानसेन्स। चंद्राजी ने मुझसे एक दिन कहा था कि प्यार-व्यार का कोई मतलब नहीं होता। प्यार तो एक समझ है, जो बहुत गहरी होती है। श्रद्धा और विश्वास उसके दो किनारे हैं।

[प्यार-भरा चेंज ओवर संगीत।]

डा० जैन : चंद्राजी ! चंद्राजी ! ये लीजिए मैं रोशनी की कालोनी से उस जंदू की छोटी-सी बेटी को ले आया हूँ।

चंद्रा : वाह ! कितनी प्यारी बच्ची है ! हम इसे जरूर गोद लेंगे।

डा० जैन : हम माने ?

[प्यार-भरा संगीत उभरकर धीरे-धीरे एक बिन्दू पर आकर रुक जाता है।]

डा० जैन : देखिए, हम कितनी देर से चुपचाप खड़े ही रह गए।

चंद्रा : दीजिए बच्ची को मेरी गोदी में।

डा० जैन : लेकिन जंदू ने एक बात कही है।

चंद्रा : **(बच्ची को प्यार करती हुई)** लो···लो···लो, अरे कितनी प्यारी बच्ची। **(बच्ची को चूमना)**

डा० जैन : हँसते हुए। लेकिन जंदू ने जो बात कही, उसे तो सुनिए ?

चंद्रा : क्या बात कही है ?

डा० जैन : वह मेरे हाथ से ही नसबंदी कराने के लिए सहमत हो गया है। इससे भी बड़ी बात यह कि वह अपनी कालोनी में हम लोगों का हर तरह से साथ देगा।

चंद्रा : यह तो बहुत अच्छी बात है। यह आपकी वजह से हुआ है डाक्टर साहब।

डा० जैन : मैं अकेले क्या हूँ भला, यह सब तो आपकी वजह से हुआ है चंद्राजी।

चंद्रा : क्या आप चाहते हैं, मैं आपके सामने से हट जाऊँ ?

डा० जैन : नहीं-नहीं, आप कहाँ जा रही हैं मेरे सामने से ? अकेले आपसे बच्ची नहीं सँभल पाएगी।

चंद्रा : फिर किससे सँभलेगी ?

डा० जैन : (हँसते हुए) क्या आप चाहती हैं कि मैं आपके सामने से हट जाऊँ ? लीजिए मैं जा रहा हूँ।

चंद्रा : (हँसती हुई) देखिए, ये बच्ची आपको जाने से रोक रही है। अब आप भाग कर कहीं नहीं जा सकते।

डा० जैन : और आप ?

[चंद्रा की प्यार-भरी हँसी। इसी हँसी में मिक्स होता है चेंज ओवर संगीत]

दयानंद : अरे सेठी साहब ! सेठी साहब···अरे डिम्पल, तुम ? तुम्हारे डैडी कहाँ हैं ?

डिम्पल : अन्दर हैं। दयानंद अंकल, आप अन्दर तो आइए। (पुकारती हुई) पापा··· पापाजी ! देखिए दयानंद अंकल आए हैं।

सेठी : (आते हुए) अरे ! चौधरी साहब ! बड़ी कृपा की। बैठिए तो। डिम्पल, अंकल के लिए नाश्ता ले आओ।

डिम्पल : अच्छा पापाजी।

दयानंद : देखिए सेठी साहब, मैं नाश्ता-फाश्ता नहीं करता। मैं तो सीधे नौ बजे भोजन ही कर लेता हूँ। जिसे आप लोग लंच कहते हैं।

[दोनों की हँसी।]

दयानंद : देखिए सेठी साहब ! मैं एक बड़ी खुशखबरी ले आया हूँ। अपने डाक्टर जी और चंद्रा बहन दोनों चुपचाप शादी करने जा रहे हैं। मगर हम चुपचाप शादी नहीं होने देंगे। हम तो पूरा जश्न मनाएँगे।

सेठी : यह तो सचमुच बड़ी खुशखबरी है। मैं पूरी कालोनी की तरफ से दोनों को हाई क्लास रिसेप्शन दूँगा। सारा खर्चा मेरे माथे।

दयानंद : ऐसा क्यों नहीं करते सेठी साहब कि हम लोग चंद्रा का कन्यादान करें और विधिवत दोनों का विवाह हो !

सेठी : आपने मेरे दिल की बात कह दी चौधरी साहब। मैं तो शुरू से ही इन दोनों से इतना प्रभावित रहा हूँ और ईश्वर से मन-ही-मन यह प्रार्थना करता था कि दोनों विवाह के मंगल-सूत्र में बँध जाएँ। ईश्वर ने हमारी सुनी। हम तो बड़े शान से यह शादी कराएँगे।

दयानंद : लेकिन यही तो समस्या है, सेठी साहब ! डाक्टर का कहना है कि हमारी शादी बिलकुल सादी होगी। इसमें कोई ताम-झाम नहीं होगा। देश-भर में इतना सूखा पड़ा है, हम कोई रिसेप्शन या कोई प्रीतिभोज वगैरह नहीं होने देंगे।

सेठी : अरे चौधरीजी ! पहले शादी तो हो जाने दो, फिर हम देखेंगे।

[हँसती हुई डिम्पल का आना।]

डिम्पल : मैंने सब कुछ सुन लिया।

सेठी : डिम्पल, तुम चंद्रा और डाक्टर की शादी में कोई जश्न नहीं मनाओगी ?

डिम्पल : मैं तो चंद्राजी की शिष्या हूँ। वो जो कहेंगी मैं वैसा ही करूँगी। डैडी, आप ऐसा क्यों नहीं करते, आपके पास तो तीन फ्लैट्स हैं। एक फ्लैट आप कन्या को दान में क्यों नहीं दे देते !

सेठी : बात तो बड़ी दिलचस्प है। मैं इसके बारे में सोचूँगा।

डिम्पल : डैडी, आप सोचते भी हैं ?

सेठी : क्यों नहीं ! क्या मैं सोचता ही नहीं हूँ ?

डिम्पल : मेरा अनुभव रहा है कि जब आपको किसी काम को नहीं करना होता है, तब आप सोचने लगते हैं। और जो करना होता है, उसे आप बिना सोचे-समझे कर डालते हैं।

[दयानंद जोर से हँस पड़ते हैं।]

दयानंद : अरे बेटी, डिम्पल, तू तो नाराज हो गई। सेठी साहब तो मजाक कर रहे थे।

डिम्पल : आप हो लोग जानें ये क्या कर रहे थे। मैं तो बहुत ही खुश हूँ, ब्याह के इस समाचार से। सच इसे कहते हैं···

[डिम्पल की प्यार-भरी हँसी और इसी हँसी के साथ चेंज ओवर संगीत]

रोशनी : (खिलखिलाकर हँसती हुई) लो जो मैंइने सोच्चा, जो मैंइने दिल्ल से चहा, परमातमा ने रोशनी की भी सुन्न ली। राम-राम चौधरीजी।

दयानंद : राम-राम रोशनी।

रोशनी : चौधरीजी, अब्ब इस कलोनी में जिस्सका नाम खुशबू कलोनी है, खुशबू आज फैल गई सच्ची-सच्ची।

दयानंद : तुझे कैसे मालूम हुआ ?

रोशनी : अरे, मुझे तो बहुत दिनों से लग रहा था। सच्च चौधरीजी, दोनों बड़े महान व्यक्ति हैं। जंदू की बच्ची जिस दिन दोनों ने गोद ली, उसी दिन मुझे लग गया कि कुछ जरूर होगा। मगर मुझे एक चिंता है, चौधरीजी। ऐसा न हो, दोनों शाद्दी करने के बाद खुशबू कलोनी से चले जाएँ। डाक्टर जी का यहाँ घर है नहीं। वे तो यहाँ से 15 किलोमीटर दूर रेवाड़ी में रहते हैं।

दयानंद : मुझे ऐसा नहीं लगता। दोनों ने जिस तरह हमारी खुशबू कालोनी को प्यार किया है, इसे छोड़ेंगे नहीं। ऐसा कर रोशनी, तू चंद्राजी के पास जा और इस बारे में उनके मन की तो ले ले।

रोशनी : जे बात ठीक कही आपने। मैं अभी गई, अभी आई।

[चेंज ओवर संगीत]

रोशनी : (बड़ी खुशी से गुनगुनाती हुई—)

अपने राजा से नैयना लड़इबे;
हमार कोई का करिहैं।
चार महीना गरमी पड़त है

अपने राजा के बिनिया डोलइबे
हमार कोई का करिहैं

सुभाष : अरे रोशनी ! गजब रे गजब, क्या गा रही है।

[रोशनी का खिलखिलाकर हँसना]

रोशनी : देख लै छोकरे सुभाष जे है सच्चा इश्क। डाक्टर और चंद्रा का (हँसी) इश्क माने चोंचलेबाजी नहीं। इश्क माने है—जिम्मेदारी और समझदारी।

[उसकी हँसी हवा में फैल जाती है]

चंद्रा : अरे रोशनी ! आज तेरी हँसी बहुत अच्छी लग रही है।

रोशनी : आप तो इतनी अच्छी लग रही हैं कि मैं शरमा जाऊँ। हाय दैया ! देख लो मैं तो तुम्हारी शाद्दी पै नाच्चूँगी, गाऊँगी। सुक्खी शाद्दी न होने देने की। तुम और डाक्टर सह्हाब जितना मुझे डाँटो।

[फिर वही हँसी]

एक बात पुच्छण आई हूँ। शाद्दी के बाद तुम लोग कहीं खुशबू कलोनी से बहार तो नहीं रहने चले जाओगे ?

चंद्रा : नहीं, बिल्कुल नहीं। डाक्टर साहब मेरे साथ मेरे फ्लैट में रहेंगे।

रोशनी : हाय दैया तुम कितनी अच्छी हो।

चंद्रा : अब यह फ्लैट मेरा नहीं हमारा है। अब सब कुछ हमारा है।

[संगीत उभरता है।]

डा० जैन : जी हाँ, आप लोग जो कह रहे हैं उसकी मैं इज्जत करता हूँ। पर आप सबको यह याद दिलाना चाहता हूँ कि जमाने के साथ हमें सही ढंग से बदलते रहना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि हर पुरानी चीज अच्छी है और हर नई चीज बुरी है। शादी-ब्याह खासकर चंद्रा जी के साथ मेरी शादी, इस उम्र में हमारी शादी कोई रोमेंटिक शादी नहीं है। हम इसलिए शादी कर रहे हैं कि हम दोनों एक साथ कुछ ऐसा कर सकेंगे जो न मैं अकेले कर सकता था, न अकेली चंद्राजी कर सकती थीं।

दयानंद : लेकिन डाक्टर साहब, इस कालोनी को 'खुशबू' नाम तो आपने ही दिया।

डिम्पल : मैं यह कहती हूँ, मुझे माफ कीजिए। मैं आप सबसे उम्र में छोटी हूँ। चंद्राजी और डाक्टर साहब की शादी अपने आप में एक पूरी खुशबू है। इसमें और कोई मिलावट नहीं होनी चाहिए।

दयानंद : अरे ! डिम्पल ने ऐसी बात कहकर हम सबको चुप कर दिया।

सेठी : अरे, ये तो बच्ची है डिम्पल। इसे क्या मालूम ब्याह-शादी क्या होता है।

डा० जैन : इसने सही बात कही है। उम्र से कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। जिसमें जितनी

समझदारी है, वह उतना ही बड़ा है। इसी बड़प्पन से एक समाज बनता है। समाज के प्रति जो जितना जगा होता है, उसी से समाज कल्याण होता है। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी है कि इस कालोनी में तमाम नौजवान लड़के-लड़कियाँ समाज की गरीबी, पिछड़ेपन, गंदगी के प्रति चिंतित हैं और मेरे साथ झुग्गी-झोंपड़ी और पिछड़ी कालोनियों में खुले दिल से काम करते हैं।

रोशनी : तो ठीक है डाक्टर साहब। लेकिन हमारी भी तो कोई खुशी है?

एक आवाज : आपकी शादी में भांगड़ा-ढोल मैं बजाऊँगा।

रोशनी : और मैं दयानद चौधरी के साथ भांगड़ा नाच्चूँगी। (**सबकी हँसी**)

डिम्पल : अरे, चंद्राजी आ रही है—गोद में बच्ची लिए हुए।

रोशनी : राम-राम, चंद्राजी! लाइए, बच्ची मुझे दे दीजिए।

डा० जैन : बच्ची मेरी गोद में भी तो रहनी चाहिए। लाइए, चंद्राजी, बच्चे को कैसे गोद लिया जाता है—मुझे भी तो ट्रेनिंग लेनी है। (**बच्ची को प्यार करते हैं**)

चंद्रा : यहाँ इतनी बड़ी पंचायत क्यों बैठी है? क्या चर्चा चल रही है?

रोशनी : आपकी शादी की। आपकी शादी हम सुक्खी नहीं होने देंगे।

चंद्रा : कितना खर्च करना चाहते हैं आप लोग हमारी शादी पर—बोलिए, बताइए। कुछ तो कहिए।

दयानंद : बीस हजार।

सेठी : नहीं, इक्यावन हजार।

चंद्रा : इक्यावन हजार? लाइए मुझे दीजिए।

दयानंद : आप क्या करेंगी? आप तो दुल्हन बनी रहेंगी। और डाक्टर साहब दूल्हा।

चंद्रा : जी नहीं। न मेरी उम्र दुल्हन बनने की रह गई है और न डाक्टर साहब की उम्र दूल्हा बनने की। हम दोनों पति-पत्नी बनकर एक-दूसरे की सहायता करेंगे और दोनों मिलकर आप सबकी सहायता।

डा० जैन : आप सबको मालूम है, यह 'खुशबू कालोनी' न गाँव है, न शहर है। 'खुशबू कालोनी' के पीछे गाँव की आबादी है और इसके आगे महानगर की आबादी। हमने गाँव की बुराइयाँ ले रखी हैं और महानगर की बुराइयाँ लेते जा रहे हैं।

दयानंद : ये बात तो बिल्कुल सही है डाक्टर साहब।

चंद्रा : इक्यावन हजार से हम एक छोटे-से अस्पताल की नींव डालेंगे और उसमें काम शुरू करेंगे। उन स्त्री-पुरुषों के बीच जिन्हें अब तक पता ही नहीं है कि पति-पत्नी के बीच बच्चा पैदा करने का ही रिश्ता नहीं है बल्कि वह रिश्ता है एक-दूसरे की ऐसी मदद करने का जिससे दोनों का जीवन मिलकर एक ऐसे जीवन का उदाहरण दे जहाँ सही मायने में सुख-शांति मिले। सुख-शांति वहीं है जहाँ हर तरह की मर्यादा है और संयम है—सिर्फ एक या दो बच्चों का ही माँ-बाप बनने का।

डा० जैन : आप सब हमें अपनी मंगल कामनाएँ दें और सदा हम एक-दूसरे की मदद में काम आएँ। यही है हमारे विवाह का जश्न।

[**प्रसन्नता-भरा संगीत। और उसी संगीत से इसका समापन**]

इनविज़ीलेटर

पात्र

राकेश
विनोद
दिलीप
रीटा
मंजु
नवयुवा परीक्षार्थी
मास्टर-इनविजीलेटर

[एक चौकोर टेबुल के चारों ओर कुर्सियों पर पाँचों परीक्षार्थी बैठे हैं। टेबुल के ऊपर बीचोबीच हवा में एक खंजर (लंबा चाकू) लटक रहा है। पर्दा उठते ही, या प्रकाश आते ही हम देखते हैं, राकेश और रीटा के पास ट्रांजिस्टर बज रहे हैं। विनोद और मंजु के सामने फिल्मी मैगजीन खुली है, दिलीप सिगरेट पी रहा है। और सभी परीक्षार्थी अपनी कापियाँ लिख रहे हैं। और अपने मनोरंजन में भी लगे हैं। मास्टर खड़ा हनुमान चालीसा पढ़ रहा है—]

जै हनुमान ज्ञान गुनसागर
जै कपीस तिहुँलोक उजागर
रामदूत अतुलित बलधामा
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।

राकेश : अजी धीरे-धीरे···देखते नहीं, हम रेडियो सीलोन सुन रहे हैं।

दिलीप : मास्ट साहब, माचिस होगी ?

मास्टर : क्या ? भई, तुमने अपने 'डिमांड' में माचिस की माँग नहीं की थी।

दिलीप : कैसे हो सकता है ? बिना माचिस के मैं सिगरेट कैसे दाग सकता हूँ ?

मास्टर : तुम तो 'चेन स्मोकर' हो, तुम्हारी सिगरेट बुझी कैसे ?

दिलीप : पेपर लिखने में लगा था, जाहिर है सिगरेट बुझ गई।

मास्टर : यह है तुम्हारा डिमांड कार्ड, इसमें तुम्हारी 'डिमांड्स' थीं। नंबर एक—हमारे पास गाइड्स और कुंजी होनी चाहिए। नम्बर दो—सिगरेट पीने की आजादी। नंबर तीन, नकल करने की पूरी छूट। नंबर चार, आपस में बातें करने-पूछने का अधिकार। नंबर पाँच बॉय फ्रेंड्स को टेलीफोन करने की आजादी। नंबर छह, सिगरेट-पान-चाय का अधिकार।

दिलीप : अच्छा तो आप इसमें माचिस की बात भी लिख लीजिए।

मास्टर : अब नहीं हो सकता।

विनोद : प्लीज, कीप क्वायट। देखते नहीं कितना अच्छा गाना चल रहा है—मेरा 'कंस्ट्रेशन' टूट जाएगा।

रीटा : मुझे नकल करने में दिक्कत हो रही है।

मंजु : मास्टर साहब, 'राइट' की जरा 'स्पेलिंग' बताइए।

मास्टर : 'डिक्शनरी' रखी है, देख लीजिए।

मंजु : हमारे पास इतना वक्त नहीं है।

मास्टर : आपस में पूछ लेना !

मंजु : मास्टर साहब, प्लीज़, जरा डिक्शनरी देख कर बता दीजिए न। 'राइट' की स्पेलिंग !

मास्टर : कहाँ है तुम्हारा डिमांड कार्ड। (निकाल कर पढ़ता है) यह रहा तुम्हारा डिमांड कार्ड। नम्बर एक, अंग्रेजी-हिन्दी की सब तरह की डिक्शनरियाँ, नम्बर दो—मेकअप करने की आजादी। नम्बर तीन—नकल करने की पूरी छूट। नंबर चार—'बॉय फ्रेन्ड्स' को टेलीफोन करने का अधिकार···वगैरह-वगैरह। इसमें कहीं यह डिमांड नहीं है कि 'इनविज़ीलेटर' स्पेलिंग बताए।

दिलीप : क्यों शोर करते हो ? लिख लो 'राइट' की स्पेलिंग है—आर आई टी इ।

मंजु : थैंक्यू यू···राइट।

रीटा : थैंक्यू को हिंदी में क्या कहते हैं ?

राकेश : मास्टर साहब से पूछो ना !

मास्टर : यह कहीं डिमांड में नहीं है कि तुम्हें अंग्रेजी शब्दों का हिन्दी अनुवाद बताया जाए ! चलो सावधानी से नकल करो।

दिलीप : प्लीज़ माचिस···यह बहुत ज़रूरी है···वर्ना मैं पेपर नहीं दे पाऊँगा।

विनोद : यह लो यार···मगर एक सिगरेट मुझे भी।

[दोनों सिगरेट दागते हैं।]

राकेश : यार, अच्छा गाना चल रहा है।

रीटा : चुप रहो, मैं अपनी 'फेवरेट हिरोइन' पर निबंध लिख रही हूँ।

मंजु : मैं यह सवाल हरगिज नहीं कर सकती। मैंने डिमांड की थी, लड़कियों का प्रश्न-पत्र लड़कों के प्रश्नपत्र से अलग होना चाहिए···

मास्टर : यह कैसे हो सकता है !

मंजु : यह कैसे हो सकता है कि मेरी 'फेवरेट हिरोइन' हो, हमारा फेवरेट तो हीरो होगा।

रीटा : अरे···रे···रे···मैं तो राजेश खन्ना पर निबंध लिख रही हूँ।

मंजु : वह तो हीरो है।

रीटा : समझी नहीं तुम···लड़कियाँ हीरो पर लिखेंगी···और लड़के हिरोइन पर···

सभी : क्यों मास्टर साहब ?

मास्टर : मैं कुछ नहीं जानता। समझ लो···और कान खोलकर सुन लो, मैं यहाँ इसलिए खड़ा हूँ, ताकि तुम सबको नकल करने में कोई कठिनाई न हो, जो-जो तुम्हारे 'डिमांड्स' हैं वे पूरे होते रहें।

राकेश : नकल करने के अलावा हम लोग जितना कुछ अपने दिमाग से लिखें, उसे हर हालत में सही मान कर जांचा आए।

विनोद : 'एग्जैक्टली।'

दिलीप : बिल्कुल !

रीटा : यह हम सबकी मांग है !

मंजु : ऐ···सुन रहे हो कि नहीं ?

मास्टर : मैं सब सुन रहा हूँ···लिखते चलो लिखते, बेकार की बातों में वक्त मत बर्बाद करो···पूरे ढाई बज चुके हैं···ठीक तीन बजे वक्त खत्म हो जाएगा।

राकेश : कैसे ?

विनोद : हमने तीन घंटे के पेपर के लिए पाँच घंटे की डिमांड की है।

मास्टर : भाई, तीन बजे पूरे पाँच घंटे हो जाएँगे।

[फोन आता है।]

मास्टर : हेलो···जी···जी हाँ, हैं···आपका फोन···

रीटा : (फोन पर) हाय···फाइन···कैसे हो ? अच्छा पेपर है, थोड़ा 'बोर' है ··हाय 'इनविज़लेटर' ? बड़ा बोर है···हाँ, हाँ, माथे पर तिलक लगाए है···हाथ में हनुमान चालीसा लिए है···नहीं-नहीं, तुम्हारे आने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह कोई खास बदमाशी नहीं कर रहा है। अच्छा, बाय, पिक्चर हाल के बाहर मेरा इंतज़ार करना···हेलो-हेलो···'थैंक्यू' का हिंदी अनुवाद क्या है···स्वागत··· अच्छा···थैंक्यू···बाई···

[फोन रखती है और अपने बैग से थोड़ा मेकअप देखती है।]

रीटा : हमारी माँग का क्या हुआ ?

मास्टर : मैं नयी माँगों के बारे में कुछ नहीं जानता···प्रिंसिपल के पास जाओ !

राकेश : आप जाइए···और प्रिंसिपल को बताइए कि हमारी माँग है कि हम लोग जो कुछ भी अपने मन से लिखें, उसे हर हालत में सही मानकर जाँचा जाए।

मास्टर : देखूँ···क्या लिखा है अपने मन से ?

राकेश : मैं तो अभी नकल कर रहा हूँ।

मास्टर : किसी ने कुछ लिखा है अपने मन से ?

मंजु : मैंने लिखा है। यह देखिए ?

मास्टर : (पढ़ता है) प्रश्न है—'महात्मा बुद्ध की जीवनी पर प्रकाश डालो' और आप लिखती हैं—महात्मा बुद्ध का जन्म बंबई में 'जुहूबीच' पर हुआ था। बचपन से उनके मन में वैराग्य होने के नाते वह अक्सर अकेले 'मेरिनड्राइव' पर घूमते पाए जाते थे। और जब बहुत उदास हो जाते थे तो पिक्चर देखने चल पड़ते थे। एक बार 'सेकेण्ड शो' देख कर पैदल घर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें एक बूढ़ा मिला। उन्होंने उससे पूछा, 'तुम इतने बूढ़े क्यों हो ?' उसी समय उन्हें एक गीत सुनायी पड़ा—'मैं क्या करूँ राम मुझे बुड्ढा मिल गया'···यही लिखा है तुमने अपने मन से ? और इसे सही मान कर जाँचा जाए ?

सभी : विद्यार्थी एकता ज़िन्दाबाद।

मास्टर : आर्डर···आर्डर···बैठिए···बैठिए···मैं प्रिंसिपल के पास जाता हूँ ! (प्रस्थान)

राकेश : डर गया न ?

विनोद : डरता नहीं तो···बाहर निकलते ही उसे उस तरह मारता, जैसे 'मेरे अपने' फिल्म में शत्रुघ्न सिन्हा को विनोद खन्ना ने मारा, घू···घू···घूआ···घू !

दिलीप : यार, चुप भी रहो···नकल करने में दिक्कत हो रही है !

विनोद : यार, इस साल पास ही होना चाहते हो क्या ?

दिलीप : यार तीन साल हो गए एक ही क्लास में !

विनोद : तो क्या हो गया, मेरा भी तो तीसरा साल है !

[फोन आता है ।]

राकेश : (फोन पर) हलो·· मास्टर साहब की धर्मपत्नी ! नमस्ते जी···जी हाँ, वह खैरियत से हैं···अब तक उस पर कोई हमला नहीं हुआ है···जी···नमस्ते···जी बता दूँगा । (फोन रखना) मास्टरनी जी बहुत घबड़ाई हुई हैं ।

रीटा : उस गाने की दूसरी लाइन क्या है ?···'आप यहाँ आए किसलिए ?'

राकेश : 'आपने बुलाया इसलिए ।' (गाने लगते हैं ।)

मंजु : 'आए हैं तो काम भी बताइए ?'

विनोद : 'पहले जरा आप मुस्कराइए ।'

रीटा : 'मुस्कराने की न कोई बात है ।'

रीटा : 'देखिए तो क्या हसीन रात है ।'

सभी : 'अजी काम तो बताइए, बताइए । पहले जरा आप मुस्कराइए !'

[गाने का शोर मच जाता है । मास्टर दौड़ा आता है ।]

मास्टर : आर्डर···आर्डर ! बैठिए···टेक योर सीट्स ।

[सब बैठ जाते हैं ।]

मास्टर : यह किस फिल्म का गाना है ?

सभी : 'कल आज और कल' ।

मास्टर : अभी चल रही है ?

रीटा : चली भी गई !

मास्टर : अच्छी फिल्म रही होगी !

मंजु : अजी डब्बू ने क्या फर्स्ट क्लास एक्टिंग की !

विनोद : बबीता ने क्या रोल अदा किया है···वाह !

[मास्टर हँसने लगता है । सब उसकी नकल करते हैं ।]

मास्टर : शांत···शांत !

राकेश : अजी हमारे 'डिमांड' का क्या हुआ ?

मास्टर : प्रिंसिपल साहब ने कहा है, आप लोग अपने मन से कम-से-कम लिखिए, ज्यादातर नकल ही कीजिए । जो परीक्षार्थी जितना अधिक नकल करके लिखेगा, उसे उतने ही अधिक नम्बर दिए जाएँगे ।

[परीक्षार्थी नकल करने में लग गए हैं। फोन आता है।]

मास्टर : (**फोन पर**) हेलो···लीजिए आपका फोन !

विनोद : (**फोन पर**) हेलो रीटा···फाइन···ज़रूर वंडरफुल ! हाँ-हाँ, हमारी सारी माँगें पूरी हुई हैं···और तुम्हारे यहाँ ?···क्या ? अपने इनविज़ीलेटर को जरा फोन तो देना···हेलो···इनविज़ीलेटर साहब, तुम्हारी शादी हुई है या नहीं ? और इन्श्योरेंस ? मुझे अफसोस है···'आई वार्न यू !' हॉल के बाहर निकलिए तो पता चलेगा···क्या ? अच्छा जी···! (**फोन रख कर**) कमाल है···कहता है 'कोई परवाह नहीं' !

मास्टर : हमारी एकता जिन्दाबाद ! दुनिया के 'इनविज़ीलेटर्स' एक हो जाओ।

राकेश : शट अप !

मास्टर : यू शट अप ?

सभी : यू···यू···शटअप···शटअप !

[सन्नाटा]

मास्टर : प्यारे मित्रो, अपना काम करो···मुझसे झगड़ने में तुम्हें क्या मिलेगा ? मैं यहाँ तुम्हीं लोगों की मदद के लिए खड़ा हूँ ! ईश्वर करे तुम सब पास हो जाओ। तुम्हीं इस देश की आशा हो···तुम्हीं लोग भविष्य हो···मेरे होनहार प्यारे दोस्तो···!

दिलीप : क्या कहा ? क्या कहा ? जरा फिर से बोलिए···इसे मैं यहाँ फिट कर दूँ···मतलब मैंने अब तक कुछ भी नहीं लिखा।

मास्टर : क्यों, नकल भी नहीं कर सकते ?

दिलीप : अगली बार मैं 'सॉल्व्ड पेपर्स' के लिए 'डिमांड' करूँगा।

मास्टर : (**कापी उठाकर देखना**) कोरी है, कोरी है···दिल की किताब कोरी है, कोरी है ! (**गाना**)

दिलीप : दिल की किताब कोरी है। (**गाना**)

मंजु : (**गाना**) कोरी है···कोरी ही रहने दो !

[फोन की घंटी]

मास्टर : हेलो···ओह, तुम हो लल्लू की अम्मा···हाँ-हाँ, यहाँ सब कुशल-मंगल है। हाँ, अभी तक तो जीवित हूँ···ना ना ना, ऐसा क्यों करती हो। चिता बनाने की क्या ज़रूरत···लल्लू की अम्मा, हनुमान जी सदा सहाय, सदा सहाय, मैं मरूँगा नहीं···हाय, तुम विधवा होने की बात क्यों करती हो ? सुनो तो, एक ओर तुम कहती हो कि चिता लगाकर मेरी लाश के साथ सती हो जाओगी। यह मैं क्या सुन रहा हूँ। ये बातें मैं हर्गिज नहीं बर्दाश्त कर सकता। मैं इस समय अपने जीवन की सबसे बड़ी और कड़ी परीक्षा से गुजर रहा हूँ। तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए···यस···हाँ···हाँ···ढाई रुपये का प्रसाद बोल दो···तुम मेरी जीवन-रक्षा के लिए

[परीक्षार्थी नकल करने में लग गए हैं। फोन आता है।]

मास्टर : **(फोन पर)** हेलो···लीजिए आपका फोन !

विनोद : **(फोन पर)** हेलो रीटा···फाइन···जरूर वंडरफुल ! हाँ-हाँ, हमारी सारी माँगें पूरी हुई हैं···और तुम्हारे यहाँ ?···क्या ? अपने इनविज़ीलेटर को जरा फोन तो देना···हेलो···इनविज़ीलेटर साहब, तुम्हारी शादी हुई है या नहीं ? और इन्श्योरेंस ? मुझे अफसोस है···'आई वार्न यू !' हॉल के बाहर निकलिए तो पता चलेगा···क्या ? अच्छा जी···! **(फोन रख कर)** कमाल है···कहता है 'कोई परवाह नहीं' !

मास्टर : हमारी एकता जिन्दाबाद ! दुनिया के 'इनविज़ीलेटर्स' एक हो जाओ।

राकेश : शट अप !

मास्टर : यू शट अप ?

सभी : यू···यू···शटअप···शटअप !

[सन्नाटा]

मास्टर : प्यारे मित्रो, अपना काम करो···मुझसे झगड़ने में तुम्हें क्या मिलेगा ? मैं यहाँ तुम्हीं लोगों की मदद के लिए खड़ा हूँ ! ईश्वर करे तुम सब पास हो जाओ। तुम्हीं इस देश की आशा हो···तुम्हीं लोग भविष्य हो···मेरे होनहार प्यारे दोस्तो···!

दिलीप : क्या कहा ? क्या कहा ? जरा फिर से बोलिए···इसे मैं यहाँ फिट कर दूँ···मतलब मैंने अब तक कुछ भी नहीं लिखा।

मास्टर : क्यों, नकल भी नहीं कर सकते ?

दिलीप : अगली बार मैं 'सॉल्व्ड पेपर्स' के लिए 'डिमांड' करूँगा।

मास्टर : **(कापी उठाकर देखना)** कोरी है, कोरी है···दिल की किताब कोरी है, कोरी है ! **(गाना)**

दिलीप : दिल की किताब कोरी है। **(गाना)**

मंजु : **(गाना)** कोरी है···कोरी ही रहने दो !

[फोन की घंटी]

मास्टर : हेलो···ओह, तुम हो लल्लू की अम्मा···हाँ-हाँ, यहाँ सब कुशल-मंगल है। हाँ, अभी तक तो जीवित हूँ···ना ना ना, ऐसा क्यों करती हो। चिता बनाने की क्या जरूरत···लल्लू की अम्मा, हनुमान जी सदा सहाय, सदा सहाय, मैं मरूँगा नहीं···हाय, तुम विधवा होने की बात क्यों करती हो ? सुनो तो, एक ओर तुम कहती हो कि चिता लगाकर मेरी लाश के साथ सती हो जाओगी। यह मैं क्या सुन रहा हूँ। ये बातें मैं हर्गिज नहीं बर्दाश्त कर सकता। मैं इस समय अपने जीवन की सबसे बड़ी और कड़ी परीक्षा से गुजर रहा हूँ। तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए··· यस···हाँ···हाँ···ढाई रुपये का प्रसाद बोल दो···तुम मेरी जीवन-रक्षा के लिए

विनोद : डरता नहीं तो···बाहर निकलते ही उसे उस तरह मारता, जैसे 'मेरे अपने' फिल्म में शत्रुघ्न सिन्हा को विनोद खन्ना ने मारा, घू···घू···घूआ···घू !
दिलीप : यार, चुप भी रहो···नकल करने में दिक्कत हो रही है !
विनोद : यार, इस साल पास ही होना चाहते हो क्या ?
दिलीप : यार तीन साल हो गए एक ही क्लास में !
विनोद : तो क्या हो गया, मेरा भी तो तीसरा साल है !

[फोन आता है।]

राकेश : (फोन पर) हलो··· मास्टर साहब की धर्मपत्नी ! नमस्ते जी···जी हाँ, वह खैरियत से हैं···अब तक उन पर कोई हमला नहीं हुआ है···जी···नमस्ते···जी बता दूँगा। (फोन रखना) मास्टरनी जी बहुत घबड़ाई हुई हैं।
रीटा : उस गाने की दूसरी लाइन क्या है ?····'आप यहाँ आए किसलिए ?'
राकेश : 'आपने बुलाया इसलिए।' (गाने लगते हैं।)
मंजु : 'आए हैं तो काम भी बताइए ?'
विनोद : 'पहले जरा आप मुस्कराइए।'
रीटा : 'मुस्कराने की न कोई बात है।'
रीटा : 'देखिए तो क्या हसीन रात है।'
सभी : 'अजी काम तो बताइए, बताइए। पहले जरा आप मुस्कराइए !'

[गाने का शोर मच जाता है। मास्टर दौड़ा आता है।]

मास्टर : आर्डर···आर्डर ! बैठिए···टेक योर सीट्स।

[सब बैठ जाते हैं।]

मास्टर : यह किस फिल्म का गाना है ?
सभी : 'कल आज और कल'।
मास्टर : अभी चल रही है ?
रीटा : चली भी गई !
मास्टर : अच्छी फिल्म रही होगी !
मंजु : अजी डब्बू ने क्या फर्स्ट क्लास एक्टिंग की !
विनोद : बबीता ने क्या रोल अदा किया है···वाह !

[मास्टर हँसने लगता है। सब उसकी नकल करते हैं।]

मास्टर : शांत···शांत !
राकेश : अजी हमारे 'डिमांड' का क्या हुआ ?
मास्टर : प्रिंसिपल साहब ने कहा है, आप लोग अपने मन से कम-से-कम लिखिए, ज्यादातर नकल ही कीजिए। जो परीक्षार्थी जितना अधिक नकल करके लिखेगा, उसे उतने ही अधिक नम्बर दिए जाएँगे।

[परीक्षार्थी नकल करने में लग गए हैं। फोन आता है।]

मास्टर : **(फोन पर)** हेलो···लीजिए आपका फोन !

विनोद : **(फोन पर)** हेलो रीटा···फाइन···ज़रूर वंडरफुल ! हाँ-हाँ, हमारी सारी माँगें पूरी हुई हैं···और तुम्हारे यहाँ ?···क्या ? अपने इनविज़ीलेटर को जरा फोन तो देना···हेलो···इनविज़ीलेटर साहब, तुम्हारी शादी हुई है या नहीं ? और इन्श्योरेंस ? मुझे अफसोस है···'आई वार्न यू !' हॉल के बाहर निकलिए तो पता चलेगा···क्या ? अच्छा जी···! **(फोन रख कर)** कमाल है···कहता है 'कोई परवाह नहीं' !

मास्टर : हमारी एकता जिन्दाबाद ! दुनिया के 'इनविज़ीलेटर्स' एक हो जाओ।

राकेश : शट अप !

मास्टर : यू शट अप ?

सभी : यू···यू···शटअप···शटअप !

[सन्नाटा]

मास्टर : प्यारे मित्रो, अपना काम करो···मुझसे झगड़ने में तुम्हें क्या मिलेगा ? मैं यहाँ तुम्हीं लोगों की मदद के लिए खड़ा हूँ ! ईश्वर करे तुम सब पास हो जाओ। तुम्हीं इस देश की आशा हो···तुम्हीं लोग भविष्य हो···मेरे होनहार प्यारे दोस्तो···!

दिलीप : क्या कहा ? क्या कहा ? ज़रा फिर से बोलिए···इसे मैं यहाँ फिट कर दूँ···मतलब मैंने अब तक कुछ भी नहीं लिखा।

मास्टर : क्यों, नकल भी नहीं कर सकते ?

दिलीप : अगली बार मैं 'सॉल्व्ड पेपर्स' के लिए 'डिमांड' करूँगा।

मास्टर : **(कापी उठाकर देखना)** कोरी है, कोरी है···दिल की किताब कोरी है, कोरी है ! **(गाना)**

दिलीप : दिल की किताब कोरी है। **(गाना)**

मंजु : **(गाना)** कोरी है···कोरी ही रहने दो !

[फोन की घंटी]

मास्टर : हेलो···ओह, तुम हो लल्लू की अम्मा···हाँ-हाँ, यहाँ सब कुशल-मंगल है। हाँ, अभी तक तो जीवित हूँ···ना ना ना, ऐसा क्यों करती हो। चिता बनाने की क्या ज़रूरत···लल्लू की अम्मा, हनुमान जी सदा सहाय, सदा सहाय, मैं मरूँगा नहीं···हाय, तुम विधवा होने की बात क्यों करती हो ? सुनो तो, एक ओर तुम कहती हो कि चिता लगाकर मेरी लाश के साथ सती हो जाओगी। यह मैं क्या सुन रहा हूँ। ये बातें मैं हर्गिज नहीं बर्दाश्त कर सकता। मैं इस समय अपने जीवन की सबसे बड़ी और कड़ी परीक्षा से गुजर रहा हूँ। तुम्हें मेरा साथ देना चाहिए··· यस···हाँ···हाँ···ढाई रुपये का प्रसाद बोल दो···तुम मेरी जीवन-रक्षा के लिए

शिव तांडव का मंत्र-जाप करती रहो···हाँ, हाँ, वह लाल धागा और तावीज़ मैं बाँधे हूँ···बस, चिंता मत करो लल्लू की माँ। अलविदा (फोन रख कर) अलविदा···अलविदा—क्या, कहाँ?

राकेश : (सहसा गा उठता है) आओ ना···तड़पाओ ना···ओ मेरी शर्मीली···

मास्टर : आर्डर···आर्डर···आर्डर···वक्त खत्म हो रहा है।

सभी : आर्डर···आर्डर···!

मास्टर : धन्यवाद !···समझ गए ना···'थैंक्यू' का हिन्दी अनुवाद है धन्यवाद··· स्वागतम नहीं।

रीटा : 'नॉन्सेन्स' हुअँ···जो मेरा बॉय फ्रेन्ड बताएगा मैं वही लिखूँगी।

मंजु : इन टीचरों की जनरेशन रट-रट कर पास हुई है।

मास्टर : और यह जनरेशन नकल करके भी न पास होगी।

राकेश : हमें तुम्हारे ये झूठे इम्तहान नहीं चाहिए।

विनोद : हमें बिना परीक्षा के पास किया जाए।

दिलीप : हमें तुम्हारी दो कौड़ी की डिग्रियाँ नहीं चाहिए !

रीटा : जो हम से टकराएगा···

सभी : चूर-चूर हो जाएगा···

[इस बीच परीक्षार्थियों ने मास्टर को खदेड़ लिया है। मास्टर टेबुल के चारों ओर भागता फिरा रहा है···टेबुल के नीचे छिपता है···भागता है और ऊपर हवा में लटकता हुआ छुरा तेजी से हिलने लगा है।]

मास्टर : (हाथ जोड़ कर छुरे से प्रार्थना)

ओम जै जगदीश हरे
ओम छुरा भाई
तू मत हिला करे···
ओम जै जगदीश हरे !
ओम मेरा जी डरा करे
भाई तू मत हिला करे
जै जगदीश हरे···

[फोन की घंटी]

मास्टर : (फोन पर) जी सर···जी हाँ, प्रिंसिपल साहब, सब ठीकठाक ढंग से नकल कर रहे हैं। यस सर···मेरे यहाँ किसी प्रकार की गड़बड़ी नहीं है, शोर···शोर··· मेरे यहाँ? नहीं तो···जी बिल्कुल नहीं। जी सर···नहीं, मुझे 'फर्स्टएड' की जरूरत नहीं है···हाँ जी, अभी पहली बार 'अटैक' किया था मुझ पर, पर मुझे जरा भी चोट नहीं आई। जी मेरा ब्लडप्रेशर ठीक है···नाड़ी भी ठीक ही चल रही है···दिल भी करीब-करीब ठीक है···जी पुलिस का इंतजाम जरूर···जरूर

रखिएगा···थैंक्यू सर ! (**फोन रखना**) प्यारे बच्चो, तुम लोग जरूर-जरूर इस साल इम्तहान में पास होकर हमारा यह विद्यालय छोड़ दो ! तुम लोग ठाट से नकल करो। हमने तुम्हारी और अपनी हिफाजत के लिए पुलिस, फायरब्रिगेड, एम्बुलेंस को बुला रखा है। यकीन न हो तो बाहर देख लो ?

राकेश : चुप रहो !

विनोद : बेमतलब चकर-चकर करता है।

मास्टर : है, ठीक से बात करो !

दिलीप : तुम्हारी यह हिम्मत ?

मास्टर : तुम्हारी यह हिम्मत !

राकेश : निकालें छुरी ?

विनोद : (**निकालता है**) यह देखो !

मास्टर : (**उससे बड़ी छुरी निकालता है**) यह देखो···और यह न भूलो कि तुम लोग मेरे ही विद्यार्थी हो !

दिलीप : इसे चलाना भी जानते हो ?

मास्टर : अरे, तुम लोग बम्बई की ही फिल्में देखते हो, मैं अंगरेजी फिल्में देखता हूँ। बी० ए० में हैमलेट नाटक पढ़ाता हूँ—वाह-वाह···वह तलवार का दृश्य···!

[फोन आता है।]

मास्टर : क्या ? ···ओह, लल्लू की माँ···क्यों इतनी चिंता करती हो ? क्या ? क्या ? इन्श्योरेंस दफ्तर से चिट्ठी आ गई···क्या लिखा है ? ···हाँ···हाँ···क्या, हमारा इंश्योरेंस खत्म ? यह कैसे हो सकता है ? हो गया···मतलब ?

राकेश : मतलब जैसे लड़ाई के दिनों में एअर फोर्स के पायलेट्स के इंश्योरेंस नहीं होते···इसी तरह परीक्षा के दिनों में अध्यापकों के भी इंश्योरेंस नहीं होते !

[फोन रखकर मास्टर तेज़ी से बाहर भागता है।]

विनोद : क्या बज रहा है ?

दिलीप : ढाई।

मंजु : जी नहीं, पौने तीन !

[सब तेज़ी से लिख रहे हैं।]

राकेश : यार, गीता किसने लिखी ?

रीटा : हरे कृष्णा ने !

विनोद : गलत। हरे कृष्णा ने तो महाभारत की 'वार' में गीता कही थी···जिसको लिखा था स्टेनो मिस्टर व्यास ने।

राकेश : थैंक्यू···!

दिलीप : यार, चाय बिना मेरा गला सूख गया।

राकेश : गाना नहीं गाना है यार···झटपट नकल करो।

रखिएगा···थैंक्यू सर ! (फोन रखना) प्यारे बच्चो, तुम लोग जरूर-जरूर इस साल इम्तहान में पास होकर हमारा यह विद्यालय छोड़ दो। तुम लोग ठाट से नकल करो। हमने तुम्हारी और अपनी हिफाजत के लिए पुलिस, फायरब्रिगेड, एम्बुलेंस को बुला रखा है। यकीन न हो तो बाहर देख लो ?

राकेश : चुप रहो !

विनोद : बेमतलब चकर-चकर करता है।

मास्टर : है, ठीक से बात करो !

दिलीप : तुम्हारी यह हिम्मत ?

मास्टर : तुम्हारी यह हिम्मत !

राकेश : निकालें छुरी ?

विनोद : (**निकालता है**) यह देखो !

मास्टर : (**उससे बड़ी छुरी निकालता है**) यह देखो···और यह न भूलो कि तुम लोग मेरे ही विद्यार्थी हो !

दिलीप : इसे चलाना भी जानते हो ?

मास्टर : अरे, तुम लोग बम्बई की ही फिल्में देखते हो, मैं अंगरेजी फिल्में देखता हूँ। बी० ए० में हैमलेट नाटक पढ़ाता हूँ—वाह-वाह···वह तलवार का दृश्य···!

[फ़ोन आता है।]

मास्टर : क्या ?···ओह, लल्लू की माँ···क्यों इतनी चिंता करती हो ? क्या ? क्या ? इन्श्योरेंस दफ्तर से चिट्ठी आ गई···क्या लिखा है ?···हाँ···हाँ···क्या, हमारा इंश्योरेंस खत्म ? यह कैसे हो सकता है ? हो गया···मतलब ?

राकेश : मतलब जैसे लड़ाई के दिनों में एअर फोर्स के पायलट्स के इंश्योरेंस नहीं होते···उसी तरह परीक्षा के दिनों में अध्यापकों के भी इंश्योरेंस नहीं होते !

[फोन रखकर मास्टर तेजी से बाहर भागता है।]

विनोद : क्या बज रहा है ?

दिलीप : ढाई।

मंजु : जी नहीं, पौने तीन !

[सब तेजी से लिख रहे हैं।]

राकेश : यार, गीता किसने लिखी ?

रीटा : हरे कृष्णा ने !

विनोद : गलत। हरे कृष्णा ने तो महाभारत की 'वार' में गीता कही थी···जिसको लिखा था स्टेनो मिस्टर व्यास ने।

राकेश : थैंक्यू···!

दिलीप : यार, चाय बिना मेरा गला सूख गया।

राकेश : गाना नहीं गाना है यार···झटपट नकल करो।

दिलीप : इस तीसरे सवाल का जवाब किस किताब में है ?

राकेश : नॉवेल्टी में क्या पिक्चर चल रही है ?

विनोद : 'जय बंगला देश !'

दिलीप : वाह, इतना भी नहीं पता···वह पिक्चर हट गयी···!

राकेश : हट नहीं गयी, 'बैन' कर दी गयी।

दिलीप : (किताब ढूँढ़ रहा है) इस सवाल का जवाब किस 'गाइड' में है ? मास्टर भी न जाने कहाँ चला गया ?

रीटा : डर कर भाग गया।

मंजु : उस बेचारे का 'इंश्योरेंस' खत्म हो गया।

रीटा : बड़ा बहादुर बनता था !

दिलीप : यार, अब रेडियो बंद करो।

राकेश : ना ना ना, बिना रेडियो संगीत के मैं कुछ नहीं लिख सकता।

विनोद : अभी मेरे तीन सवाल बाकी हैं।

दिलीप : महात्मा गांधी का पूरा नाम इस 'गाइड' में दिया ही नहीं है। क्या नाम था पूरा उनका ?

राकेश : पूरा नाम लिखने की कोई ज़रूरत नहीं !

दिलीप : 'दैट्स राइट' ! (लिखता है।)

[बाहर से मास्टर का प्रवेश ! वह अपनी रक्षा में जैसे लोहे का वस्त्र पहने आया है। हाथ में ढाल लिए है। उसे देखकर सभी चिल्ला पड़ते हैं, 'भूत-भूत !']

मास्टर : मैं भूत नहीं···तुम्हारा वही 'इनविजीलेटर' हूँ !

राकेश : तुम्हारा मुँह किधर है ?

मास्टर : चुपचाप नकल करो ? परीक्षा का वक्त अब खत्म होने को है। जल्दी करो जल्दी !

राकेश : अभी तो हमारे काफी सवाल बाकी हैं।

मास्टर : तुम लोग नकल करने में लापरवाही करते हो !

विनोद : इस सवाल का जवाब किसी किताब में भी नहीं मिल रहा है···यह सवाल हमारे 'कोर्स' के बाहर है।

मास्टर : तुम लोग 'गाइड' और 'कुंजियों' के 'लेटेस्ट एडीशन' नहीं लेकर आए।

दिलीप : हमारे पास सारे 'एडीशंस' हैं।

मास्टर : मेरी लिखी हुई वह किताब है, 'मास्टर गाइड' ?

रीटा : जी हाँ, यह रही !

मास्टर : उसमें देखो, पेज दो सौ चार पर···अपने इस सवाल का जवाब !

[वह देखता है और पाकर खुशी-खुशी नकल करने लगता है।]

मास्टर : सावधान···जब पाँच मिनट वक्त रह जाएगा, तब मैं घंटी बजाऊँगा। चलो,

तेजी से काम करो, मेरे होनहार बच्चो !

राकेश : आप की घड़ी कहाँ से मिली हुई है ?

मास्टर : ऑल इंडिया रेडियो से !

रीटा : जी नहीं, रेडियो सीलोन से मिलाइए।

मास्टर : यह नहीं हो सकता। हममें राष्ट्रीय भावना होनी चाहिए।

विनोद : जी नहीं, हमें सिर्फ विद्यार्थी भावना चाहिए !

सभी : छात्र एकता ज़िंदाबाद !

मास्टर : आर्डर···आर्डर···बोलो क्या चाहते हो ?

रीटा : लाइए, आपकी घड़ी, रेडियो सीलोन से मिला दूँ···लाइए···बढ़िए···डरते क्यों हैं ?

मास्टर : मेरे पास घड़ी कहाँ है ? लल्लू की माँ ने कहा, 'घड़ी बाँधकर इम्तहान लेने मत जाओ'।

राकेश : फिर हम आपको खुद बता देंगे 'टाइम'।

मास्टर : थैंक्यू, मेरे प्यारे बच्चे···वैसे मैं तुम लोगों से कतई नहीं डरता। मेरे ऊपर न अब कोई छुरे-चाकू से वार कर सकता है, न ईंट-पत्थर से···मेरे ऊपर कोई तेज़ाब भी नहीं डाल सकता। तेल छिड़क कर मुझे अब कोई जला भी नहीं सकता ···मैं सरकारी 'बस' नहीं हूँ !

विनोद साइलेंस प्लीज़ !

मास्टर : साइलेंस !

सभी : साइलेंस !

मास्टर : साइलेंस !

[फोन की घंटी बजती है।]

मास्टर : हेलो···यस सर···यस सर ! जी, बहुत अच्छा !

[मास्टर फोन रख कर पाकेट से घंटी निकाल कर बजाता है।]

मास्टर : पाँच मिनट वक्त और। सिर्फ पाँच मिनट···ओनली फाइव मिनिट्स मोर··· अपनी-अपनी कापियाँ देखिए···अपने-अपने रोल नंबर चेक कीजिए···जल्दी कीजिए !

दिलीप : अभी मेरे आधे सवालात बाकी हैं।

विनोद : अभी दो सवाल मुझे नकल करने हैं।

राकेश : मुझे अभी एक घंटा वक्त और चाहिए !

रीटा : हाय···मैंने तो हिस्ट्री की नोटबुक से लिटरेचर के सवाल कर डाले। अब क्या होगा ?

मंजु : उसे 'लिटरेचर' समझा जाए।

सभी : (एक स्वर में) छात्र एकता ज़िंदाबाद !

[मास्टर बाहर भागता है ।]

दिलीप : हमें और वक्त चाहिए···!

विनोद : चाय बिना मेरा गला सूख रहा है !

राकेश : तुमने किस पर निबंध लिखा है ?

दिलीप : जया भादुड़ी पर !

विनोद : मैंने लिखा है बबीता पर···

राकेश : मेरी 'फेव्रिट हिरोइन' है मुमताज···

[मास्टर आता है ।]

मास्टर : आर्डर···आर्डर···तुम लोगों को एक घंटे का वक्त और दिया गया चलो··· 'पेपर्स' पूरा करो । अब तो खुश । चलो ।

रीटा : अरे···ये तो ठीक तीन बज गए ।

मंजु : तीन बज गए···मुझे ठीक सवा तीन बजे पिक्चर हाल पहुँचना है ।

राकेश : मैंने भी मैटिनी शो के टिकट खरीदे हैं ।

विनोद : मेरी भी एडवांस बुकिंग है ।

दिलीप : मेरी भी !

मास्टर : फिर ?

[सारे परीक्षार्थी आपस में सलाह करते हैं ।]

राकेश : हमारी डिमांड है—हम सबकी बाकी कापियाँ आप यहाँ बैठकर पूरी कीजिए !

मास्टर : मेरे पास भी वक्त नहीं । मुझे एक 'गाइड बुक' पूरी करनी है । इम्तहान की हजारों कापियाँ देखनी हैं ।

विनोद : खबरदार, तुम्हारे घर में आग लगा देंगे ?

दिलीप : तुझे दिन दहाड़े गायब कर देंगे ।

राकेश : चलो बैठो···बैठो ।

[मास्टर एक कुर्सी पर बैठता है ।]

रीटा : चलो हमारी कापियाँ पूरी करो !

राकेश : पहले लड़कों की कापियाँ !

मंजु : जी नहीं, पहले हमारी कापियाँ !

राकेश : यू शटअप !

रीटा : यू शटअप ।

मास्टर : आर्डर···आर्डर···मुझे नकल करने दो । सब पूरा कर दूंगा !

रीटा : अपने मन या दिमाग से एक भी नहीं लिखना ।

मंजु : सब नकल होनी चाहिए ।

मास्टर : अभी, मेरे पास इतना दिमाग होता तो मैं यहीं मास्टरी करता । जाओ।

बेफिकर रहो।

राकेश : सावधान, कोई गड़बड़ी नहीं होनी चाहिए !

मास्टर : जाओ, जाओ, पिक्चर का समय हो गया।

विनोद : तुम लिखना शुरू करो···जरा हम देखें तो सही !

[मास्टर नकल करता है।]

दिलीप : नहीं। एक-एक लाइन हर कापी पर···

मास्टर : तुम लोग चाहते क्या हो ?

सभी : पता नहीं।

मास्टर : धमकाते हो ?

राकेश : तुम्हें शर्म आनी चाहिए···तुम्हें चुल्लू-भर पानी में डूब मरना चाहिए।

मास्टर : लाओ चुल्लू भर पानी···मैं डूब जाऊँगा···लाओ !

[एक कप में पानी आता है। मास्टर अपने बख्तर (सुरक्षा-वस्त्र) सिरस्त्राण (टोप) उतारता है। और कप का पानी तेजी से पी जाता है।]

मास्टर : जै, हर-हर गंगे !

[जैसे वह पानी में डूब गया। टेबुल के नीचे अदृश्य। सब परेशान।]

राकेश : 'सॉरी सर', अब आप दर्शन दीजिए।

विनोद : आप महान हैं।

दिलीप : हम आपके लिए परेशान हैं।

रीटा : हाय, निकालिए ना।

[दूसरी युवती उन्हें खींच कर बाहर निकालती है।]

मास्टर : अच्छा···बाई-बाई।

सभी : बाई···!

[सब जाते हैं। मास्टर सबकी कापियाँ दौड़-दौड़ कर नकल करके लिख रहा है। ऊपर का लटकता हुआ छुरा हवा में हिल रहा है। परीक्षार्थी एकाएक बाहर से झाँककर देखते हैं।]

मास्टर : (देखकर) हें हें हें हें !

सभी : हें हें हें हें।

[पर्दा गिरता है।]

बिल्ली का खेल

पात्र

तीन लड़के
राजा
मंत्री
कुमार
जादूगर
बिल्ली

[पहला दृश्य खुलते ही तीन लड़के क्रमशः घोड़ा, गधा और बिल्ली लिए मंच पर दिखते हैं। बड़ा लड़का अपने घोड़े के साथ, मँझला अपने गधे के साथ बहुत खुश है। दोनों उपहास कर रहे हैं।]

पहला : मेरा घोड़ा कितना शानदार है।

दूसरा : मेरा गधा बोझा ढोने में होशियार है।

पहला : घोड़ा बड़ी बात है, बिल्ली वाहियात है।

दूसरा : हर वक्त···म्याऊँ म्याऊँ !

पहला : अपने मालिक को ही—खाऊं ! खाऊँ !

[हँसते हैं।]

मेरा घोड़ा बड़ा कमाऊ !

दूसरा : मेरा गधा है सीस नवाऊँ।

पहला : बिल्ली का तो काम है चोरी।

दूसरा : छोटी, ओछी और छिछोरी।

[छोटा लड़का कुमार अलग उदास बैठा है। बिल्ली अपने मालिक का उदास मुख देखकर दुखी है और उन दोनों भाइयों और जानवरों के मजाक से उसे गुस्सा आता है।]

बिल्ली : कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े। होंगे अपने घर के बड़े। माना ये दोनों मुझसे बड़े हैं। पर हैं छोटे तो क्या, हम भी यहाँ खड़े हैं। इनकी हिम्मत देखो, मेरे मालिक का मजाक करने चले हैं। हे घोड़े-गधे ! हे उनके मालिक ! मत हो शेखचिल्ली। मैं भी नहीं हूँ ऐसी मामूली बिल्ली। ऐसे मजे चखाऊँगी। बिल्ली चरित्र दिखाऊँगी। (**अपने मालिक से**) हे मेरे मालिक ! हे मेरे कुमार ! छोड़ो उदासी, करो विचार। ला दो मेरे लिए घुंघरू। मैं करूँ नाच—छम्मक छम्मा, देखें लोग—हुम्मक हम्मा।

[इस बीच दोनों भाई और उनके जानवर बिल्ली पर हँसते और उपहास करते रहे हैं।]

कुमार : (**उठता है**) हे, तू करेगी नाच ?

बिल्ली : हाँ, बिल्कुल साँच !

[कुमार उसके पैरों में घुंघरू बाँधता है। वे दोनों जानवरों सहित उपहास कर

रहे हैं। बिल्ली गा-गाकर नाचती है। दर्शकों की भीड़ लग जाती है। उपहास करने वाले आश्चर्यचकित रह जाते हैं।]

गुलाबो खूब झगरिहैं, मनीदा घोरि के पीहैं !
हे हे ! गुलाबो खूब झगरिहैं।
गुलाबो रीन्ही बरी, सिताबो रीन्ही दाल;
गुलाबो के जरिगे बरी सिताबो भई बेहाल।
गुलाबो खूब झगरिहैं, सिताबो खूब झगरिहैं !
हे हे गुलाबो !
गुलाबो खूब झगरिहैं सिताबो खूब लड़इहैं।
गुलाबो बनावें रोटी, एक छोटी एक मोटी;
सिताबो बनावें लड्डू, एक छोटा एक बड्डू।
गुलाबो कै जरिगै रोटी, सिताबो भई मोटी।
गुलाबो खूब झगरिहैं, सिताबो खूब लड़इहैं···

[बिल्ली के फैले आँचल में लोग खूब पैसे-रुपये डालते हैं। दृश्य बदलता है। राजा के दरबार में बिल्ली एक तलवार भेंट करने के लिए आती है।]

मंत्री : राजा-राजा ! यह बिल्ली आयी है। भेंट करने तलवार लायी है।
राजा : अच्छा ! ऐसी बिल्ली कहाँ है ?
बिल्ली : जै हो राजन् ! बिल्ली यहाँ है।
राजा : बता यह किसकी तलवार है ?
बिल्ली : मेरा बहुत बड़ा सरदार है। खूब कारोबार है। वहाँ सदाबहार है। उसी ने भेंट की आपको यह तलवार है। (**राजा को भेंट देती है।**)
राजा : (**प्रसन्न**) वाह कितना सुंदर विचार है। उपहार यह तलवार है। तलवार ही उपहार है।
बिल्ली : राजन्, हमारे मालिक को दरसन दीजिए। हम सबका परनाम लीजिए।
राजा : अच्छा-अच्छा, कल शाम टहलने जाऊँगा तो उधर जरूर आऊँगा।
बिल्ली : मैं रास्ते में मिलूँगी, मालिक तक खुद ले चलूँगी।
राजा : मुझे खुशी होगी।
बिल्ली : हमें बहुत-बहुत खुशी होगी।

[दृश्य बदलता है। बिल्ली पुकारती है।]

बिल्ली : मालिक ! मालिक ! मालिक···कुमार !

[कुमार आता है।]

कुमार : क्या है ?

2

बिल्ली : तलवार भेंट करके आ रही हूँ।

कुमार : अच्छा !

बिल्ली : राजा को कल लाऊँगी, तुम्हें उनसे मिलाऊँगी।

कुमार : ना-ना-ना, यह तूने क्या किया ?

बिल्ली : जो करना था वही किया। राजा का विश्वास जिया।

कुमार : अरे अपने पास न कपड़े-लत्ते, न घर-दुआर।

बिल्ली : चिंता क्यों करते कुमार ? सुनो ! कल शाम तुम इस वक्त नदी में नहाना। करूँगी मैं एक लाजवाब बहाना।

कुमार : मुझे बता ना !

बिल्ली : ना-ना-ना !

कुमार : अच्छा।

बिल्ली : हाँ, बस नहाते रहना। जब मैं पुकारूँ तो बाहर निकलना।

कुमार : ऐसा !

बिल्ली : हाँ, ऐसा !

कुमार : वाह, मेरी बिल्ली !

बिल्ली : और उड़ावें लोग हमारी खिल्ली !

[दृश्य बदलता है। घोड़े जुते रथ पर राजा टहलने निकले हैं। साथ में राजदरबार के लोग, नौकर-चाकर, सिपाही आदि शामिल हैं। आगे-आगे बिल्ली चल रही है।]

राजा : कहाँ है तेरे मालिक का निवास ?

बिल्ली : बिल्कुल आ गए पास !

राजा : अच्छा, बहुत खूब !

[सब चलते रहते हैं। अचानक बिल्ली चिल्लाती है।]

बिल्ली : हाय-हाय ! यह क्या हो गया ! मेरा मालिक नदी में गिर गया ! बचाओ, बचाओ !

राजा : जाओ, इसके मालिक को बचाओ। उसे नये कपड़े पहनाओ। और सादर मेरे पास लाओ। (**जाते हैं।**)

बिल्ली : हाय, भगवान ने बचा लिया ! मैंने अपने मालिक को जो देख लिया !

राजा : वह उधर कहाँ जा रहे थे ?

बिल्ली : हाथ-पैर धोकर आपसे ही मिलने आ रहे थे।

राजा : मिलकर खुशी होगी !

बिल्ली : हमारा धन्य भाग होगा !

राजा : जिसकी बिल्ली ऐसी है, मालिक का कितना अहोभाग होगा ?

बिल्ली : वह आ रहे हैं मेरे मालिक।

[राजसी वस्त्रों में कुमार लोगों के साथ आता है।]

कुमार : राजा की जय-जयकार !
सब : राजा की जय-जयकार !

[राजा कुमार से गले मिलकर उसे सादर अपने रथ पर बैठाता है।]

बिल्ली : आप लोग टहलते आइए। मैं आगे मिलूँगी, मिलते मिलाइए।

[बिल्ली चली जाती है। राजा और कुमार एक साथ रथ पर बैठे घूमते हुए जाते हैं। दृश्य बदलता है। तमाम किसान खेत में काम कर रहे होते हैं। बिल्ली नाचती हुई आती है। सारे किसान उसका नाच देखने घिर आते हैं। बिल्ली के नाच से किसान रीझकर।]

एक किसान : हाय बिल्ली नाचे छुम्मक छुम्म।
दूसरा : बोलो, बोलो, लोगी क्या तुम ?

[नाच-नाचकर बिल्ली और रिझाती है।]

पहला : हाय घुंघरू बाजे छुनुनु-छुनुन।
दूसरा : बिल्ली नाचे मुनुन-मुनुन।
तीसरा : हाय हाथ भी नाचे, पूँछ भी नाचे।
चौथा : आँखें मतवाली, चाल निराली।
पहला : बोलो, बोलो, क्या इनाम दें ?
दूसरा : जान है हाजिर कौन काम दें ?

[बिल्ली नाचते-नाचते रुकती है।]

बिल्ली : मेरा एक काम करोगे ?
सब : हाँ-हाँ, एक नहीं दो करेंगे !
बिल्ली : सच राम कसम !
सब : सच राम कसम !
बिल्ली : देखो भाई। अभी इधर से राजा की सवारी आएगी। राजा पूछे—किसकी खेती ? किसकी जमीन ? तुम सब कहना—कुमार की खेती, कुमार की जमीन।
सब : ठीक है, यही कहेंगे।

[बिल्ली नाचती हुई चली जाती है। राजा की सवारी आती है।]

सब : राजा की जय-जयकार !
राजा : किसकी प्रजा ? कौन करतार ?
पहला : हम प्रजा हैं कुमार की।
दूसरा : यह खेती है कुमार की !
राजा : ओ हो !

सब : राजा की जय हो !
राजा : ओ हो ! ओ हो !
सब : कुमार की जय हो ! राजा की जय हो !

[दृश्य बदलता है। मजदूरों का गिरोह एक जगह काम कर रहा है। बिल्ली नाचती हुई आती है।]

सारे मजदूर : (देखते ही) हे लो हे लो हे लो !

[बिल्ली उनमें घिरी हुई नाचती-गाती पहेलियाँ-सी पूछती है।]

बिल्ली : ऊजरि घघरिया हरी ओढ़नियाँ।
सारे मजदूर : (खुशी से मस्त) मूली !
बिल्ली : अन कहों बन कहों बन माँ बाँधो बोझा।
हाथी के घुनघुनियाँ बाँधो छिटक परे हैं राजा॥
सारे मजदूर : अरहर का पौधा !
बिल्ली : अगर कगर से बारी रूँधी बीच माँ फुलवारी।
मोरे राम का झुमका गिरिगा दुलहिन है बलिहारी॥
सारे मजदूर : आम का बौर !

[बिल्ली मजदूरों को रिझाती हुई नाचती है।]

एक मजदूर : बोलो-बोलो !
दूसरा : मुखड़ा खोलो।
तीसरा : हम तुम्हें क्या दें इनाम में ?
चौथा : माल में या रुपये में ?
बिल्ली : मेरा एक काम करोगे ?
सब : यह भी कोई पूछने की बात है !
बिल्ली : राजा अभी आएगा।
सब : अच्छा।
बिल्ली : एक सवाल पूछेगा।
सब : अच्छा-अच्छा !
बिल्ली : तुम हो किसके मजदूर ?
कहना—बिल्ली के मालिक के !
सब : हाँ-हाँ, बिल्ली के मालिक के !
बिल्ली : पर बिल्ली का मालिक कौन ?
सब : हाँ-हाँ भाई, कौन ?
बिल्ली : कुमार ! राजा के साथ ही बैठकर आएगा। दूध-मिठाई लाएगा।
सब : कुमार आएगा, दूध-मिठाई लाएगा।

[सब नाचने लगते हैं। बिल्ली चली जाती है। मजदूर फिर अपने काम पर लग जाते हैं। राजा की सवारी आती है। साथ में कुमार और अन्य लोग हैं। राजा को देखते ही]

सब मजदूर : राजा तेरो सुन्दर नाम, हम करते कुमार के काम।

राजा : अच्छा, इतने मजदूर कुमार के !

कुमार : आपके आसीरवाद से !

राजा : बहुत खुशी भाई, बहुत खुशी। बहुत खुशी हुई भाई, बहुत खुशी।

[राजा कुमार के गले मिलता है। हाथ मिलाता है। दृश्य बदलता है। रास्ते में कुमार और बिल्ली]

कुमार : अरे सुनो-सुनो, यह क्या कर डाला ?

बिल्ली : क्या हुआ मालिक ?

कुमार : मैं कहाँ का इत्ता बड़ा कुमार, कहाँ का मालिक, कहाँ का सरदार ?

बिल्ली : निराशा मिटाओ। बस देखते जाओ।

कुमार : न रहने की जगह, न खाने को रोटी।
पता चला राजा को तो काटेगा बोटी बोटी !

सिपाही : (**दर्शकों से**) घबड़ाते नहीं, अपने आप पर विश्वास रखते हैं। हाथ में दम है तभी तो आस रखते हैं। पता है जंगल में एक बार था मुझे मिला एक अलबेला एक सुन्दर जादूगर का किला। जादूगर के किले में जाकर अपने करिश्मे दिखाऊँगी। जादूगर से मिलकर किले में गुल खिलाऊँगी हाँ, नहीं तो बिल्ली किसकी जो हँसते थे खिल्ली उनकी।

[दृश्य बदलता है। जादूगर का किला। चारों तरफ सिपाही तैनात हैं। तरह-तरह के जीव-जंतु घूम रहे हैं। अजब दृश्य है जादूगर के किले में उसका। बिल्ली आती है। दरबान सिपाही उसे फाटक पर ही रोकता है।]

सिपाही : ऐ बिल्ली की जात ! कहाँ चली जात ?

बिल्ली : कृपा करो मुझ पर, मत दो कोई सजा। मैं गरीब प्रानी हूँ, जादूगर की प्रजा। पहले से ही बहुत सतायी हूँ। जादूगर के दरसनों के लिए आयी हूँ।

सिपाही : अच्छा-अच्छा, जा।

बिल्ली : धन्यवाद खा।

[आगे बढ़ती है। जादूगर के पास पहुँचती है। जादूगर का साम्राज्य देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। सेवकों में कोई उसका पैर दबा रहा है, कोई चमर डुला रहा है।]

बिल्ली : जै जै जै जादूगर महान। है प्रसिद्ध तू जग जहान। अजब निराली तेरी शान। बहुत दूर से आयी हूँ। पानफूल ले आयी हूँ। स्वीकार करो मेरा उपहार। दर्शन कर हो गयी निहार।

[जादूगर बिल्ली के हाथ से फूल लेकर खुश होता है।]

जादूगर : बोलो, बोलो, क्या चाहोगी ?

बिल्ली : मुझे दिखाओ जादू खेल। कुछ ऐसा जो हो अनमेल।

जादूगर : लो ! छू मंतर, छू मंतर···

[अपने सारे सेवकों को जादू से बंदर, चिड़िया आदि में बदल देता है।]

बिल्ली : वाह-वाह ! जैसा सुना था वैसा पाया। अजब तुम्हारी जादू-माया।

जादूगर : (**घमंड से**) आ हा, आ हा, आ हा।

बिल्ली : हि ही हि ही हि ही हिही ही।

जादूगर : बोलो और क्या देखना चाहोगी ?

बिल्ली : बुरा न मानना, एक बात पूछूं ?

जादूगर : हाँ हाँ, हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ !

बिल्ली : जादू क्या दूसरों पर ही करते, ऐसा तो सब जादूगर करते। क्या ऐसा जादूगर कर सकते अपने को शेर बना सकते ?

जादूगर : हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ ! छू मंतर, छू मंतर छां।

[जादूगर शेर बनकर दहाड़ने लगता है, बिल्ली डरने और रोने का अभिनय करने लगती है। जादूगर फिर अपनी असली हालत में लौट आता है। पर बिल्ली अब तक डर के मारे कांप रही है।]

जादूगर : अरे-अरे, अब क्यों डरती ?

बिल्ली : शेर की सूरत से मैं मरती !

जादूगर : अरे रे रे, तुझे हो क्या गया ?

बिल्ली : डर से दिल का दौरा पड़ गया।

जादूगर : इस दर्द की दवा क्या है ?

बिल्ली : हाय मैं मरी ! हाय मैं गिरी ! हाय मैं डरी ! हाय मैं मरी !

जादूगर : बोलो, मैं तुम्हारे लिए कुछ भी ला सकता हूँ। कुछ भी बन सकता हूँ। कुछ भी पैदा कर सकता हूँ।

बिल्ली : कुछ भी बन सकते हो ?

जादूगर : हाँ-हाँ, कुछ भी।

बिल्ली : नहीं-नहीं हे महान जादूगर। मैं चली जाती हूँ चुपचाप अपने घर। मैं तुम्हें और कष्ट नहीं दूँगी। जो कुछ हुआ है मैं सह लूँगी।

जादूगर : नहीं-नहीं मेरा और खेल देखो, तबीयत बहल जाएगी।

बिल्ली : कुछ डरावना नहीं, मैं हूँ बहुत शांत, नहीं तो मेरी आखिरी साँस निकल जाएगी।

जादूगर : अच्छा-अच्छा, मैं छोटी-सी चिड़िया बन जाऊं ?

बिल्ली : (**प्यार से**) नहीं ! चिड़िया उड़ जाती है !

जादूगर : अच्छा मक्खी बन जाऊँ ?

बिल्ली : नहीं, मक्खी गंदी होती है !

जादूगर : अच्छा बिल्ली बन जाऊँ ?

बिल्ली : नहीं, बिल्ली गुर्राती है। जीव-जन्तु को खा जाती है। मुझको ये सब नहीं पसन्द, मैं चाहूँ सबका आनन्द।

जादूगर : अच्छा तो मैं चूहा बन जाऊँ ?

बिल्ली : नहीं, तुम चूहा नहीं बन सकते। चूहा बनना बड़ा कठिन है।

जादूगर : मैं बन सकता हूँ।

बिल्ली : बड़ा असंभव !

जादूगर : छू मंतर, छू मंतर छू। चूहा बोले चूँ चूँ चूँ !

[जादूगर चूहा बन जाता है। बिल्ली दौड़कर चूहे को खा लेती है। सारे सिपाही नौकर-चाकर आश्चर्य से देखते रह जाते हैं।]

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! सारे आ जाओ पास। जादूगर गया मेरे पेट में। यह सब मिल गया मुझे भेंट में।

[जादूगर के सेवकों में आश्चर्यपूर्ण बातचीत। संकेत व्यापार। उनके संकेतों से पता चलता है कि वे बिल्ली की ताकत को सहर्ष स्वीकार करते हैं और जादूगर से मुक्ति की साँस लेते हैं।]

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! अच्छे से अच्छा खाना, व्यंजन, मिठाई तैयार करो। अच्छे से अच्छा संगीत तैयार करो। इस जगह को और सजाओ। खुद सजो और पूरे किले को सजाओ।

सब : जो आज्ञा, महाराज !

बिल्ली : मैं जाती हूँ। और इस किले के असली राजा को ले आती हूँ।

[जाती है। सब तैयारी में लग जाते हैं। दौड़-धूप होती रहती है। संगीत बजने लगता है। राजा की सवारी आती है। साथ में है राजकुमारी, कुमार और लोग, और बिल्ली।]

राजा : ओह, तुम्हारा इतना बड़ा शानदार किला। ऐसा राजकुमार मुझे कहीं नहीं मिला। बिल्ली !

बिल्ली : आज्ञा महाराज !

राजा : बिल्ली तुझे धन्यवाद है अनेक-अनेक बार। तूने मिलाया मुझे इतना अच्छा राजकुमार। धन-दौलत, किला शानदार ! मुझे भी देना है एक बड़ा उपहार !

बिल्ली : आप राजा, यह मेरे मालिक, आप दोनों जानें। आप दोनों खुश रहें, मुझे एक बिल्ली मानें।

राजा : अपनी राजकुमारी को राजकुमार के हाथ देता हूँ। इस शादी में अपनी आधी

दौलत साथ देखा हूँ।

बिल्ली : खाओ-पिओ जश्न मनाओ ! मेरे मालिक की शादी है, नाचो-गाओ !

[खाना-पीना, नाचना-गाना शुरू होता है। मंच के किनारे, किसान के वही दोनों लड़के अपने घोड़े और गधे के साथ उदास दिखते हैं।]

बिल्ली : (**दर्शकों से**) कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े। होंगे अपने घर के बड़े ! अब बोलो, कहाँ रहा तेरा घोड़ा, कहाँ है तेरा गधा ? छोटी बातों में न फँसो, छोटों पर ऐसे न हँसो ! असली चीज है बुद्धि और आशा। मैं थी छोटी पर मानी नहीं निराशा। (**पास जाती है**) ऐ मत हो उदास। हो सब मेरे मेहमान। मेरे मालिक की शादी है आओ, नाचो-गाओ, खुशियाँ मनाओ !

[उन्हें लेकर बिल्ली उस नाच-गाने में मिल जाती है। पर्दा गिरता है।]

बंदर का खेल

पात्र

मैडम
बच्चे
पहलवान
बंदर-बंदरिया

[मंच पर प्रकाश आते ही बच्चे दिखते हैं। वे ऊधम कर रहे हैं। शोर मचा हुआ है चारों तरफ। उनके ही बीच अकेली मैडम बेतरह परेशान। अचानक वह सीटी बजाती है। बच्चे शांत और सावधान होने लगते हैं।]

मैडम : अच्छा ! अब हम खेलेंगे। क्या खेलेंगे ?

बच्चे : (एकसाथ) खेल।

मैडम : चलो, हम खेल खेलें। दौड़ो पीछे-पीछे, मेरे आगे-आगे।

[बच्चे मंच पर अर्धचंद्राकार रूप में खड़े हो जाते हैं। मैडम डमरू बजाकर]

मैडम : अब कौन बनेगा बंदर ?

अभिनय : मैं, अभिनव।

मैडम : कौन बनेगी बँदरिया ?

सिल्की : मैं, सिल्की।

अभय : नहीं मैं—अभय।

सिल्की : नहीं मैं।

अभय : नहीं मैं।

[दोनों 'मैं-मैं' करने लगते हैं। सारे बच्चे 'मैं-मैं' करते हैं। मैं-मैं पर डमरू का संगीत छा जाता है। इसी बीच अभिनय बंदर, सिल्की बँदरिया और अभय पहलवान बनकर आते हैं।]

पहलवान : अरे बंदर ! तेरा मुँह जैसे छछूंदर !

[बंदर गुस्से से काटने दौड़ता है।]

पहलवान : अरे, इसमें गुस्सा करने की क्या जरूरत ? ले लगा ले टोपी, ले लगा ले मूँछ, ले लगा ले टाई ! ले चश्मा, ले डंडा, ले पाउडर, ले मेकअप कर ले।

[बंदर सज जाता है।]

पहलवान : अरे रे रे, कहाँ चला बन-ठन के ?

बंदर : शादी करने।

पहलवान : बंदर चला बँदरिया देस। देखो इसका कैसा भेस।

बँदरिया : खों-खों-खों···

बंदर : अरे, मैं तेरी गली में आया···

बँदरिया : बेसुरा गाया।

बंदर : क्या कहा ? मैं बेसुरा ? तू बेसुरी।

बँदरिया : तेरी यह हिम्मत !

[दोनों में मारपीट। पहलवान बचाता है।]

पहलवान : तो दोनों रूठ गए! भई बंदर, अक्ल के समुन्दर। जाओ बँदरिया को मनाओ, दिल की बात सुनाओ।

[बंदर का पहलवान के कान में कुछ कहना।]

पहलवान : जा-जा। तू जा। अरे जा तो सही।

[बंदर बँदरिया के पास जाता है। शर्माता है। डरता है। भाग आता है। पहलवान से संकेतों में बातें करता है। फिर जाता है। पहलवान संकेत करता है।]

बंदर : (**मारे संकोच-डर के**) अरे सुनती हो ?
पहलवान : जोर से ! ···थोड़ा और ऊँचा···
बंदर : (**चिल्लाकर**) अरे सुनती हो ?
बंदर : मैं तुझसे शादी करना चाहता हूँ।

[बँदरिया का मैडम के कान में कुछ कहना]

मैडम : कह रही है, तेरे मुँह से बदबू आती है। सुबह ब्रुश नहीं करता, मुँह-हाथ नहीं धोता और ठीक से नहाता भी नहीं।

[बंदर मारने दौड़ता है बँदरिया को। पहलवान रोकता है। बँदरिया का फिर मैडम के कान में कुछ कहना।]

बंदर : अच्छा। कहती है—बड़ा गुस्सैल है। हर वक्त खों-खों-खों करता है। चीजें फेंकता रहता है। तोड़-फोड़···
मैडम : जा-जा···बड़ी बनती है, तुझसे शादी नहीं करूँगा।
पहलवान : (**रोकता है**) अरी बँदरिया, मेरी मान, शादी कर ले।

[बँदरिया का मैडम के कान में कहना।]

मैडम : पूछ रही है—दहेज तो नहीं माँगोगे ?
बंदर : नहीं माँगूंगा।
बँदरिया : मेरी इज्जत करोगे न ?

[बंदर डंडा दिखाता है। बँदरिया भी डंडा दिखाती है।]

मैडम : बस-बस, अब शादी पक्की !
बँदरिया : नहीं।

[मैडम के कान में कहना।]

मैडम : पूछ रही है—मनुष्य हो कि बंदर ? बोलो, क्या हो ? ओ हो, अभी बंदर हो। (**फिर कान में बँदरिया का कुछ कहना**) यह बंदर से शादी नहीं करेगी ?

[बंदर का मैडम के कान में कहना।]

मैडम : बहुत अच्छे··· बहुत अच्छे। यह बंदर नहीं है, बंदर का रूप बनाए हुए है। जाओ, उसके कान में कहो।

[बंदर और बँदरिया का एक-दूसरे के कान में कुछ कहना। मैडम का डमरू बजाना। विवाह का संगीत उठना। दूल्हा-दुल्हन और बारात का चलना।]

[खेल खत्म]

झील में चन्द्रमा

पात्र

स्कूल के बच्चे
मैडम
बंदर
भालू
शेर
चिड़िया
हाथी
चन्द्रमा

[पृष्ठभूमि से संगीत। उसी संगीत पर थोड़ी ही देर बाद भीतर से रंगभूमि पर बच्चों—लड़के-लड़कियों, दोनों को गाते हुए आना।]

पिकनिक निक निक।
पिकनिक पिक पिक॥
पिक पिक पिकनिक।
निक निक पिक पिक॥

पहला : पिकनिक को हम जाएँगे।
जमकर मौज उड़ाएँगे॥

सब : पिक पिक पिकनिक।
पिकनिक निक निक॥

[पहले लड़के और पहली लड़की के पीछे सब दौड़ते हुए।]

टिक टिक टिक टिक।
टिक टिक टिक टिक॥
पिक निक पिक पिक।
टिक टिक टिक टिक॥

पहली : न कोई इंगलिश न कोई साइंस।
सब : बाओ बाओ। हैप्पी टाइम्स॥

[दौड़ना]

पहली : न कोई नम्बर्स, न कोई राइम्स।
सब : बाओ बाओ। हैप्पी टाइम्स॥

[दौड़ना]

पहली : भारी बस्ता मारो किक्स।
सब : येस येस, वी आर सिक॥

[दौड़ना]

पहली : टुक टुक टुक टुक। खिटपिट खिटपिट॥
सब : बाओ बाओ। आए आए।
हम आ आ आ आए॥

[दौड़ते हुए कुछ बच्चे एक ओर, कुछ उनके सामने। पी० टी० टीचर बीच में।]

मैडम : अब बोलो। अब बोलो।
रेस्ट करो या खेल करोगे ?

सब : नहीं मैडम, हम खेल करेंगे।

मैडम : क्या ? क्या खेलोगे ?
बोलो। बोलो।

पहला : आइस-पाइस।

पहली : बिल्ली-चूहा।

दूसरा : म्याऊँ-म्याऊँ।

तीसरा : शेर-भालू।

चौथा : नो नो नो, कड़क्को।

मैडम : ह्वाट कड़क्को ? कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ ?
क्या देखते मुड़ मुड़ मुड़ मुड़ ?

पहला : अरे रे रे बंदर मामा।

[अंदर प्रवेश]

पहली : अरे रे रे चिड़िया श्यामा।

[प्रवेश]

दूसरा : अरे रे रे भालू।

[प्रवेश]

दूसरी : अरे रे शेर।

[सबका रंगभूमि पर प्रवेश।]

मैडम : अब करो पिकनिक।
जब जंगल में आए
तो करो पिकनिक

बंदर : आउँ माऊँ दही जमाऊँ।

मैडम : बंदर मामा दही जमाउँ ?

पहला : वंडरफुल भाई वंडरफुल।

चिड़िया : खी खी खी खी खी खी खी।
मैं तो खाती पूड़ी घी।

सब : अच्छा।

भालू : हुड़ हुड़ हुड़ हुड़
चलो पतंग उड़ाएँ।
काटें मंझा गाना गाएँ॥

शेर : हो हो होअ।
मैं इस जंगल का राजा
मेरा नाम शेर
चलो कोई खेल खेलें
मत करो देर ।।

सब जानवर : हाँ, बिल्कुल ठीक।

चिड़िया : मैं बनूंगी मैडम।
मैं बजाऊँ सीटी।

[मैडम से सीटी लेकर बजाना।]

पहला : इनके साथ क्या खेलेंगे ?

पहली : हम और ये जानवर ?

मैडम : पिकनिक पर जब आए हो
दूध मलाई खाए हो
लंच बाक्स भी लाए हो
फिर क्या डरना, खेलो खेलो।

सब : क्या ?

बंदर : खो खो। खो खो।

पहला : खो खो के बहाने ये हमें खा लेंगे।

भालू : कुड़ कुड़ कुड़ कुड़ कबड्डी।

पहली : मैडम। ये तोड़ देंगे हमारी हड्डी।

शेर : अच्छा हा हा हा हा, हाकी।

पहला : ये कर देंगे हमें नाकी।

मैडम : अरे मनाने आये पिकनिक।
करते झिक झिक झिक झिक ।।

सब : तो ?

सब जानवर : तो तो तो तो तो तो तैइया।
नाचें नाचें छुम्मक छैइया ।।

[इसी बोल पर श्यामा चिड़िया सहित सभी जानवरों का नृत्य करना। धीरे-धीरे उनके नृत्य में बच्चों का शामिल होना।]

सब मिल नाचें गावें।
सब मिल नाचें गावें ।।
ताल पै नाचें बोल-बोल।
छुम्मक छइया छुम्मक छइया।
छइया छइया छुम छुम।
छुम्मक छइया छुम छुम ।।

[नाचते-नाचते सारे जानवरों के मुख से एक साथ यह स्वर निकलना—'होइया होइया ।']

सब बच्चे : ये क्या ?
चिड़िया : ये देखो नीची झील ।
सब : (**बच्चे-जानवर एक साथ**) हा ! इतनी गहरी !
पहला : लम्बी-चौड़ी ।
पहली : इतना पानी ।
चिड़िया : सुनो कहानी । सुनो कहानी ।।
चंदा चंदा,
वो जो आसमान का चंदा
कहते हैं—
एक बार आसमान से
इसी झील में आया ।
मैडम : सचमुच वह धरती पै आया ?
कौन ले आया ?
कैसे आया ?
चिड़िया : स्पेस शटल, स्पूटनिक ।

[ध्वनि-प्रभाव]

सब : पिक पिक पिकनिक
पिक पिक पिकनिक
टिक टिक टिकनिक
ओअ···अ···अ···
ओअ···ओअ···ऊँ अ···

[सबका स्पेस शटल की तरह पृथ्वी से आसमान और आसमान से झील में उड़ने और पहुँचने का नाट्य ।]

गुड़म । गुड़म । गुड़म ।
झील में चन्द्रमा गुड़म ।

चिड़िया : चंदा मामा सुनुम ।
बंदर : झील से बाहर निकलुम ।
भालू : हुम हुम हुम ।
आवाज : कौन लोग तुम ?
मैडम : चंदा मामा की आवाज ।
पहला : मैम, मामा से कहो झील से बाहर आएँ।

2

पहली : हम उनसे मिलेंगे। हँसेंगे, नाचेंगे, गाएँ
सब : हाँ ! चंदा मामा, झील से निकलो।
आवाज : ये कौन हैं तुम्हारे साथ ?
पहला : जानवर—बंदर, भालू शेर।
आवाज : जो साथ हैं, वे साथी कि जानवर ?
मैडम : बोलो, जवाब दो।
चिड़िया : बोलो बोलो, नहीं तो चंदा मामा झील से बाहर नहीं आएँगे।
आवाज : जवाब दो। जो साथ हैं, वे साथी कि जानवर ?
पहली : हाँ, जो साथ वो साथी।
सब बच्चे : जानवर नहीं साथी।
शेर : वो आ रहा हाथी।

[हाथी का गाते-नाचते हुए आना]

सभी देश घर मेरा है।
उत्तर दक्खिन पूरब पश्चिम
सभी देश घर मेरा है।
जंगल-जंगल नगर डगर
सब जगर मगर
हाँ, सभी देश घर मेरा है।

सब बच्चे : हाथी काका।
हाथी : बोलो भाई, का चाहीं ?
पहला : काकोजी, झील में चंदा मामा।
हाथी : तो ?
पहली : झील के ठंडे पानी में चंदा मामा ठिठुर गया। अपनी सूँड़ झील में डालो। मामा को बाहर निकालो।
सब बच्चे : हाँ, काका हाँ।
हाथी : (जानवरों से) तुम क्या कहो ?
सब जानवर : जो ये कहें, वही हम कहें।
चिड़िया : मैं मैं मैं मैं···हम हैं।
हाथी : अच्छा। तो आओ चंदा मामा।
मेरी सूँड़ थामकर बाहर आओ।

[हाथी का अपनी सूँड़ झील में लटकाना। चंदा मामा का झील से बाहर आना।]

सब : (**बच्चे, जानवर एक साथ**) हेलो, चंदा मामा !
चिड़िया : चंदा मामा धरती पे आ गए।

[प्रसन्नतापूर्ण नाट्य]

सब बच्चे : चंदा मामा । हाऊ डू यू डू ?

चंदा : आसमान में खड़ा-खड़ा
सब तारों से बहुत बड़ा
तुम सबको देखा करता ।
जब तुम हँसते मैं भी हँसता
जब तुम पढ़ते मैं भी सुनता
जब तुम रोते मैं भी रोता
जब तुम सोते मैं भी सोता ।

बच्चे : वाह-वाह ! वाह-वाह ! वाह !

जानवर : हा हा हा हा हा ।

पहला : चंदा मामा ! तुम्हें हमारी पृथ्वी कैसी लगती ?

सब : बोलो । बोलो ।

जानवर : चुप क्यों ?

चिड़िया : आमा बोलो चंदा मामा ।

चन्द्रमा : बोलूं ? पृथ्वी कैसी लगती ?

सब : हाँ बोलो ।

चिड़िया : अपने मन का पर्दा खोलो ।

चन्द्रमा : तो सुनो । (**गायन**—)

पृथ्वी उतनी सुन्दर, जितने तुम सब सुन्दर ।
उतने सुन्दर उतने सुन्दर, जितने नदी समुन्दर ।
पृथ्वी उतनी सुन्दर, जितने तुम सब सुन्दर ॥
उतने सुन्दर जितने जंगल सुन्दर
घर सुन्दर स्कूल सुन्दर, पृथ्वी उतनी सुन्दर ॥
जितना मन सुन्दर तन सुन्दर तुम्हारे मेरे प्यारे
पृथ्वी उतनी सुन्दर, जितने तुम सब सुन्दर ॥

[इस गायन पर जैसे ही सबका नृत्य सम पर पहुँचना; उसी के साथ]

पहला : जैसे हम होंगे वैसी ही होगी हमारी पृथ्वी ?

चन्द्रमा : बताओ ! उत्तर दो ।

पहली : या जैसी होगी पृथ्वी वैसे होंगे हम ?

चन्द्रमा : प्रश्नों का उत्तर तुम्हें देना होगा ।

सब : हमें ?

चन्द्रमा : हाँ, जब फिर हमारी भेंट होगी ।

पहला : कब होगी ?

पहली : तुम तो रहते आसमान पर
हम रहते पृथ्वी पर ।

चन्द्रमा : पृथ्वी मेरा घर है।
सब : घर है? ये कैस्सा?
चन्द्रमा : मैडम से पूछो किस्सा
हम हैं हिस्सा-हिस्सा
सब : अच्छा।
चन्द्रमा : भारत मेरा घर है पृथ्वी मेरी माता।
पानी मेरी नानी, आसमान है पापा।
सभी जगह मेरा घर, सभी लोग हैं अपने।
जीव-जंतु कन कन में, मैं ही बोता सपने॥
शेर : हो हो हो हो।
भालू : बड़ी खुशी हुई मिलकर।
बंदर : चंदा मामा, मैं आपके साथ चलूँगा, यहाँ तो पेड़ नहीं। पेड़ हैं तो फल नहीं।
शेर : हाँ, जंगल कटते जा रहे।
भालू : जंगल मिटते जा रहे।
सब जानवर : हम सब साथ चलेंगे।
चन्द्रमा : मेरे साथ? ना बाबा ना। वहाँ न हवा न पानी। न पहाड़ न जंगल न। कुछ खाने को न पीने को।
पहला : फिर तुम कैसे रहते? क्या खाते क्या पीते?
पहली : कैसे जीते? कहाँ सोते? कहाँ बैठते? कैसे जीते?
चन्द्रमा : खाता हूँ सूरज का ताप, पीता हूँ शून्य का भाप।
ये पृथ्वी मेरा ही अंग, रहते सदा इसी के संग॥
चिड़िया : चलो चलें हम खेलें खेल। एक ओर चंदा एक ओर ये। एक ओर तुम सब, एक ओर तुम। एक ओर ये, एक ओर दुम। रैफरी मैं।
हाथी : क्या खेल?
बंदर : आइस-पाइस।
सब : वेरी नाइस।
[चिड़िया का सीटी बजाना, खेल शुरू। चाँद को ही सब ढूँढ़ने के लिए चुनते हैं। चाँद के प्रकाश से कोई छिप नहीं पाता। सबको चाँद का आइस-पाइस करना।]

[चन्द्रमा का गायन]

शाम हुई सबको घर जाना।
पहले तुम सब जाओ।
पिकनिक खत्म हुई घर जाना,
शाम हुई सबको घर जाना।

सब जानवर : अच्छा, नमस्ते-नमस्ते।
अच्छे : हम सब साथी अच्छे।

चन्द्रमा : और मैं ? (गान)

चंदा चंदा आसमान का चंदा ।
सचमुच धरती पर आए ।
खेल खेल में
कितनी खुशियाँ लाए ।
सबसे हमें मिलाए ।

चन्द्रमा : अच्छा प्रणाम, फिर मिलेंगे । प्रश्न का उत्तर लाना । भाग न जाना ।

सब बच्चे : हाँ, फिर मिलेंगे । आएँगे-आएँगे, उत्तर लाएँगे ।
फिर मिलेंगे, जाएँगे आएँगे, उत्तर लाएँगे, फिर आएँगे ॥

पहला : चंदा मामा । और प्रश्न करना ।

सब : हम उत्तर देंगे, आएँगे आएँगे, उत्तर लाएंगे ।

पहला : झील में छिप न जाना ।

सब : आना आना चंदा मामा ।

पहली : प्रश्न लाना, लाना चंदा मामा ।

पहला : बंदर भाई, हाथी बाबा, भालू चाचा, शेर दादा···।

सब : बाई···बाई । भाई भाई ॥

चिड़िया : फिर मिलेंगे ।

चन्द्रमा : फिर जुड़ेंगे ।

सब : बाई । बाई
भाई भाई
मामा मामा
काका काका
बाबा बाबा
दादा दादा
मामा मामा
भाई भाई
बाई बाई···।

[पर्दा]

राजा लंबोदर

पात्र

पाँच-पाँच बच्चों की दो अलग टोलियाँ
छः लड़कियाँ
काला कौआ
एक नाक
एक कान
एक आँख
मंत्री-विदूषक
राजा लंबोदर

[खुला रंगपीठ। पृष्ठभूमि में संगीत उभरना। विदूषक का प्रवेश।]

विदूषक : मोती का रंग भाई मोती का रंग।
खेल खेल में उड़िगे पतंग॥
नौ सै मोती नौ सै रंग।
मोती के घर से निकरी पतंग॥

[केवल संगीत। विदूषक का अभिनटन। कुछ ही क्षणों में बायीं ओर से मोती रंग की वेशभूषा में बच्चों की पहली टोली का प्रवेश।]

बच्चे : मोती का रंग भाई मोती का रंग।
मेरी पतंग भाई मेरी पतंग॥
जितने मोती उतने रंग।
मोती का रंग भाई मोती का रंग॥

[केवल संगीत। संगीत पर अभिनटन। दूसरी ओर से विदूषक का मूँगे के रंग की वेशभूषा वाली लड़कियों की टोली ले आना।]

लड़कियाँ : मूँगे का रंग रंग रंग रंग
रंग रंग।
मूँगे का रंग रंग
आई आई आई आई।
आई आई आई आई।
आई आई आई आई॥

[केवल संगीत। लड़कियों का अभिनटन।]

विदूषक : भागो-भागो, आँधी आई।

[हीरे रंग की वेशभूषा में बच्चों की दूसरी टोली का प्रवेश।]

बच्चे : अपना तो हीरे का रंग।
सबकी काटें हम पतंग॥

विदूषक : धंग धंग भाई धंग धंग।

बच्चे : हम सब में हैं बेशकीमती।
हटो हटो जी मूँगा-मोती॥

पहली टोली : वाह। ये पंक्ति हमारी
हम पहले आए।
बच्चे : जी नहीं, हम पहले आए
तुम ये कहाँ ?
इन्हें कहो जाएँ वहाँ।
लड़कियाँ : हमें क्या कहा ?
बच्चे : हमने क्या कहा ?
एक लड़की : मैंने सुना।
तूने दी गाली॥
एक बच्चा : कान से सुना ?
एक लड़की : और नहीं तो !
बच्चे : और नहीं तो
और नहीं तो
और नहीं तो
और नहीं तो !

[लड़की का नाराज होकर जाने लगना। विदूषक का रोकना।]

विदूषक : अरे-अरे, भाई ! अरे-अरे भाई !
मोती मूँगा हीरा।
चलो त्रिभुज बनो
चलो त्रिभुज बनो
चलो त्रिभुज बनो॥
अरे लड़ो नहीं। अरे लड़ो नहीं
ऐसे पै ऐसो खड़ो नहीं।
अरे अरे भाई
अरे अरे भाई···!
लड़की : सुना सुना अपने कानों से।
लड़का : तेरा कान, हाथी का कान।
लड़की : तू बहरा है।
लड़का : तेरा कान हाथी का कान।

[संगीत]

बच्चे : तेरा कान हाथी का कान।
जिसने कभी सुना नहिं गान॥
तेरा कान है
तेरा कान है

तेरा कान है छछा छछुंदर।
तेरा कान है खों खों बंदर॥
अंदर बंदर। कान छछुंदर।
एक कान जा गिरा समुंदर॥

विदूषक : एक कान है जिसके पास।
काला कौआ डाले घास॥

[काले कौए का प्रवेश। लड़की का गुस्से में जाना। लड़कियों में क्रोध।]

कौआ : खों खों खों खों
खों खों खों।
क्यों करते सब चिल्लपों

लड़कियाँ : काला कौआ मारो मारो।
काला कौआ मारो मारो॥

[अभिनय]

कौआ : क्यों ? तेरो का बिगारो ?

लड़कियाँ : यहाँ क्यों आए ?

कौआ : यही देखने
कान के कच्चे
होते बच्चे।
बिना कहे सुन लेते बच्चे।
वे होते हैं कान के कच्चे॥

लड़कियाँ : मारो मारो काला कौआ।
मारो मारो काला कौआ॥

[लड़कियों के साथ कौए का प्रस्थान। बच्चों की दोनों टोलियाँ आमने-सामने फ्रेंच क्रिकेट खेलती हुई।]

विदूषक : फ्रेंच क्रिकेट भाई फ्रेंच क्रिकेट।
दोनों टीमें बड़ी विकट।
बड़ी विकट भाई बड़ी विकट।
दोनों खेलें फ्रेंच क्रिकेट।

[कौए का प्रवेश।]

कौआ : (खेल देखकर—)
वाह भाई वाह।
वाह भाई वाह॥
मोती कहे मैं हूँ शाह।
मूँगा कहे मैं बादशाह॥

[खेल-खेल में एक टोली की बाल दूसरी टोली के एक बच्चे की नाक में तथा दूसरी टोली की बाल पहली टोली के एक बच्चे की एक आँख में लगना। आपस में संघर्ष का दृश्य।]

एक : हाय, मेरी नाक।
हाय मेरी नाक ।।

दूसरा : हाय मेरी आँख।
हाय मेरी आँख ।।

[सब बच्चों का लड़ते-झगड़ते हुए प्रस्थान।]

विदूषक : हे-हे-हे-हे-हे
अब तू इधर क्यूँ खड़ा ?

कौआ : काला कौआ तुझसे बड़ा।
बोल, तू यहाँ क्यों खड़ा ?

विदूषक : कौआ होता एक आँख का काना।

कौआ : माना, माना माना।
पर तू ऐसे राजा का मंत्री
जिसके केवल पेट
जैसे लाल किले का गेट।

[विदूषक का कौए को पकड़ने का प्रयत्न। कौआ विदूषक की पकड़ से बाहर]

कौआ : तेरे राजा के कान नहीं।

विदूषक : चुप चुप चुप चुप
चुप चुप चुप।

कौआ : तेरे राजा के नाक नहीं।

विदूषक : चुप भाई चुप।
चुप भाई चुप ।।

कौआ : तेरे राजा के आँख नहीं।

विदूषक : अब मत बोल हाथ जोड़ता
हाथ जोड़ता
कान पकड़ता।
पैर पकड़ता ।।

[कौए की हँसी। किलकारियाँ। विदूषक का भयभीत होना।]

कौआ : राजा को पता है
एक देश में कितने देश ?

विदूषक : कितने देश ?

कौआ : एक देश नाकों वाला।
विदूषक : सिर्फ नाक और कुछ नहीं ?
कौआ : एक देश कान का।
विदूषक : अच्छा !
कौआ : एक देश सिर्फ एक आँख का !
विदूषक : अरे !
कौआ : चलो, चलो, दिखा जाऊँ।
आऊँ माऊँ
खाऊँ खाऊँ
माऊँ माऊँ।

[संगीत उभरता है। विदूषक का भयभीत भागना। कौआ का नाक देश में पहुँचना।

नाक देश। एक नाक के अधीन कई नाक।]

एक नाक : ना ना ना ना नाक।
छीं छीं छीं छीं छीं।
सब नाक : री री री री री रारी।
मेरी नाक दुनिया से न्यारी ॥
एक नाक : एक नाक मैंने माँग लिया।
चढ़ घोड़े असवार किया ॥

[अभिनटन]

चल मेरे घोड़े खुट्टुर खूं
सब नाक : खुट्टुर खूं भाई खुट्टुर खूं
एक नाक : सब को मारो दुलत्ती।
सब नाक : दुलत्ती भाई दुलत्ती

[कौए का हँसना।]

एक नाक : ऐं ! छी···छी···छी···छी···छी !
कौए की दुर्गंध बड़ी।
सब नाक : छी···छी···छी···छी···छी···छी···

[कौए को पकड़ने, मारने की कोशिश, बचकर कौए का भागना। भागकर कान के देश में पहुँचना।]

एक कान : मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
किसी ने मुझे मारा है।
सब कान : मैंने सुना सुना सुना

सुना सुना ।
किसी मुझे मारा है ।।

सब कान : मैंने सुना पानी में है आग जली ।
जलाने वाला आया है ।।

एक कान : मैंने सुना सुना सुना
सुना सुना ।
जलाने वाला आया है ।

कौआ : खों खों खों खों
खों खों
खों खों ।
आँख नहीं तो का देखोगे ?
नाक नहीं तो का सूँघोगे ?
खों खों, खों खों खों खों ।

सब कान : क्या कहा भाई, क्या कहा ?

कौआ : जो सुना सो वो ही सुना ।

[कौए का हँसते हुए जाना । सारे कान वही गा रहे हैं ।]

मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
किसी ने मुझे मारा है ।
दिल्ली से एक बिल्ली आई
बिल्ली के घर चूहा आया ।
चूहे ने बिल्ली मारा है ।।
मैंने सुना दिल्ली के बाजार में
चूहे ने बिल्ली मारा है ।।

[कौए का एक आँख के देश में पहुँचना ।]

एक आँख : मैंने देखा तूने देखा
क्या देखा उसने क्या देखा
देखा देखा पर क्या देखा ?

सब आँखें : (परस्पर) देखा देखा मैंने देखा ।
तूने देखा तो क्या देखा ।।
क्या देखा जो देखा मैंने ?
देखा है पर जाना भी है ?

कौआ : एक काम नहि धंधा ।
एक आँख का अंधा ।।
हाँ, कान नहीं तो सुनेंगे क्या ?
नाक नहीं तो गुनेंगे क्या ?

एक आँख : ये काला काला क्या है ?
सब : ये काला काला क्या है ?
कौआ : जब कान नहीं तो सुनेंगे क्या ?

[कौए का अभिनटन]

जब कान नहीं तो सुनोगे क्या ?
इन्हें दीखता सब काला काला काला
अरे मैं हूँ कौआ।
राजा का नौआ।।
देखो, कुछ नहीं सुना।

[नकल]

कौआ : आँख हर आँख से लड़ी रहती है।
आँख निगाहों में गड़ी रहती है।
बिना सुने देना बहुत मुश्किल है।
सूँघने के लिए नाक खड़ी रहती है।

[एक ओर से नाकों का प्रवेश]

कौआ : भागो भागो भागो।
नाक सूँघती आईं नाकें।
नाक सूँघती आईं नाकें
काँके काँके काँके काँके।

[दूसरी ओर से कानों का आना]

कौआ : भागो भागो कहाँ आ गए।
यहाँ खड़ी हैं अंधी आँखें
बिना नाक के
बिना कान के।

[दौड़कर विदूषक का आना।]

विदूषक : भागो भागो।
भागो भागो।।
कान खड़े हैं बिना आँख के।
कौआ : खों खों खों।
विदूषक : आँख उठीं है बिना नाक के।
कौआ : खों खों खों भाई
खों खों खों।

विदूषक : नाक बढ़ी हैं बिना आँख के।

कौआ : खों खों खों भाई
खों खों खों।

[विदूषक और कौए के पीछे सबका भागना। भागते-भागते सब थककर अलग-अलग बैठ जाते हैं। दृश्य में फिलहाल विदूषक और कौआ नहीं हैं। संगीत। कौआ एक डंडे में अंगूर का गुच्छा लटकाए क्रमश: आँख, नाक और कान के पास ले जाता है। तीनों इन्द्रियों की अलग-अलग प्रतिक्रिया। तीनों इन्द्रियाँ स्वतंत्र नहीं, हैं। तीनों अंगूर के लिए आपस में अकेली लड़ रही हैं। पर तीनों असफल हैं। कौआ एक लौकी ले आता है। उस पर भी वही शोर गुल। लड़ाई-झगड़ा। संगीत। दौड़ते हुए विदूषक का प्रवेश।]

विदूषक : अक्कड़-बक्कड़।
मत कर झगड़ ।।

कौआ : तू कहाँ था बाँधे पगड़ ?

विदूषक : अपने राजा लंबोदर को
इनके झगड़े दिखाना चाहता हूँ।
हर अकेला बेऔकात है
ये बताना चाहता हूँ ।।

कौआ : तीनों को लट्ठ दे दूँ
फिर देखूँ तमाशा।

[कौआ कान, नाक और आँख को लट्ठ थमाता है।]

विदूषक : कान जू, हे कान जू !
तेरो मजाक उड़ावै आँख जू ।।

कान : ऐसा ! ऐसा !

विदूषक : आँख जू, हे आँख जू !
तेरो मजाक उड़ावें कान जू ।।

आँख : क्यों रे कान वेईमान।
तू इतना बड़ा शैतान ।।

कान : क्यों री एक आँख की अंधी।
तू कितनी गंदी गंदी गंदी ।।

[दोनों में लट्ठबाजी। विदूषक उन्हें रोककर]

विदूषक : अरे रुको रुको, रुक भी जाओ। ये जो नाकजू हैं न ! इनकी भी सुनते जाओ।
तुम दोनों के बारे में कह रही थी—
तुम दोनों से बदबू आवै
ये छी छी छी छी कर रही थीं।

[तीनों की परस्पर लड़ाई। कौआ बहुत खुश।]

विदूषक : कौआ हे भाई कौआ !

कौआ : हां सरकार, रउँआ !

विदूषक : ले चलो सबको राजा लंबोदर के पास।

[कौआ का प्रस्थान]

कान : कोतर कोतर कोतर।
कौन राजा लंबोदर ?

विदूषक : अरे वही लंबा पेट, जैसे लाल किले का गेट।
जिसके नाक नहीं, कान नहीं, आँख नहीं।
सिर्फ लंबा पेट, जैसे लाल किले का गेट॥

कान : ऐं, ये मैं का सुनता—राजा के कान नहीं ? तो प्रजा की बात कैइसे सुनता।

आँख : आँख नहीं तो न्याय कैसे करता ?

नाक : नाक नहीं तो खाना क्या ?

[संगीत]

विदूषक : चलो देखन चलें राजा नगरी।
राजा लंबोदर के नाक नहीं कान नहीं
चलो देखन चलें राजा नगरी।
राजा लंबोदर के कान नहीं आँख नहीं
चलो देखन चलें राजा नगरी।

[सबका जाना। संगीत। राजा का दरबार। कौआ इस संगीत पर दरबार में नृत्य कर रहा है।]

काँव काँव काँव काँव, राजा के दो पाँव।
राजा के कान नहीं, राज्य बड़ा सुंदर है।
राजा के नाक नहीं, राजा बड़ा सुंदर है
राजा के आँख नहीं, राजा बड़ा सुंदर है
खाँव खाँव खाँव खाँव
राजा बड़ा सुंदर है, काँव काँव काँव काँव।

[विदूषक के साथ नाक और कान का दरबार में प्रवेश]

विदूषक : जै जै जै राजा महान।
आए हैं दरबार में
नाक आँख औ कान॥

राजा : क्या बोला ? क्या बोला ?

विदूषक : कान है नहीं, इसे कैसे सुनाऊँ ?

आंख है नहीं, इसे कैसे बताऊँ।
नाक है नहीं, इसे कैसे सुँघाऊँ।

राजा : ये क्या बक रहा है ?

कौआ : आपके रूप की तारीफ कर रहा है।

राजा : ना ना ना ना ना ना।
मुझे चाहिए खाना खाना।

कौआ : नाक नहीं तो कुछ भी खिलाओ।
कुछ भी लाओ कुछ भी लाओ॥

[डंडे में लटकाए विदूषक सड़ी हुई लौकी ले आकर राजा के मुंह के पास ले आता है।]

नाक : छी छी छी छी छी
लौकी सड़ी है राजाजी।

[राजा नाक को ही खाने दौड़ता है। नाक का भागना।]

कान : राजा की भूख खाने आ रही है।
राजा के पेट से आवाजें आ रही हैं।

[भेड़, बकरी, मुर्गे की आवाजें। राजा खाने के लिए दौड़ रहा है। राजा विदूषक की पगड़ी, टोपी, डंडा खाना चाहता है।]

विदूषक : अरे मेरी टोपी, अरे मेरा जूता।
अरे मेरा डंडा, अरे मेरा कुत्ता॥

[संघर्ष। विदूषक का राजा के मुख पर नाक लगाने का प्रयत्न। तीनों इन्द्रियाँ परस्पर]

आँख : अलग-अलग हम सब खतरे में। देख रही हूँ।

नाक : सूंघ रही हूँ खतरा।

कान : सुन रहा खतरे की आवाज।

आँख : तो ध्यान से सुनो।
मुंह को चाहिए खूराक खूराक खूराक।
खूराक भला है या बुरा
उसे सूंघने के लिए चाहिए नाक नाक नाक
नाक औ मुंह को चाहिए आँख
औ इन्हें चाहिए कान।

[संगीत]

कौआ : सुनो सुनो सुनो।
राजा कुछ कहने जा रहे हैं।

राजा : आओ आओ आओ।
मेरे मुँह पै नाक लगाओ।
नाक के ऊपर आँख बिठाओ।
दायें-बायें कान लगाओ
मुझे पशु से मानुस बनाओ
आओ आओ आओ।

[राजा के मुख पर तीनों इन्द्रियाँ।]

राजा : अरे ! अरे ! ये मैं क्या देख रहा ?
ये मैं क्या सुना रहा।
ये मैं क्या गुन रहा।
ये खुशबू कहाँ से आ रही।

[संगीत सबका नृत्य]

वो कान क्या सुनेगा, जब तक आँख नहीं।
जब तक आँख नहीं, जब तक आँख नहीं।
वो कान क्या सुनेगा, जब तक आँख नहीं।
वो आँख क्या देखेगी, जब तक नाक नहीं।
वो नाक क्या सूंघेगी, वो आँख क्या देखेगी
वो कान क्या सुनेगा, जो सबमें मेल नहीं।
मेल नहीं तालमेल नहीं, तब तक खेल नहीं।

□□